RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Div./244/2020-2022
Desp. Date - 02 Oct.-2020

अंक – 04 (मासिक) वर्ष – 16 अक्टूबर, 2020 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

वरिष्ठजन विशेषांक

वरिष्ठ भी - वटवृक्ष भी

समाज के वरिष्ठजनों को समर्पित

अब सकारात्मक प्रभाव डालेंगे
राहु - केतु

पूर्वी मप्र महिला संगठन द्वारा कृष्ण तुला दान की प्रस्तुति

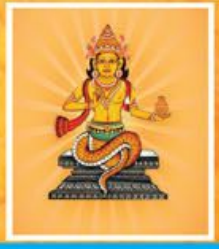

Visit us
@ www.srimaheshwaritimes.com

देखें प्रति मंगलवार
SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

RR KĀBEL

MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME

DO THE
AKALMAND
THING!

RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP

R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • **F** : +91 - 22 - 2491 2586 • **E** : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • **F** : +91 - 265 - 2321 894 • **E** : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-04 अक्टूबर 2020 वर्ष-16

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
श्यामसुंदर जेठा (माहेश्वरी), जबलपुर

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300
Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

वरिष्ठ विशेषांक प्रकाशन के अवसर पर
समाज के उन सभी वरिष्ठजनों को शत-शत नमन व
उनके दीर्घायुष्य के लिए मंगलकामनाएँ,
जिनके स्नेह व मार्गदर्शन की छत्रछाया में सुखद व सुरक्षित है
हमारा कल, आज और कल।

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

जो बुजुर्गों की सुनेगा वही बनेगा विजेता

विचार क्रान्ति

घर-परिवार के बड़े-बुजुर्ग हमारे जीवन में ईश्वर की कृपा से ही सुलभ होते हैं। इनका होना सौभाग्य है और न होना दुर्भाग्य। ये हमारे निजी संसार के वे प्रत्यक्ष देवता हैं जो अपने अतीत के अनुभवों से हमारा भविष्य प्रशस्त करते हैं और अपने आशीर्वाद से जीवन का दुर्गम पथ सुगम करते हैं। जो इनकी सुनता है वह विजयी होता है और जो नहीं सुनता वह पराजित।

रामायण और महाभारत के प्रसंग इसके प्रमाण हैं। रामकथा में पिता की आज्ञा के पालक श्रीराम यशस्वी हुए और नाना माल्यवान की न सुनने वाला रावण मारा गया। महाभारत का दुर्योधन बुजुर्गों की अवज्ञा के लिए ही कुख्यात है। दुर्योधन का असल नाम तो सुयोधन था लेकिन बड़ों की अनसुनी ने ही उसे दुर्योधन बना दिया।

महाभारत के अनेक संदर्भों में पिता धृतराष्ट्र को यह पीड़ा व्यक्त करते देखा जा सकता है कि 'दुर्योधन मेरी सुनता ही नहीं!' यही दुःख माँ गांधारी का है और यही सन्ताप पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, कुलगुरु कृपाचार्य और चाचा विदुर का भी। बड़ों की न सुनना तो दूर दुर्योधन उससे आगे उनके अपमान को उद्धत रहता था। उसने विदुर को अनेक बार सरेआम कोसा, तो जयद्रथ के मारे जाने पर गुरुद्रोण पर ही बुरी तरह भड़क उठा था। वेदव्यास से लेकर कण्व तक और नारद से लेकर मैत्रेय तक जो भी उसे सन्मार्ग का पाठ पढ़ाने आएं, दुर्योधन ने सबकी सीख हवा में उड़ा दी। महाभारत युद्ध से ठीक पहले महर्षि मैत्रेय जब उसे युद्ध न करने की समझाइश दे रहे थे तो उसने उनकी इतनी उपेक्षा की कि उन्होंने क्रोधित होकर उसे शाप दे डाला था, 'जा! युद्ध में भीम तेरी जंघा को तोड़ देगा।' महर्षि गुस्से में राजभवन से उठे और जाते हुए कहा, 'यदि मेरा कहा मानेगा तो शाप निष्प्रभावी होगा!' मगर दुर्योधन न माना और मारा गया।

इससे उलट युधिष्ठिर है जो सदा बड़ों का आज्ञापालक है और इसीलिए विजयी भी हुआ और यशस्वी भी। महाभारत के भीष्म पर्व का अनुकरणीय प्रसंग है जो 43 वें अध्याय में दर्ज़ है। श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को श्रीमद्भागवत गीता के उपदेश के ठीक बाद युद्ध प्रारम्भ होने से पहले युधिष्ठिर रथ से उतरकर निःशस्त्र हो जब पूर्वाभिमुख होकर शत्रु सेना की ओर पैदल चलने लगे तो शेष पांडव भाइयों के हाथ पैर फूल गए। किसी को समझ न आया कि ऐन युद्ध की घड़ी युधिष्ठिर क्यों आगे रहकर मृत्यु के मुख में जा रहे हैं? सबने युधिष्ठिर को रोकना चाहा लेकिन ज्येष्ठ पाण्डुपुत्र मौन होकर कौरव सेना की ओर बढ़ते गए। तब केवल श्रीकृष्ण उनका मनोरथ समझ पाए और उन्होंने भीम-अर्जुन आदि को रोका और समझाया कि 'युधिष्ठिर बड़ों का आशीर्वाद लेने जा रहे हैं!'

कथा के अनुसार युधिष्ठिर ने क्रमशः भीष्म, द्रोण, कृप और मामा शल्य को शीश नवाया, चरण छुए। बदले में सबने जीत का आशीष दिया और वरदान दिए। भीष्म ने अपनी मृत्यु का रहस्य बताने का भरोसा दिलाया तो शल्य ने युद्ध में कर्ण को हतोत्साहित करने का वचन दिया। चारों ने कहा, 'पार्थ! तुम न आते तो हम तुम्हें शाप दे देते मगर तुम आए हो तो आशीष देते हैं कि विजय तुम्हारी ही होगी।' ये अंतर है युधिष्ठिर और दुर्योधन के आचरण और व्यवहार का और इसी में दोनों की प्राप्ति का सूत्र छुपा है। दुर्योधन ने अपने कुव्यवहार से बड़ों का हृदय दुखाया और पूरे परिवार का नाश करा लिया। दूसरी ओर युधिष्ठिर है जिसने अपनी विनम्रता से शत्रु सेना के बुजुर्गों का आशीर्वाद, वरदान और विजय सब कुछ पा ली। मत भूलिए, जो घर के बुजुर्गों का मन दुखाएंगे वे कभी सुख न पाएंगे और जो उनके प्रति नत होंगे उनकी जय ईश्वर भी न रोक सकेगा!

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

अनुभव के गीत

हमारे वरिष्ठजन हमारे जीवन में 'अनुभव के गीत' हैं। यह गीत हमारे मार्गदर्शक हैं और राह को खुशनुमा बनाते हैं। उनका संगीत हमारे मन-मस्तिष्क को बदल देने की ताकत रखता है। आपाधापी के बीच उनकी तान हमारी जिंदगी को आसान बना देती है। इसलिए जिन घरों में वरिष्ठ हैं, वहां जीवन की लय सुर-ताल के साथ रफ्तार पाती रहती है। हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमारे समाज में ऐसे वरिष्ठजनों का हमें साथ मिल रहा है। उनकी निगाहबानी में समाज नित नई उन्नति कर रहा है। ऐसा इसलिए है कि इन वरिष्ठजनों ने अपने जीवन में जो अनुभव लिए, उनका फायदा समाज को मिल रहा है। वे उम्र को मात देकर आज भी समाज की सेवा में जुटे हैं। वे हमारी नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा-पुंज हैं। ऐसे आशीर्वाददाताओं को यह अंक समर्पित करते हुए श्री माहेश्वरी टाइम्स परिवार उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को नमन करता है। हम जिन तक पहुंच पाए उनका परिचय तो हम आप तक पहुंचा पा रहे हैं, लेकिन इनके अलावा भी समाज में कई मूर्धन्य समाजसेवी हैं, हम उन्हें भी नमन करते हैं।

इस अंक में इंदौर के डॉ बृजमोहन ईनानी, मुंबई के उद्योगपति श्रीगोपाल काबरा, गुना के रामनिवास लाहोटी, बूंदी के विजेंद्र माहेश्वरी, तराना के ओमप्रकाश पलोड, नागपुर के डॉ विनोद लाखोटिया, देवास के डॉ केके धूत, पाली के सूर्यप्रकाश लड्ढा, कांटाफोड की शांतिदेवी बियाणी जैसे कई समाजसेवियों के कृतित्व से आप परिचित होंगे, जिन्होंने न केवल अपने लक्ष्यों को पाया बल्कि समाज को भी नई दिशा दी। वे अपने परिवार के लिए जितने सम्माननीय हैं, उससे ज्यादा समाज के लिए भी, क्योंकि उनका समर्पण समाज की नींव है। इस कड़ी में अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के पूर्व अध्यक्ष व जोधपुर के वरिष्ठ समाजसेवी श्री दामोदारलाल बंग जैसे व्यक्तित्व को भी श्रद्धासुमन, जो अब हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनका संपूर्ण जीवन हमारे लिए किसी ज्योति स्तंभ से कम नहीं जो हमेशा हमारा मार्गदर्शन करेगा।

इस समय देश कोरोना से जूझ रहा है। इस पर नियंत्रण के सारे प्रयास नाकाफी साबित हो रहे हैं। रोज बढ़ते पॉजिटिव मरीजों के आंकड़े मन को भयभीत करते हैं। चिंता की बात यह भी है कि इस समय कोरोना से सबसे ज्यादा खतरा वरिष्ठजनों को ही है। कोरोना से बचाव के लिए वरिष्ठों की देखभाल सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई है। घरों में वरिष्ठजनों को सुरक्षित वातावरण मिले, इसके लिए घर के अन्य लोगों को भी उतनी ही सावधानी रखना जरूरी है। विशेषज्ञ मानते हैं कि कोरोना संक्रमण इम्युनिटी से प्रभावित है। वरिष्ठजन और बच्चों की इम्युनिटी कम होने से उन्हें इसके संक्रमण का ज्यादा खतरा है। ऐसे में जिन घरों में वरिष्ठजन और बच्चे हैं, उन्हें अपने आप को संक्रमण से दूर रखने की जरूरत है, ताकि घर का वातावरण सुरक्षित रहे। काम-काज की आपाधापी में हम उन सावधानियों को कभी अनदेखा नहीं करें जो हमें कोरोना से बचा सकती हैं। व्यापार-व्यवसाय जितना जरूरी है, उससे ज्यादा जरूरी अपने और अपने परिवार की सुरक्षा है। ऐसे समय में हमें उद्योगपति रतन टाटा की इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि इस समय अपने आपको बचाना जरूरी है, कमा तो हम बाद में भी लेंगे। फिल्म गदर का संवाद भी है, 'जंग जीतने के लिए मरना नहीं, जिंदा रहना जरूरी है।' कोरोना पर देश तभी विजय पाएगा, जब देश का हर नागरिक अपने आपको इस जंग का हिस्सा मान कर कोरोना को मात देने के लिए खड़ा होगा। इस समय बाजारों में जिस तरह सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं होने और मास्क का उपयोग करने से बचने की प्रवृत्ति है, उसी का नतीजा है कि कोरोना का आक्रमण कम नहीं हो रहा। कोरोना काल ने जिस तरह हमें कई तरह से अनुशासित किया है, उसी क्रम में हमें सावधानियों को भी अपनाना ही होगा।

कोरोना पर चर्चा के बीच यह सुखद बात भी निकलकर आई है कि कोरोना संक्रमण से बचाव में सबसे ज्यादा असरकारी आयुर्वेदिक काढ़ा और अन्य औषधियां रही हैं। हमारा देश आयुर्वेद का जनक है, लेकिन आधुनिकता की दौड़ में हमने इसका तिरस्कार किया। कोरोना काल में आयुर्वेदिक औषधियों की खपत तीन गुना तक बढ़ गई। खास कर वह औषधियां जो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। इस कड़ी में भारतीय खान-पान में ऐसे मसालों का उपयोग प्रमाणित हुआ, जो हमें आंतरिक रूप से बीमारियों से लड़ने में सहायक है। भारतीय संस्कृति की मान्यताएं प्रमाणित हुईं। निश्चित तौर से इससे विश्व के सामने यह साबित हुआ कि भारत की संस्कृति, परंपराएं और धर्म-कर्म व्यक्ति को स्वस्थ्य और प्रकृति को सम्मुन्नत रखने के लिए है। इनकी वैज्ञानिकता का यह प्रमाणीकरण निश्चित तौर से विश्व का ध्यान भारत की ओर आकर्षित कर रहा है। इस अंक में आप हमेशा की तरह स्थायी स्तंभों के साथ अन्य रुचिकर और ज्ञानवर्द्धक आलेख भी पाएंगे। यह अंक कैसा लगा इस बारे में अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराना न भूलें।

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

समाज चिंतक के रूप में अपनी पहचान रखने वाले श्री श्यामसुंदर जेठा का जन्म जबलपुर (मप्र) में 25 अक्टूबर 1955 को हुआ। विज्ञान स्नातक की डिग्री प्राप्त कर पारिवारिक व्यवसाय में बड़े भ्राता सुखदेवप्रसाद जेठा एवं डॉ. कृष्णगोपाल जेठा के साथ जुड़ गए। वर्तमान में उनकी संस्था 'दीपक एडवरटाइजिंग एजेंसी' जबलपुर के साथ ही इंदौर, जयपुर, भोपाल, दिल्ली एवं मुंबई में स्थापित होकर सेंट्रल इंडिया की नंबर एक एजेंसी है। सामाजिक सरोकार अंतर्गत वर्तमान में माहेश्वरी मंडल, जबलपुर के अध्यक्ष एवं रोटरी क्लब डि.3261 में असिस्टेंट गवर्नर पद पर सेवा दे रहे हैं। इसके अलावा जस्टिस तन्खा मेमोरियल रोटरी इंस्टिट्यूट फॉर स्पॉस्टिक एंड हैंडीकैप्ड चिल्ड्रन के संस्थापक ट्रस्टी, मप्र पूर्व क्षेत्रीय प्रादेशिक माहेश्वरी सभा, राजकुमारी बाई बाल निकेतन, महाकौशल चैंबर ऑफ कॉमर्स, मप्र मारवाड़ी सम्मेलन आदि संस्थाओं में विभिन्न पदों पर रह चुके हैं। धर्मपत्नी उषा माहेश्वरी इनरव्हील क्लब ऑफ जबलपुर एवं माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष रह चुकी हैं।

उम्र नहीं समर्थता एवं असमर्थता अधिक महत्वपूर्ण

युवा और मध्यम आयु के बाद की जीवन अवधि आपको वरिष्ठ नागरिक (सीनियर सिटीजन) का दर्जा प्रदान करती है। वास्तव में देखें तो प्रगतिशील देश में वरिष्ठता को उम्र से नहीं बल्कि आपकी समाज में सक्रिय योगदान करने में समर्थता तथा असर्मथता से नापते हैं। 60 और 70 वर्ष की आयु में भी अधिकांश लोग फिट हैं, सक्रिय हैं, खुद की देखभाल में सक्षम हैं। आप अपने अनुभवों से हर क्षेत्र में स्वयं के साथ-साथ अन्य व्यक्तियों को भी सफलता दिलाने में सहयोग प्रदान कर सकते हैं। मन और विचारों से अपने आप को तंदुरुस्त एवं सक्रिय रखें, तो तन से भी धन से भी तंदुरूस्त और सक्रिय रहेंगे। जब आप तन, मन, धन से तंदुरुस्त और सक्रिय रहेंगे तो जीवन आनंद और उमंग से भर उठेगा। सफल जीवन के लिए यह जरूरी है कि आप हमेशा सहज-सरल रहें। ज्ञान एवं अनुभव का समयानुसार कम एवं ज्यादा मात्रा में उपयोग मौका देखकर व मौके की नजाकत को देखकर करते रहे। इस अनुरूप काम करना निश्चय ही अच्छे परिणाम देगा।

अक्सर देखा एवं सुना गया है कि व्यक्ति बाहर तो फिट है और घर में मिसफिट, घर की मुर्गी दाल बराबर। हमारा कहना है, घर की मुर्गी दाल नहीं मुर्गी बराबर ही रहे। उसके लिए आप उतनी ही नम्रता, विनम्रता, सहनशीलता घर के अंदर भी अपने व्यवहार में लाएं, जो आप बाहर वालों के साथ अपने बॉस के साथ, उच्चाधिकारी अथवा परिचितों, मित्रों के साथ करते हैं। समय के अनुसार अपने आप को अपडेट करते रहें, जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते रहें। फिर देखें युवा वर्ग भी आपके साथ-साथ कदमताल कर चलने लग जाएगा। युवा वर्ग के साथ दोस्ताना व्यवहार अधिक लाभकारी एवं अधिक परिणाम देने वाला होगा। वरिष्ठ होने के नाते आपके पास अब ज्ञान एवं अनुभव का असीमित भंडार है। परिवार को सुचारु रूप से चलाने हेतु आपका ज्ञान व अनुभव अति महत्वपूर्ण है। दोष, उलाहना व ताना कसने की गहन बीमारी से हमेशा बचें, फिर देखिये जिंदगी कैसी हसीन हो जाती है?

कोरोना काल में युवाओं से लेकर वरिष्ठों तक में नये विचारों की सुनामी आई है। परिणाम स्वरूप समाज एवं संयुक्त परिवारों का महत्व बढ़ा है। एकल परिवार से संयुक्त परिवार की ओर लोगों का रुझान बढ़ा है। अब समय आ गया है, संगठित होने का, एक साथ रहने का। कोरोना काल में समाज संगठन की महत्ता भी बढ़ी है और समाज संगठन की जिम्मेदारी भी। आओ, हम सब मिलकर अपनी जिम्मेदारियों का उचित निवर्हन करें।

श्यामसुंदर जेठा (माहेश्वरी),
अतिथि सम्पादक

श्री चान्दसिनी माताजी

टीम SMT

श्री चान्दसिनी माताजी माहेश्वरी समाज की फोफलिया व न्याती खांप की कुलदेवी हैं।

माताजी श्री चान्दसिनी का मंदिर राजस्थान के टोंक जिले की मालपुरा तहसील के ग्राम टोरडी सागर के उत्तर में स्थित है। मंदिर प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक खुला रहता है। पुजारी श्याम सुंदर शर्मा से मिली जानकारी के अनुसार श्री राजेन्द्र न्याती के पुत्र छगनलाल न्याती तह. भड़गाँव जिला जलगाँव (महाराष्ट्र) को माताजी ने स्वप्न दिया था। इसके आधार पर उन्होंने 20 वर्ष पूर्व खोज की। लगभग 100 देवी मंदिरों के भ्रमण के बाद वे यहाँ पहुँचे।

यह मंदिर टोरड़ी गाँव से डेढ़ कि.मी. दूर मोहनगिरी पहाड़ की तलहटी में स्थित है। मंदिर में एक काले पत्थर की माताजी की विशाल मूर्ति है। यहाँ सिंदूर, वस्त्र, नेत्र आदि से माताजी का शृंगार किया जाता है। गुम्बद में चाँद-सूर्य के निशान विद्यमान हैं। किवदंतियों के अनुसार मंदिर द्वापर युग का बताया जाता है। कहा जाता है कि रुख्मणीजी अम्बिका पूजन के लिये यहीं आई थी जहाँ से भगवान श्रीकृष्ण ने उनका हरण किया था। समीप रुख्मणी के भाई रुक्मैया द्वारा भोजकट भी खण्डहर अवस्था में विद्यमान है एवं खुदाई के दौरान कई पुरातात्विक जानकारियाँ प्राप्त हुईं।

- **विशेष** यहाँ माताजी की पूजन-आरती, वेश, अखण्ड ज्योत व भोग का विशेष महत्व है।
- **कैसे पहुँचें** श्री चान्दसिनी माताजी का मंदिर राजस्थान को टोंक जिले की मालपुरा तहसील के ग्राम टोरडी सागर में है। अजमेर व टोक दोनों से बस सुविधा उपलब्ध है।

पूर्वी म.प्र. महिला संगठन ने करवाई संभागों की बैठक

इसमें चारों संभागों ने अपनाई अलग-अलग थीम व लिये संकल्प

भोपाल। मध्यान्चल के अंतर्गत प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा प्रदेशाध्यक्ष अनिता जावंधिया, सचिव रंजना बाहेती तथा कार्य समिति सदस्य प्रतिभा झंवर के नेतृत्व में गत अगस्त माह में विभिन्न सेवा गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत अध्यक्ष श्रीमती जावंधिया द्वारा चारो संभाग की बैठक अलग-अलग करवा कर पूरे प्रदेश को हर इकाई से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया गया।

चारों संभागों की अलग-अलग बैठक की थीम व उनके संकल्प भी अलग-अलग रहे। इसमें जबलपुर संभाग की थीम- 'शिवमहिमा' तथा संकल्प-'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' था। ग्वालियर संभाग ने थीम-'देशभक्ति' की चुनी व ''पर्यावरण बचाओ'' संकल्प लिया। इसके अंतर्गत पेड़ों पर रक्षासूत्र बांधे गये। नर्मदा संभाग की थीम ''तीज त्यौंहारों के संग अंचल के रंग'' थी और लक्ष्य रखा गया संकल्प स्वच्छता का, ''घर एवं मोहल्ले का सब के साथ'' रखा गया था। इसी प्रकार भोपाल संभाग की थीम ''चालो आपा मारवाड़ चाला'' थी। इसमें संकल्प ''स्वदेशी अपनाओ-विदेशी हटाओ'' रखा गया। श्रीमती जावंधिया द्वारा मीडिया प्रभारी के लिए एक प्रादेशिक टीम नियुक्त की गई जो कि समय-समय पर राष्ट्रीय, प्रादेशिक, स्थानीय और पत्रिका की रिपोर्टिंग करते रहेंगे, इसमें मीडिया प्रभारी हंसा केला-भोपाल, रेनू चांडक-छिंदवाड़ा तथा कविता चांडक-बरेली चुनी गई।

घर में मने इस बार त्योहार

भादौ महीने के त्योहार इस बार अपने-अपने घर में मने। सभी सम्भाग की सभी स्थानीय इकाइयों द्वारा श्री राम जन्मभूमि शिलान्यास पर घरों में दीपक व विद्युत सज्जा से रोशनी कर, पटाखे चलाकर, रंगोली बनाकर दीपावली जैसा उत्सव मनाया गया। सभी संभाग में तीज, राखी, जन्माष्टमी, स्वतंत्रता पर्व, बछबारस, गणेश उत्सव आदि पर्व धूमधाम से मनाये गये। वरिष्ठ समाजसेवी त्रिलोक जाजू की पुत्रवधु पलक जाजू भोपाल द्वारा मिट्टी के गणपति बनाना तथा विभा झंवर द्वारा मोदक बनाना सिखाया गया। त्योहारो के मौसम में सभी स्थानों पर विभिन्न प्रतियोगिता, फूलों के गहने राखी बनाओ, पिंडा सजाओ, भजन व देश भक्ति गीत आदि अनेक प्रतियोगिता आयोजित हुई है।

बाल एवं किशोरी समिति द्वारा जूम ऐप पर आयोजित कार्यक्रम में रमेश परतानी द्वारा प्रेरक वक्तव्य दिया गया। 23 अगस्त को प्रदेश सभा, महिला संगठन, युवा संगठन के तत्वावधान में ऑनलाइन पुरस्कार वितरण सम्मान आयोजित हुआ। समारोह में पूर्वी मध्यप्रदेश के महिला संगठन ने अपना परचम लहराया।

समाज के लिये सेवा का दौर

शुभ विवाह समिति द्वारा 125 संबंध कराकर प्रदेश में अपना परचम लहराया गया। पूर्वी मध्यप्रदेश द्वारा अखिल भारतीय बंधन सवर्णा की जूम मीटिंग का आयोजन किया गया। अंतर्राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता में बरेली के पार्थ चांडक ने ऑल इण्डिया में तृतीय स्थान प्राप्त कर पूर्वी

मध्यप्रदेश का नाम रोशन किया। नर्मदा संभाग की प्रथम त्रैमासिक बैठक 20 अगस्त को आयोजित हुई। मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष अनिता जावंदिया, विशिष्ट अतिथि शोभा मंगल काबरा, प्रतिभा झंवर, प्रदेश सचिव रंजना बाहेती एवं सभी पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति रही। नर्मदा अंचल की उपाध्यक्ष उर्मिला सादानी द्वारा मारवाड़ी भाषा में अतिथियों की मनुहार की गई।

चारों संभागों ने लिये संकल्प

नर्मदा अंचल की उपाध्यक्ष उर्मिला सादानी द्वारा संगठन की सभी इकाइयों के साथ स्वच्छता का एक संकल्प लिया और एक प्रेरणात्मक कदम स्वच्छता की ओर बढ़ाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी त्यौहारों को बहुत सुंदर ढंग से नृत्य, कहानियों, नाटक द्वारा सभी इकाइयों की महिलाओं ने आयोजित किया। ग्वालियर संभाग की त्रैमासिक प्रथम मीटिंग में देशभक्ति का जज्बा दिखाया गया। इसमें शहीद भाइयों को नमन भी किया गया। ग्वालियर उपाध्यक्ष सुनीता नागोरी ने पर्यावरण संरक्षण के संकल्प अंतर्गत पेड़ को रक्षा सूत्र बांधकर एक नई सोच का परिचय दिया। जबलपुर संभाग की प्रथम त्रैमासिक बैठक 28 जुलाई को जूम ऐप द्वारा आयोजित की गई। मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती जावंधिया व प्रदेश सचिव रंजना बाहेती थी। संभागीय उपाध्यक्ष संध्या गांधी द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। भोपाल जिला संगठन जिला अध्यक्ष जयश्री बजाज, जिला सचिव संतोष बाहेती एवं टीम द्वारा एक अनूठा आयोजन दिव्यरत्नम बहुत ही सुंदर तरीके से आयोजित किया गया। भोपाल के तीनों अंचल से सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को 'दिव्य रत्न' की उपाधि से नवाजा गया। तीनों अंचल से 27 दिव्यरत्नम चयन कर सम्मानित किए गए। आयोजन में मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती जावंदिया, सचिव श्रीमती बाहेती, समिति प्रभारी, राष्ट्रीय सह प्रभारी, चारों संभाग के उपाध्यक्ष की उपस्थिति रही।

तीन प्रतिभा जिन्होंने हुनर को बनाया पहचान

प्रदेश संगठन द्वारा समाज की तीन प्रतिभाओं का उनके हुनर के लिये सम्मान किया गया। इन्होंने शैक्षणिक डिग्री तो कोई ओर प्राप्त की लेकिन अपने हुनर से एक अलग ही पहचान बनाई। इनमें भोपाल निवासी मेदिनी केला, पलक जाजू व सुरभि माहेश्वरी शामिल हैं। हंसा केला (प्रचार प्रसार मंत्री) ने इनका साक्षात्कार लिया।

पलक जाजू ने बताया कि पढ़ाई में बी.एससी. इन इंटिरियर डिजाईन की डिग्री ली। उनका कहना है कि मेरा झुकाव हमेशा से आर्ट एंड क्राफ्ट (शिल्पकला) की तरफ रहा है। अभी मैं अपनी माँ श्रीमती आशा मंत्री के साथ अनुकूलित और थीम के अनुसार पैकिंग, लिफाफे, चोकी, पूजा की थाली, मांडना, लैम्प, गिफ्ट आर्कटिक आदि ऑर्डर पर शादियों एवं अन्य कार्यक्रम, त्योहारों के लिए बनाती हूँ। मिट्टी के गणेशजी बनाने की प्रेरणा मुझे मेरी माँ से ही मिली। उन्होंने जब पहली बार घर में मिट्टी के गणेश बनाए तब ही से मुझे इस चीज को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली। उसके बाद से हर साल मैं मिट्टी के गणेशजी बनाने लगी, और सिर्फ खुद के घर के लिए नहीं रिश्तेदारों और मित्रों के लिए भी। हम गणेशजी पिछले 7 सालों से बना रहे हैं और कोशिश कर रहे हैं कि पर्यावरण को बचाने में अपना योगदान दे सके और साथ ही साथ लोगों के बीच जागरूकता भी ला सके।

मेदिनी केला यह कहती है कि इन्हें बचपन से ही खाना बनाने और नए-नए पकवान बनाने में रूचि थी पर वह तब तक सिर्फ एक रूचि तक ही सीमित थी। अपनी स्कूल की पढ़ाई खत्म करके इन्होंने टैक्सेशन में बी.कॉम. कर ग्रेजुएशन किया और साथ ही सीएस की पढ़ाई की। आगे की पढ़ाई के लिए जब चर्चा हुई तब तक उन्होंने अपनी रूचि में ही अपना करियर बनाने का निश्चय किया और बेकिंग में पढ़ाई के लिए तैयारी करना चालू की। इस बीच उन्होंने यौगिक साइन्स में बरकतुल्लाह यूनिवर्सिटी भोपाल से डिप्लोमा हासिल किया। उसके पश्चात आईएचएम मुंबई से बेकिंग का डिप्लोमा कोर्स कर इन्होंने ग्रैंड ओबेरॉय, कोलकता में ट्रेनिंग की। पेस्ट्री शेफ बनने के इस सफर में, कोरोना महामारी के समय रोक लगने के कारण उन्होंने घर में केक बनाना चालू किया और ऑनलाइन क्लासेस के जरिये घर में आसान तरीकों से कैसे सेट डिजर्टस बना सकते हैं, यह बखूबी सिखाया। अब एक 'होम क्रिएट डिजर्ट' के नाम से घर में ही बेकरी का शुभारम्भ किया है।

सुरभि माहेश्वरी बताती है कि बहुत कम उम्र से ही मैंने रसोई में अपनी माँ की मदद की, जिसके कारण खाना बनाने के क्षेत्र में मेरी रुचि पैदा हुई। शुरूआत में, मैंने इस रुचि को एक शौक के रूप में माना। लेकिन जब मैं कानून स्नातक बनने के लिए अध्ययन कर रही थी तब मुझे एहसास हुआ कि मैं अपने शौक को करियर के रूप में आगे बढ़ाना चाहती हूं। मैंने अपनी पढ़ाई हिदायतुल्ला नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर से पूरी की। मेरे माता-पिता ने बेकिंग में एक पेशेवर कोर्स करने का सुझाव दिया, जो मैंने किया। मैंने लेवोन एकेडमी, बेंगलुरू से पेस्ट्री शेफ में अपना सर्टिफिकेशन कोर्स किया। उसके बाद मैंने भोपाल से Baked@186 °c' के नाम से होम बेकर के रूप में, घर से ही काम करना शुरू किया। ये कार्य करते हुए मुझे तीन साल हो चुके हैं और अब मैं कस्टमाइज्ड केक, कप केक और होम मेड ब्रेड्स की विशेषज्ञ हूं। हाल ही में मैंने माहेश्वरी समाज, भोपाल के साथ मिलकर एक ऑनलाइन लाइव कुकिंग क्लास की मेजबानी की, जिसमें लगभग 450 लोगों ने भाग लिया। उल्लेखनीय है सुरभि माहेश्वरी पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी सभा के पूर्व महामंत्री लक्ष्मेन्द्र माहेश्वरी की सुपुत्री है।

'माहेश्वरी सेवा संकल्प' ने तय किया सेवा का द्वितीय सौपान

लॉकडाउन में आर्थिक परेशानी से जूझ रहे 4 हजार परिवारों तक पहुंची सहायता

मुंबई। समाज के ख्यात समाजसेवियों द्वारा गठित सेवा संस्था "माहेश्वरी सेवा संकल्प" द्वारा लॉकडाउन के कारण आर्थिक संकट में आये समाजजनों की मदद का संकल्प लिया गयाथा। इस संकल्प के अंतर्गत संस्था 4 हजार से अधिक जरूरतमंद परिवारों को कुल 3 हजार रुपये प्रति परिवार आर्थिक सहायता प्रदान कर चुकी है। संस्था द्वारा पूर्व में 1500 रुपये की प्रथम किश्त इन्हें जारी की गई थी। गत माह शेष 1500 रुपये प्रति परिवार की सहायता राशि भी जारी कर संस्था द्वारा अपने "सेवा संकल्प" को पूर्ण कर लिया गया है।

कोरोना महामारी से जीवन रक्षा के लिये पूरे देश में दो माह से भी अधिक समय से लॉकडाऊन चल रहा था। इसमें सभी उद्योग-व्यवसाय थम गये। इससे कोरोना संक्रमण बढ़ने से तो रूका लेकिन इसने कई लोगों को नौकरी छीन ली, कई छोटे व्यवसायियों को आर्थिक रूप से भीषण संकट में लाकर खड़ा कर दिया। इनमें समाज के कई परिवार ऐसे भी थे, जो अपने स्वाभिमान के कारण शासन की योजनाओं का लाभ भी नहीं ले पा रहे थे। ऐसे स्वजातीय बंधु इस संकट में अपने को असहाय न समझें, इसके लिये संस्था "माहेश्वरी सेवा संकल्प" द्वारा यह योजना तैयार की गई थी। इस योजना के अंतर्गत संस्था द्वारा 5000 जरूरतमंद परिवारों तक 3 हजार रुपये प्रति परिवार सहायता राशि पहुंचाना थी। इसमें लक्ष्य था कि ऐसे हितग्राहियों की जानकारी पूर्णतः गुप्त रहे जिससे उनके स्वाभिमान पर चोट न पहुंचे और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्रभावित न हो। इसके लिये यथा संभव ईमेल व वाट्सएप से आवेदन आमंत्रित कर सीधे संबंधित के बैंक खाते में ही सहायता राशि प्रेषित करने का लक्ष्य रखा गया। इस योजनांतर्गत 5 हजार के विरूद्ध 4200 हजार हितग्राहियों ने आवेदन किये। इनमें से लगभग 4000 आवेदकों को पूर्ण सहायता राशि प्रदान की जा चुकी है।

सहायता के लिये अपनाई थी सरल प्रक्रिया

माहेश्वरी समाजजन वैसे ही स्वाभिमानी है, ऐसे में पात्र व अपात्र का भेद करने के लिये अधिक अनौपचारिकताएँ रखने से उनके स्वाभिमान पर चोट पहुंचती है और वे अपनों से सहयोग लेने में भी पीछे हट जाते हैं। यही कारण है कि इस सहायता योजना में अधिक औपचारिकता नहीं रखी गई थी। यहां तक कि कारण तक नहीं पूछा गया। इसमें इच्छुक समाजजन "माहेश्वरी सेवा संकल्प" संस्था के ई मेल आईडी या मोबाईल नंबर पर वाट्सएप कर अत्यंत सामान्य प्रारूप में आवेदन कर इस योजना का लाभ ले सकते थे। इसका लाभ लेने के लिये प्रार्थी को मात्र अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र, पिनकोड सहित पता, आधार कार्ड की जानकारी एवं बैंक खाता क्रमांक आईएफएससी कोड सहित तथा संपर्क दूरभाष एवं मोबाइल नंबर के साथ आवेदन करना थाा। इस आवेदन पर संस्था द्वारा तत्काल कार्यवाही कर सहायता प्रदान की जा रही थी।

ऋषिमुनि प्रकाशन द्वारा काल गणना की नगरी उज्जयिनी से प्रकाशित

श्री विक्रमादित्य पञ्चाङ्ग

इतना सरल की अपने घर के पंडित आप खुद बन जाए

डेढ़ वर्षीय विवाह मुहूर्त के साथ

व्रत-पर्व देखना हो या शुभ मुहूर्त या
विवाह के लिए पत्रिका का करना हो मिलान
कहीं जाने की जरूरत नहीं, स्वयं देखें अपने पञ्चाङ्ग में

90, विद्या नगर, टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
फोन- 0734-2526761, मो.94248-44161, 94248-44161

व्यवसाय वृद्धि पर वर्चुअल सेमीनार

कोलकाता. माहेश्वरी औद्योगिक शिक्षण केंद्र (अंतर्गत माहेश्वरी सभा) कोलकाता द्वारा 'कैसे प्राप्त करें अधिक उपभोक्ता' विषय पर वर्चुअल सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रेरक वक्ता गौरव गांधी ने कहा कि ऑनलाइन द्वारा विश्वव्यापी मार्केट में पहुंचा जा सकता है। जो जितना जल्दी इस मार्केट को कैप्चर कर सकता है उतना ही अच्छा है। कार्यक्रम में भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी को भी श्रद्धांजलि दी गई। केंद्र के कोष मंत्री आदित्य बिनानी ने संस्था के कार्यों का संक्षिप्त विवरण पावर पाइंट प्रजेंटेशन द्वारा दिया। माहेश्वरी सभा के सभापति पुरुषोत्तम मिमानी ने भी संबोधित किया। केंद्र के सदस्य प्रतिनिधि पंचानंद भट्टड़ ने क्विज खेलाकर कार्यक्रम को रोचक बनाया। आभार केंद्र के उपसभापति सीताराम डागा ने माना। कार्यक्रम का संचालन केंद्र के मंत्री अरुणकुमार सोनी ने किया। पवन बिहानी, सभा के उपमंत्री अशोक चांडक, केंद्र के उपमंत्री राजीव लखोटिया, विनोद डागा इत्यादि ने सहयोग दिया।

लहरियां संग हिंडोला उत्सव मनाया

उदयपुर (राज). संस्था माहेश्वरी महिला गौरव द्वारा कोविड 19 को ध्यान में रखते हुए लहरिया व हिंडोला उत्सव में कई प्रतियोगिता, गेम्स व प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम ऑनलाइन करवाए। सचिव सीमा लाहोटी ने रामायण व महाभारत पर प्रश्नोत्तर कार्यक्रम कराया। अध्यक्ष आशा नरानीवाल व जनक बांगड़ ने विजेताओं की घोषणा की जिससे रेणु मूंदड़ा प्रथम, द्वितीय रेखा काबरा व कला गट्टानी व तृतीय इंद्रा मूंदड़ा रहीं। सभी को कौशल्या गट्टानी व सरिता न्याती द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। रीमा, प्राची, आरती व अंकिता द्वारा सावन पर हाऊजी खेला गया। पौधारोपण कर तीज का सिंजारा मनाया गया। जन्माष्टमी पर नंदोत्सव मनाया गया। इसमें महिलाओं ने भजनों पर नृत्य किया व कृष्ण जन्मोत्सव मनाया। जिलाध्यक्ष मंजू गांधी, सचिव रेखा असावा, कविता, राजकुमार व सभी सदस्य मौजूद थे।

वृक्ष कभी इस बात पर व्यथित नहीं होता
कि उसने कितने पुष्प खो दिये,
वह सदैव नये फूलों के सृजन में व्यस्त रहता है।

बागड़ी को 'राष्ट्रीय समाज सेवा रत्न' पुरस्कार

दिल्ली. यूनेस्को की आईएसओ प्रमाणित संस्था ग्लोबल ह्यूमन राइट्स फाउंडेशन द्वारा देशभर से सामाजिक, शिक्षा, साहित्य, लेखन, खेलकूद, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में अलग-अलग प्रदेश, शहरों में अति विशिष्ट कार्य करने वाली शीर्ष विभूतियों को सम्मानित किया जाता है। फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि के.एस. नारायण ने जानकारी दी कि जनवरी से मार्च 2020 के तीन महीनों में विभूतियों का उनके द्वारा पिछले कुछ वर्षों में किए गए कार्यों, उपलब्धियों के आधार पर चयन संचालन मंडल व जूरी द्वारा किया गया लेकिन कोरोना के कारण कार्यक्रम को ऑनलाइन 15 अगस्त 2020 को आयोजित किया गया। इसमें महाराष्ट्र के नागपुर से अनेकों अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ समाजसेवी शरद बागड़ी को उनके सामाजिक मुद्दों पर चिंतन, लेखन के लिए 'राष्ट्रीय समाजसेवा रत्न-2020' से सम्मानित व पुरस्कृत किया गया। इसके अंतर्गत संस्था ग्लोबल ह्यूमन राइट्स फाउंडेशन द्वारा श्री बागड़ी को स्मृति चिह्न व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह संपन्न

जयपुर. दी एज्युकेशन कमेटी ऑफ माहेश्वरी समाज सोसायटी द्वारा 15 अगस्त को 74वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन तिलक नगर स्थित माहेश्वरी स्कूल प्रांगण में देशभक्ति के भावों से परिपूर्ण वातावरण में हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि राधाकृष्ण कोगटा (चेयरमैन-कोगटा फाइनेंस इंडिया लि.), समाज अध्यक्ष प्रदीप बाहेती, महासचिव शिक्षा नटवरलाल अजमेरा द्वारा ध्वजारोहण कर राष्ट्र के प्रति सम्मान व्यक्त किया गया। कोविड-19 की परिस्थिति को देखते हुए कार्यक्रम सादगी से मनाया गया। अध्यक्ष श्री बाहेती व महासचिव शिक्षा श्री अजमेरा ने संबोधित किया। कोषाध्यक्ष सीए नटवरकुमार सारड़ा ने अतिथि परिचय दिया। मुख्य अतिथि श्री कोगटा द्वारा आत्मनिर्भर भारत के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए समस्त आगंतुकों को स्वाधीनता दिवस की बधाई दी।

लाइफ स्टाईल मास्टर का आयोजन

इंदौर. इंदौर जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय लाइफ स्टाईल मास्टर क्लास के प्रथम दिवस पर विनी राठी द्वारा हेल्दी व अच्छे खाने को कैसे प्रजेंट करे व स्टाइलिश प्लेटिंग करना सिखाया गया। दूसरे दिन डॉ. मानसी पाटिल ने 'ईटवेल फिलवेल, हेल्दी वे टू वेजिटेरियन' विषय पर संबोधित किया। तीसरे दिवस सुप्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटेंट व सुप्रसिद्ध कोर्ट अधिवक्ता संजय झंवर जयपुर ने विषय 'सकारात्मक पारिवारिक माहौल बनाने में महिलाओं के संवाद की भूमिका' पर अपनी बात रखी। इंदौर जिला माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष सुमन सारडा ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन सचिव नम्रता राठी ने किया। कम्प्यूटर समिति की संयोजक उर्मिला सारड़ा ने आभार माना। कार्यक्रम की समन्वयक माधुरी सोमानी, किरण लखोटिया, पलक मंत्री ने सभी गतिविधियों का परिचय दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के सभापति श्याम सोनी थे। इंदौर जिला माहेश्वरी महिला संगठन की उपाध्यक्ष व संयोजिका पुष्पा मोलासरिया व दमयंति मणियार ने बताया कि इंदौर जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आयोजित इस तीन दिवसीय ऑनलाइन लाइफ स्टाइल मास्टर क्लास में रोज 700 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर महिला संगठन की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशीला काबरा, महासभा के पूर्व अर्थ मंत्री रामअवतार जाजू, कार्यसमिति सदस्य भरत सारडा, कमल लड्ढा, अशोक डागा, राम मूंदड़ा, कल्याणमल मंत्री, ओमप्रकाश पसारी, केदार हेड़ा, महिला संगठन की प्रदेशाध्यक्ष वीणा सोमानी, निवृत्तमान अध्यक्ष अरुण बाहेती, माहेश्वरी समाज इंदौर के जिलाध्यक्ष राजेश मूंगड़, जिला महिला संगठन की निवृत्तमान अध्यक्ष प्रमिला भूतड़ा, पूर्व अध्यक्ष रमा शारदा, निर्मला बाहेती आदि ऑनलाइन उपस्थित थे।

वेबिनार का आयोजन

इंदौर. माहेश्वरी महिला मंडल हाईवे क्षेत्र द्वारा नेशनल न्यूट्रीशनल वीक के अंतर्गत 'महिलाओं में पोषण' विषय पर एक वेबिनार आयोजित किया गया। संस्था अध्यक्ष सुषमा मालू ने बताया कि संस्था द्वारा 'महिलाओं में पोषण के विभिन्न चरण' विषय पर न्यूट्रीशियन डॉ. अंकिता बाहेती ने बताया कि हर उम्र एवं परिस्थिति के अनुसार आपको अपनी डाइट में हरी पत्तेदार सब्जियां, फल, बीन्स ड्रायफ्रूट्स को शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही ध्यान और योग को भी दैनिक जीवन में अपनाएं। कार्यक्रम का सफल संचालन सचिव लता गट्टाणी ने किया। अतिथि परिचय मोनिका माहेश्वरी ने दिया।

पराजय तब नहीं होती
जब आप गिर जाते हैं
पराजय तब होती है जब आप उठने से
इनकार कर देते हैं

सेवा गतिविधियों का हुआ आयोजन

कानपुर. मध्य उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत 17 एवं 18 अगस्त को दो दिवसीय सुनियोजन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री एवं वक्ता मंजू बांगड़ ने सकारात्मक कैसे बने विषय पर उद्बोधन दिया। वक्ता ज्योति राठी ने 'निर्माण से निखार' विषय पर बहुत ही सहज एवं सरल भाषा में अपना वक्तव्य दिया। उर्वशी साबू ने भी 'इंटरनेट के शिष्टाचार' पर अत्यंत ज्ञानवर्धक मार्गदर्शन दिया। विशिष्ट वक्ता नम्रता बियानी ने भी मार्गदर्शन दिया। उरई माहेश्वरी महिला मंडल में 12 अगस्त को सकारात्मक सोच कैसे रखें विषय पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया। ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति अंतर्गत 15 अगस्त को प्रदेश के सभी जिलों में पौधारोपण व जालौन महिला मंडल ने सेनेटाइजर, मास्क एवम आर्सेलर 30 बांटे। स्वास्थ्य एवं पारवारिक समरसता समिति द्वारा 1 अगस्त को हुए कार्यक्रम 'तीजो रो रंग परिवार के संग' विशिष्ट अतिथि एवम मुख्य वक्ता विमला साबू की उपस्थिति में मनाया गया। महिला अधिकार सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति अंतर्गत अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत 3 प्रदेशों द्वारा मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसके साथ ही सभी समितियों ने भी अपनी सेवा गतिविधियों का आयोजन किया। उक्त जानकारी अध्यक्ष प्रीति तोषनीवाल व सचिव सीमा झंवर ने दी।

ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन

नागपुर. नगर माहेश्वरी सभा, नागपुर ने सरकार की नई शिक्षा नीति एवं कॅरियर गाइडेंस विषय पर आधारित एक कार्यशाला का आयोजन जूम एप पर किया। इसमें पूरे देशभर से बड़ी संख्या में समाज के युवा एवं उनके पालकगणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मोटिवेशनल वक्ता अमित राठी, नासिक ने अपनी 1 घंटे की कार्यशाला में बच्चों एवं उनके अभिभावकों को बेहतरीन टिप्स दिए। कार्यक्रम की शुरुआत नगर माहेश्वरी सभा, नागपुर के सचिव सोमप्रकाश मंत्री ने सभी के शाब्दिक अभिनंदन से की। नगर माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष कृष्णा राठी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में इस कार्यशाला एवं नई शिक्षा नीति के महत्व को बताया। राजकुमार गांधी ने आज के दौर में डीमिट की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कोरोना महामारी से बचाव हेतु नगर माहेश्वरी सभा नागपुर ने आठ डॉक्टर का एक पैनल बनाया जिसकी विस्तृत जानकारी नगर सभा के प्रचार मंत्री राज चांडक ने दी। नगर माहेश्वरी सभा नागपुर द्वारा दसवीं व 12वीं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का ऑनलाईन संचालन वरुण राठी ने किया। सहसचिव सतीश लखोटिया ने आभार माना।

सिविल सर्विस पर आयोजित किया वेबिनार

अजमेर. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा (पूर्वांचल) और पश्चिम बंगाल प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के आतिथ्य में पूर्वांचल और समस्त भारत के माहेश्वरी युवाओं के लिए सिविल सर्विसेस परीक्षा हेतु मार्गदर्शन हेतु गत 6 सितंबर को जूम एप के माध्यम से वेबीनार आयोजित हुआ। इसका आयोजन महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा की प्रशासनिक सेवा मार्गदर्शन समिति के सान्निध्य में हुआ। इसमें पूर्वांचल की सभी प्रदेश सभाओं पश्चिम बंगाल, कोलकाता, पूर्वोत्तर, बिहार, झारखंड, उत्कल और नेपाल के 344 से ज्यादा युवाओं ने भाग लिया। वेबीनार का फेसबुक के माध्यम से लाइव प्रसारण लगभग 3428 समाजबंधुओं और छात्रों ने भी देखा। उपसभापति महासभा (पूर्वांचल) कैलाश काबरा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रशासनिक सेवा हेतु पूर्वांचल से चुनिंदा चयनित प्रतियोगियों को 1 लाख रुपए तक आर्थिक सहयोग की घोषणा की। वेबीनार का उद्घाटन अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के पूर्व सभापति रामपाल सोनी ने किया। इस अवसर पर माहेश्वरी सभा की ओर से लक्ष्मीनारायण सोमानी चेयरमैन माहेश्वरी बोर्ड व बिहारी मालपानी अध्यक्ष मुंबई प्रदेश सभा ने हाल ही यूपीएसपी परीक्षा 2020 में 48वीं रैंक प्राप्त करने वाले समाज के दीपक करवा का उनके निवास पर अभिनंदन किया गया। इसका ऑनलाइन प्रसारण भी किया गया।

रांदड़ रेलवे समिति में

मकराना. भाजपा नेत्री सुनीता रांदड़ को केंद्रीय रेलवे बोर्ड (उत्तर-पश्चिम रेलवे) ने अजमेर मंडल में सदस्य उपयोगकर्ता सलाहकार समिति मनोनीत किया है। श्रीमती रादड़ वर्तमान में भाजपा महिला मोर्चा नागौर (देहात) की जिलाध्यक्ष हैं। साथ ही जिला विकास समन्वय एवम निगरानी समिति, नागौर, में जिला महिला प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत सदस्य भी हैं। आप मध्य राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की निवृतमान प्रदेशाध्यक्ष व राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला संगठन में कार्यसमिति सदस्य हैं।

सोमानी को शिक्षा सेवादान पुरस्कार

चंद्रपुर. साप्ताहिक भारतीय माहेश्वरी पत्रिका द्वारा चंद्रपुर के प्राध्यापक डॉ. जुगलकिशोर मूलचंद सोमाणी को शिक्षा सेवादान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री सोमाणी की अभी तक 10 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। आप गोंडवाना विश्वविद्यालय, गढ़चिरोली में वाणिज्य शाखा के डीन भी रह चुके हैं।

50 फीसदी से अधिक आरक्षण को सर्वोच्च न्यायालय का स्थगन आदेश

वर्धा. पिछली राज्य सरकार ने संविधान की मर्यादा लांघकर सामान्य वर्ग पर अन्याय करते हुए पढ़ाई और नौकरी में आरक्षण की 50 प्रतिशत मर्यादा का उल्लंघन करते हुए इसे 75 प्रतिशत तक बढ़ा दिया था। सेव मेरिट सेव नेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल लद्दड़, नागपुर के नेतृत्व में पूरे राज्य में अनारक्षित वर्ग द्वारा रैली, मुख्यमंत्री को ज्ञापन, घंटानाद, भूख हड़ताल और सोशल मीडिया के माध्यम से पूरजोर विरोध किया गया, लेकिन सरकार अपने फैसले पर अडिग थी। इसलिए सरकार के इस अन्यायपूर्ण फैसले को उच्च न्यायालय और बाद में उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गई। तीन सदस्यीय विद्वान न्यायाधीशों की खंडपीठ ने राज्य सरकार के इस निर्णय पर स्थगत आदेश पारित करते हुए इसे बड़ी बैंच के पास भेजने का निर्णय लिया। उच्चतम न्यायालय के इस फैसले से अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थी एवं पालक वर्ग में हर्ष व्याप्त है। जानकारी सेव मेरिट सेव नेशन वर्धा के संरक्षक जगदीश चांडक ने दी।

ऑनलाइन प्रतियोगिता का किया आयोजन

हैदराबाद. संस्था संस्कार धारा द्वारा लॉकडाउन में स्वतंत्रता दिवस एवं बछ बारस पर ऑनलाइन प्रतियोगिता रखी गई। इसमें हैदराबाद से ही नहीं बल्कि विभिन्न शहरों से भी प्रतिभागियों ने अपने वीडियो भेजकर भाग लिया। संस्था की संस्थापिका कलावती जाजू ने बताया कि इस अवसर पर नन्हें बालक-बालिकाओं के लिए देशभक्ति पर आधारित फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, महिलाओं के लिए तिरंगा डिश बनाकर सजावट के साथ प्रस्तुत करना एवं बछ बारस की कहानी (गाय और बछड़े वाली) पर आधारित नाटिका प्रस्तुत करना आदि प्रतियोगिता आयोजित की गईं। संस्कार धारा की अध्यक्षा श्यामा नावंदर व मंत्री अंजना अटल ने बताया कि इसके विभिन्न आयु वर्ग में आयोजन हुए। इसमें विजेताओं को सम्मानित किया गया।

स्नेह से श्रेष्ठ है 'त्याग' सुंदरता से श्रेष्ठ है 'चरित्र'
सम्पत्ति से श्रेष्ठ है 'मानवता'
परंतु
परस्पर संबंधों को 'जीवित' रखने से
अधिक कुछ श्रेष्ठ नहीं है

त्वचा दान, अंगदान और स्वास्थ्य पर कवि सम्मेलन

इंदौर. संस्था आनंद गोष्ठी ने रोटरी क्लब बोरीवली ईस्ट, दिल्ली शाहदरा, कॉटन सिटी रायचूर एवं नेशनल बर्न्स सेंटर एवम देश की 200 से भी अधिक रोटरी एवम अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन वेबिनार का आयोजन किया। इस मुहिम के मार्गदर्शक राजेश मोदी ने भूमिका प्रस्तुत कर कार्यक्रम का श्रीगणेश किया। उन्होंने सभी पेशेवर लेखकों एवम कवियों को संदेश दिया कि त्वचा दान, नेत्र दान एवम अंग दान विषय पर भी न सिर्फ लिखा जा सकता है वरन ये आज की सामाजिक आवश्यकता भी है। कवि सम्मलेन का उद्घाटन रोटरी इंटरनेशनल के आगामी अध्यक्ष शेखर मेहता द्वारा किया गया। कवि सम्मलेन में इंदौर के श्यामसुंदर पलौड़ एवं किशोरकुमार मिश्रा अतिथि के रूप में शामिल हुए। आनंद गोष्ठी के संरक्षक गोविंद मालू ने कार्यक्रम को अपने काव्यात्मक वक्तव्य से नई ऊर्जा प्रदान की। आनंद गोष्ठी और रोटरी द्वारा पहली बार त्वचा दान, नेत्रदान और अंगदान पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। उन्होंने इससे पूर्व मुंबई से इंदौर कार रैली निकाली थी। अतिथि कवि पलोड़ के कविता पाठ से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। भारत के हर कोने से आए चुनिंदा रचनाकारों ने त्वचा दान, नेत्रदान और अंगदान जैसे सामाजिक जागरुकता के विषय पर मर्मस्पर्शी, अद्भुत व संवेदनशील कविताएं पढ़कर समाज को नेक संदेश देकर सबके दिल को छू लिया।

शहीदों का किया श्राद्ध

इंदौर. आरएसएस और भाजपा के दिवंगत नेताओं, प्रचारकों, शहीदों, सैनिकों और कोरोना योद्धाओं का श्राद्ध कर तर्पण भाजपा नेता गोविंद मालू ने किया। श्राद्ध पक्ष में इंदौर में यह अलौकिक आयोजन भाजपा नेता और खनिज विकास निगम के पूर्व उपाध्यक्ष गोविंद मालू ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी किया। इस अवसर पर शहर के कई गणमान्य, पुरुष एवं महिलाओं ने तर्पण कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

कोरोना कर्मवीरों का सम्मान

कोलकाता. साथ सूचित कर महामारी कोरोना हमारी बिरादरी बिन्नानी भाई हैं, इसलिए हम बहुत हर्ष के रहे हैं कि वैश्विक से जूझने में वो अनोखा योगदान दे रहे हमारी बिरादरी ने पहल करते हुए इस वैश्विक कोरोना महामारी में अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने पर समाजसेवियों का कोरोना कर्मवीर के रूप में सम्मान किया। इसके अंतर्गत सम्मानित 73 वर्षीय गोवर्धनदास बिन्नानी राजा बाबू बीकानेर इस वैश्विक महामारी से स्वयं के बचाव का ध्यान रखते हुए विभिन्न समाचार पत्र व पत्रिकाओं में अपने अनेक प्रकार के लेख द्वारा जनजागृति उत्पन्न करते रहे हैं। युवा डॉक्टर अभिषेक बिन्नानी बीकानेर क्षेत्र के प्रतिष्ठित पीबीएस अस्पताल के कोरोना विभाग में लॉकडाउन के शुरुआती दौर से लगातार दिन-रात अपनी जान की परवाह न करते हुए कोरोना के मरीजों की सेवा में लगे हुए हैं। चेन्नई के मोतीचंद बिन्नानी एवं कोलकाता के मदनमोहन बिन्नानी द्वारा उत्तराखंड एवं सुदूर पहाड़ी इलाकों में मास्क, सेनेटाइजर, हैंडग्लोब्स, साबुन के साथ-साथ खाद्य पदार्थों के पैकेट निःशुल्क वितरित किए जा रहे हैं। उक्त जानकारी संस्था अध्यक्ष सुशील कुमार बिन्नी ने दी।

चार वेदों का अर्थ न जानों तो कोई बात नहीं,
परंतु
समझदारी, जवाबदारी, वफादारी और ईमानदारी
ये चार शब्दों का मर्म जानों तो
जीवन सार्थक हो जाए

भारतीय त्यौहारों पर चिंतन-मनन

पश्चिम मप्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन साहित्य समिति द्वारा सामाजिक चिंतन पर एक परिचर्चा का आयोजन 'चिंतन-मनन भारतीय त्योहार का' विषय पर किया गया। दीप प्रज्वलन,महेश वंदना के साथ शुभारम्भ हुआ। स्वागत गीत के साथ स्वागत उदबोधन अध्यक्ष वीणा सोमानी ने दिया। अतिथि राष्ट्रीय प्रभारी मंजु मानधन्या ने कहा की अब जागृति आ रही है समाज एवं महिलाओं में साहित्य को जनमानस से जोड़ना ज़रूरी है। मध्यांचल के सहप्रभारी अर्चना लाहोटी ने इस अवसर पर अपने मन की बात रखते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति के 3 मूल आधार हैं धर्म, प्रकृति एवं सुदृढ़ पारिवारिक परम्परा। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गीता मूँदड़ा ने कहा कि बिना साहित्य का घर बिना खिड़की के मकान जैसा होता है,समृद्ध साहित्य आत्मविश्वास का प्रतीक होता है सकारात्मक विचार बढ़ते हैं। 16 ज़िलों से आई प्रतिनिधियों ने अलग-अलग त्योहारों को मनाए जाने का महत्व बताया। कार्यक्रम संचालन-सचिव उषा सोड़ानी एवं समिति संयोजिका पद्मा सोड़ानी ने किया।

नैत्रदान पखवाड़े का आयोजन

गुना. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा नैत्रदान पखवाड़ा मनाया गया। इसमें अपने विभिन्न आयोजनों द्वारा सभी को नेत्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके अंतर्गत समाजजनों को नेत्रदान का महत्व समझाकर इसके लिए प्रेरित किया गया।

ऑनलाइन परिचय सम्मेलन का आयोजन

इंदौर. विवाह संबंध सहयोग समिति गठबंधन ने ऑनलाइन प्रादेशिक परिचय सम्मेलन शृंखला का आयोजन किया। इसका उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्षा आशा माहेश्वरी के करकमलों से हुआ। उसके बाद लगातार 27 प्रदेशों में परिचय सम्मेलन हुआ। परिचय सम्मेलन में 1150 वीडियो दिखाए गए और कुल 4500 सदस्यों की उपस्थिति रही। परिचय सम्मेलन शृंखला में आशा माहेश्वरी, मंजू बांगड़, कल्पना गगडानी, रतनी काबरा (मां), ज्योति राठी, शैला कलंत्री, लता लाहोटी, बिमला साबू, शोभा सादानी, सुशीला काबरा, मधु बाहेती आदि मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समिति के अंतर्गत प्रादेशिक स्तर पर टॉक शो भी रखे गए जिसमें रमेश मर्दा और रमेश परतानी एवं कौशल्या रमेशचंद्र लाहोटी ने विवाह में आ रही समस्या और उसके समाधानों पर प्रकाश डाला।

इम्यूनिटी बूस्टर किट का वितरण

वरंगल. माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गत दिनों स्थानीय रक्षा वृद्धाश्रम में कोरोना महामारी से बचाव हेतु इम्यूनिटी बुस्टर किट का वितरण किया गया। महिला मंडल की मंत्री सरिता सोमाणी ने बताया कि माहेश्वरी महिला मंडल के सामाजिक कार्यों को सफलतापूर्वक संपादित करने हेतु माहेश्वरी चैरिटेबल फाउंडेशन बनाया गया। इस फाउंडेशन में सदस्यों से प्राप्त अर्थ सहयोग से गत एक वर्ष से सामाजिक कार्यों का सफलता पूर्वक संचालन किया जा रहा है। इसी क्रम में फाउंडेशन के माध्यम से महेश नवमी पर्व के उपलक्ष्य पर भीषण गर्मी के चलते लगभग 1000 राहगीरों में छाछ का वितरण किया गया। कोरोना महामारी के चलते लॉकडाउन के समय गरीबजन एवं जरूरतमंदों को राशन वितरित किया गया। कोरोना महामारी के चलते माहेश्वरी महिला चैरिटेबल फाउंडेशन द्वारा ही वृद्धजनों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु इम्युनिटी बुस्टर का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में फाउंडेशन के सदस्य माधुरी लाहोटी, चंदा सोनी, प्रेमा मूंदड़ा, अनिता सोनी, अनिता मानधनी, अंकिता मूंदड़ा, अर्चना काबरा, गीता लोया आदि का विशेष सहयोग रहा।

मोदीजी के जन्मदिवस पर भेंट

इंदौर. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस की पूर्व संध्या पर संस्था आनंद गोष्ठी और ग्लोबल इंडियन फाउंडेशन द्वारा मनाए जा रहे प्रधानमंत्री कोविड स्वास्थ्य सुरक्षा सप्ताह में पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन को संस्था के काढ़ा और एनर्जी ड्रिंक संरक्षक गोविंद मालू ने भेंटकर इंदौरवासियों की शुभकामनाएं प्रधानमंत्री मोदी तक पहुंचाने का आग्रह किया। इसके अंतर्गत सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल और अन्य अस्पतालों तथा बच्चों में भी पेय का वितरण किया गया।

स्वतंत्रता दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

हावड़ा. (कोलकाता). माहेश्वरी सभा, महिला संगठन व युवा मंच के तत्वावधान में स्वाधीनता दिवस के शुभ अवसर पर मां तुझे प्रणाम सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सुबह 10 बजे कार्यालय के नीचे झंडावंदन किया गया। इसमें नंदकिशोर लखोटिया, बेनीगोपाल जाजू, अशोककुमार भट्टड़, सूरज बागड़ी, राजीव लखोटिया, अलकेश बजाज, अनिल लाखोटिया, घनश्याम बागड़ी, ज्ञानेश्वर सोमानी आदि उपस्थित थे। दोपहर 2 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम जूम एप के माध्यम से संचालित हुआ। कार्यक्रम का संचालन सीमा भट्टड़ ने किया। महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री संदीप काबरा एवं युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या आदि ने भी उपस्थित होकर अपने उद्बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन गणेश बागड़ी द्वारा किया गया। आभार सभा मंत्री अशोक भट्टड़ ने माना।

भारी भरकम व्यक्तित्व वाले लोग सफलता पर ध्यान नहीं देते वो ध्यान केन्द्रित करते हैं कि कहीं सफलता उनका ध्यान अपने लक्ष्य से न हटा लें सफलता उन्हें अधिक सतर्क बना देती है

'किचन की रानी' स्पर्धा संपन्न

नागपुर. त्रिनयन माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 'किचन की रानी भुट्टा स्पेशल' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें नागपुर के अलावा भी अलग-अलग राज्यों से सदस्याओं ने बड़े उत्साह से मीठी नमकीन चटपटी रेसिपी बनाकर भेजी। उसमें निर्णायक विविधा क्लासेस की संचालिका पूनम राठी भी थीं। इसमें प्रथम पुरस्कार गरिमा लद्दड़ नागपर, द्वितीय आकांक्षा गोदानी सोलापुर, तृतीय पुरस्कार अशीता भैया ब्रह्मपुरी, चतुर्थ पुरस्कार कोमल सांवल नागपुर को मिला। इसके अलावा भी सभी प्रतिस्पर्धियों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। मंडल अध्यक्ष किरण राठी, सचिव रेखा राठी तथा प्रोजेक्ट प्रमुख मंगला भूतड़ा, निर्मला सारडा, शोभा नबीरा आदि का पूर्ण सहयोग रहा। उक्त जानकारी प्रचार मंत्री निर्मला सारडा ने दी।

टैलेंट बुक में राठी

अमरावती (महा.). जवाहर कर्मचारी पत संस्था के संस्थापक, माहेश्वरी आधार समिति के सचिव, राठी मूक-बधिर विद्यालय एवं माहेश्वरी वरिष्ठ नागरिक सभा के निवर्तमान सचिव एवं जिला माहेश्वरी संगठन के निवर्तमान उपाध्यक्ष 75 वर्षीय बंकटलाल राठी का नाम रडियंट टैलेंट बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। आपको समाज के जरूरतमंद, वृद्धजन, विधवा महिलाओं व मूक-बधिर की विगत 40 वर्षों से निःस्वार्थ सेवार्थ सेवा कार्यों के लिए सम्मानित किया गया।

सेवा सहयोग चैरिटेबल ट्रस्ट गठित

सूरत. सूरत जिला माहेश्वरी सभा ने इस सत्र में माहेश्वरी सेवा सहयोग चैरिटेबल ट्रस्ट सूरत नाम से एक ट्रस्ट का गठन किया है। जिला सभा के प्रचार-प्रसार मंत्री जय शारदा ने बताया कि समाजबंधु अपनी खुशी, विवाह शादी, धार्मिक समारोह, तीर्थयात्रा जैसे किसी भी अवसर पर कुछ सहयोग राशि इस ट्रस्ट को समर्पित कर सकते हैं। इस राशि का उपयोग समाज के परिवारों को शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, कन्यादान, आकस्मिक समय में आई आपदा आदि में सहयोग करने में किया जाएगा। राशि कुछ भी हो सकती है, कोई बंधन नहीं है। आप जिला सभा में रखे बॉक्स में गुप्त दान भी कर सकते हैं। पैसा जमा कराकर रसीद भी प्राप्त कर सकते हैं। राशि ज्यादा हो तो चेक से भी जमा करा सकते हैं अथवा सीधे अकाउंट में भी जमा की जा सकती है। इस ट्रस्ट की 80जी की एप्लीकेशन भी प्रोसेस में है।

जाजू निबंध स्पर्धा में विजेता

वर्धा. स्नातक मतदार संघ नागपुर के विधायक द्वारा संचालित संस्था ग्रीन अर्थ आर्गेनाइजेशन द्वारा गोंदिया, भंडारा, नागपुर, वर्धा, चंद्रपुर एवं गढ़चिरोली के नागरिकों के लिए विविध स्पर्धा का आयोजन किया गया था। इन्हीं में से एक निबंध स्पर्धा में रोटरी क्लब गांधी सिटी वर्धा के जनसंपर्क अधिकारी तथा माहेश्वरी मंडल वर्धा के समन्वयक राजकुमार जाजू विजयी हुए। इसी प्रकार इसी तरह विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन द्वारा महेश नवमी पर प्रदेशस्तरीय निबंध स्पर्धा 'संस्कारों की पुनर्स्थापना' विषय पर आयोजित की गई। इसमें भी श्री जाजू को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

कृष्णा ने उत्तीर्ण की कठिन परीक्षा

औरंगाबाद (सिडको). समाजसेवी डॉ. विनोदजी-डॉ. ज्योति भाला के सुपुत्र कृष्णा भाला ने एक्च्युरिल साईंस की कठिन परीक्षा महज 24 साल की उम्र में उत्तीर्ण की है। उल्लेखनीय है कि कृष्णा ने बीकॉम ऑनर्स हिंदू कॉलेज दिल्ली से करते हुए यह परीक्षा उत्तीर्ण की है। वे 3 वर्ष मुंबई में मल्टीनेशनल कंपनी में काम करने के बाद, अभी स्कॉटलैंड इंग्लैंड में ईवाय कंपनी में कार्यरत हैं।

डॉ. लोहिया को अंतरराष्ट्रीय अवॉर्ड

वर्धा. श्री नारायण आय हास्पिटल के डायरेक्टर डॉ. सोनू लोहिया को उन्नत नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए अंतरराष्ट्रीय एमएस सिग्नेचर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि डॉ. लोहिया द्वारा गरीब जरूरतमंद रोगियों के लिए मानव नेत्र स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गईं। कोविड-19 के कारण वर्चुअल सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें गोल्ड मेडल, मोमेंटो व अंतरराष्ट्रीय प्रमाणीकरण के साथ उन्हें सम्मानित किया गया। इसमें डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ आदि संस्थाओं के विश्व के कई प्रतिनिधि शामिल हुए।

ऋषभ की पुस्तक लोकार्पित

हिंगोली (महाराष्ट्र). समाजसेवी रमेश सोनी के 16 वर्षीय सुपुत्र ऋषभ द्वारा अंग्रेजी में लिखी गई प्रथम पुस्तक 'इट्स नॉट ओवर अन्टिल आय विन' का प्रकाशन श्याम प्रकाशन द्वारा किया गया। इस पुस्तक का लोकार्पण महेश मूंदड़ा, देवेश राठी, डॉ. अमर लड्ढा व दिलीप बांगड़ आदि ने किया।

सभी ईर्ष्या, घृणा करने वाले, असंतोषी, क्रोधी, सदा संदेह करने वाले और पराये आसरे जीने वाले इस छः प्रकार के मनुष्य हमेशा दुखी रहते है।

मंडोवरा के चित्रों को 6 लाख से अधिक ने देखा

बूंदी. श्री माहेश्वरी पंचायत के प्रचार मंत्री व बूंदी के प्रख्यात छायाकार नारायण मंडोवरा द्वारा अपलोड किए गए फोटो ने धूम मचा रखी है। गूगल मेप पर हाड़ौती के तीन फोटो देश-विदेश के लोगों के आकर्षण का केंद्र बन गए। इसमें शामिल हैं, गढ़ पैलेस बूंदी, रामेश्वर महादेव वाटर फाल बूंदी और कोटा का गरडिया महादेव से चंबल का नजारा। वे बूंदी के पर्यटन को विश्व के मानचित्र पर लगातार आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। पर्यटन छायाकार नारायण मंडोवरा के ऐतिहासिक व प्राकृतिक फोटो को गूगल मेप पर 6 लाख दस हजार से ज्यादा लोग देश-विदेश के देख चुके हैं। श्री मंडोवरा पिछले 2 वर्षों से गूगल मेप पर बूंदी के ऐतिहासिक व प्राकृतिक फोटो अपलोड कर रहे हैं जिन्हें बड़ी संख्या में लोग पसंद कर रहे हैं। छायाकार मंडोवरा गूगल मेप पर अब तक 1500 फोटो अपलोड कर चुके हैं। इनके द्वारा खींचे गए फोटो राजस्थान पर्यटन विभाग अपने सोशल मीडिया कैंपेन के इस्तेमाल करता है। विभाग को श्री मंडोवरा ये फोटो निःशुल्क उपलब्ध करवाते हैं। वर्तमान में छायाकार श्री मंडोवरा श्री माहेश्वरी पंचायत संस्थान के 6 वर्षों से प्रचार मंत्री हैं। समाज के लिए 15 वर्षों से कार्य कर रहे हैं। साथ ही श्री महेश क्रेडिट को ऑपरेटिव सोसायटी के सचिव भी हैं।

अक्षित बने स्कूल के कैप्टन

जोधपुर. निबासी समाजसेवी ओपी फोफलिया के सुपौत्र अक्षित फोफलिया को दिल्ली पब्लिक स्कूल, बैंगलुरु (दक्षिण) का स्कूल कैप्टन चुना गया है। सत्रह वर्षीय अक्षित को एक वर्चुअल कैम्पेन में ऑनलाइन वोटिंग द्वारा चुना गया। अक्षित मॉक यूनाइटेड नेशंस व स्कूल की अनेक गतिविधियों में सक्रिय है। उसने एवरेस्ट के बेस कैम्प तक की 18,000 फीट ऊंचाई का भी आरोहण किया है।

समाज के मेट्रिमोनियल पोर्टल का लोकार्पण

जोधपुर. ऑल इंडिया माहेश्वरी सेंटर फॉर एक्सीलेंस ने मेट्रीमोनियल पोर्टल बनाया है। लोकार्पण समारोह की मुख्य अतिथि सहायक कलेक्टर अपूर्वा परवाल थीं। समारोह की अध्यक्षता सुरेश राठी ने की। विशिष्ठ अतिथि सब रजिस्ट्रार मिश्रीमल झंवर थे। कार्यक्रम का संचालन इसकी संयोजक मधु समदानी ने किया। इससे पूर्व सात दिवसीय फेसबुक लाइव सेसन के समस्त वक्ताओं का बिपुल डोभाल, रुचि डोभाल, डॉ. श्वेता पारीक आदि ने स्वागत किया गया। गिरीश बंग, विजय मालपानी, योगेश बिड़ला, अशोक लोहिया चार्ली, छाया राठी, मंजू लोहिया, सुरभि काबरा कोठारी, सागर कोठारी आदि समारोह में मौजूद रहे।

पुरुषोत्तम मास में मालपुआ, जलेबी, मैसूर पाक का वितरण

हैदराबाद. संस्कार धारा हैदराबाद द्वारा पुरुषोत्तम मास में मालपुआ, जलेबी, मैसूर पाक का वितरण किया। संस्था की संस्थापिका ने कलावती जाजू ने बताया कि इस कोरोना काल में एक ही जगह महाराज जी से सारी चीजें बनवाकर उनसे ही अलका मठ, शिवराम पल्ली मंदिर, नारसिंगी गौशाला, हनुमान मंदिर, चेलापुरा बालाजी मंदिर आदि स्थानों पर बंटवाए गए। संस्था की अध्यक्षा श्यामा नावंदर व मंत्री अंजना अट्टल ने बताया कि पुष्पा दम्मानी, रेखा डागा, सुमन बजाज, वंदना राठी, सोनिया बियानी, सीमा इनानी, मंजू लाहोटी, शकुंतला चोकड़ा, सूर्यकांता इनानी, उमा साराडा, मोहिनी बंग, बृजकांता आसावा, रामेश्वरीबाई लड्ढा, गीताबाई सोनी आदि ने इसमें अपना सहयोग दिया।

अंधेरे में जब हम दीया हाथ में लेकर चलते हैं तो हमें यह भ्रम रहता है कि हम दीये को लेकर चल रहे हैं। जबकि सच्चाई एकदम उल्टी है दीया हमें लेकर चल रहा होता है

हिन्दी दिवस का हुआ आयोजन

कलबुर्गी. कर्नाटक गोवा प्रदेश माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में बीदर कलबुर्गी जिला संयुक्त माहेश्वरी सभा द्वारा 14 सितंबर को जूम एप हिन्दी दिवस उत्सव (हिन्दी दिवस प्रचार समारोह) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के सभापति श्याम सोनी एवं बीदर कलबुर्गी संयुक्त जिलाध्यक्ष नथमल कलंत्री थे। कर्नाटका प्रदेशाध्यक्ष ब्रजमोहन भूतड़ा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। दीपक बलदवा (परिजयोजना अध्यक्ष) ने देश, समाज, जीवन में हिन्दी का महत्व एवम योगदान के बारे में बताया। हरिमोहन बांगड़, अध्यक्ष बंगड़ मेडिकल वेलफेर सोसाइटी, रमेश मर्दा प्रेरक एवं सामाजिक मुख्य वक्ता मुंबई, धीरज राठी इंटरनेशनल वक्ता- अंतर्राष्ट्रीय माहेश्वरी समन्वयक, अरुण मूंदड़ा इंटरनेशनल जयकिशन सारड़ा नेपाल, आदि ने विचार रखे। अजय काबरा, संगठन मंत्री (अभामाम सभा), प्रकाशचंद्र बाहेती, खंडवा (अभामाम सभा) आदि कई गणमान्यजन इसमें ऑनलाइन शामिल थे।

शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन

जयपुर. दी एज्यूकेशन कमेटी ऑफ दी माहेश्वरी समाज (सोसायटी), जयपुर द्वारा गत 5 सितंबर को माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर प्रांगण में शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सोसायटी द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं के प्रथम श्रेणी में विजय लक्ष्मी (हिन्दी), रघुनाथ शेखावत (अंग्रेजी), अर्चना भार्गव (सामान्य विज्ञान) व द्वितीय श्रेणी में सुजीत शर्मा आदि शिक्षकों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डीपी सारडा थे। प्रदीप बाहेती ने भी शिक्षकों के महत्व पर प्रकाश डाला।

माहेश्वरी बने एसआईटी चीफ

भोपाल. आईपीएस विपिन माहेश्वरी प्रदेश के एसआईटी चीफ बनाए गए हैं। इस उपलब्धि पर समाज व स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया है। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार ने भी इस उपलब्धि पर श्री माहेश्वरी को शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

महिला संगठन की कार्यकारिणी गठित

छिंदवाड़ा. स्थानीय महिला संगठन के चुनाव गत दिनों संपन्न हुए। इसमें अध्यक्ष विमला राठी, सचिव छाया गांधी, कोषाध्यक्ष उषा राठी, सहकोषाध्यक्ष रीता राठी, उपाध्यक्ष लता चांडक, सहउपाध्यक्ष संगीता राठी, सहसचिव अरुणा राठी, प्रचार प्रसार मंत्री माधुरी माहेश्वरी, संगठन मंत्री कंचन पोरवाल, नीलू राठी व सुचिता राठी चुनी गईं। इसी प्रकार सांस्कृतिक मंत्री ब्रजलता राठी, वंदना चांडक व शशि जाखोटिया, खेलकूद मंत्री वर्षा राठी, हर्षा राठी तथा वरिष्ठ सलाहकार उषा डागा, कल्पना भैया व रेणु चांडक चुनी गईं। कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव भी किया गया।

रामनाम कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद. स्वाध्याय एवं अध्यात्म समिति के अंतर्गत, माहेश्वरी सखी संगठन अहमदाबाद ने बत दिनों रामनाम कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में करीब 125 सखियां और अन्य 55 माहेश्वरी सखियों ने भाग लिया। इसमें बच्चों ने भी कला का प्रदर्शन किया। कार्यशाला संगठन सदस्या सीमा मोदानी के मार्गदर्शन में हुई। सखियों ने सुंदर राम नाम की कलाकृतियों को लगातार भेजते हुए उमंग, उत्साह व उल्लास का परिचय दिया। इसी तरह निरंतर प्रयास से माहेश्वरी सखी संगठन ने पुरुषोत्तम मास में राम नाम जाप की माला का मानसिक व लिखित लाभ लिया। उक्त जानकारी नीलिमा मालू अध्यक्ष, दीपा धूत सचिव व रक्षा मणियार कोषाध्यक्ष ने दी।

यूसीमास में निशी को तृतीय रैंक

नागदा. निशी जया राठी को नागदा जंक्शन में यूसीमास में पूरे मध्यप्रदेश में थर्ड रैंक मिली। निशी की इस उपलब्धि पर माहेश्वरी समाज और स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया है।

दुनिया के चार स्थान कभी नहीं भरते हैं
समुद्र, श्मशान,
तृष्णा का गड्ढा और
मनुष्य का मन

दिल्ली प्रदेश में रही त्योहारों की धूम

दिल्ली. सावन भादौ के बरसते मास में अध्यक्ष श्यामा भांगड़िया के नेतृत्व में दिल्ली प्रदेश के सभी क्षेत्र कृष्ण भक्ति, स्वाधीन भारत की शक्ति आदि की धूम में आनंदित होते रहे। जन्माष्टमी का आयोजन लाला के लिए फलाहारी भोजन की प्रतियोगिता से हुआ। इसमें एक से बढ़कर एक नंद नंदन का जान करते प्रेम के रस से पके फलाहारी भोजन तैयार करते हुए वीडियोस मिले। कृष्ण पर आधारित तंबोला भी खेला गया। 22 जुलाई के दिन आयोजित फैशन शो का आयोजन तीन श्रेणियों में हुआ। कार्यक्रम का संचालन सचिव प्रभा जाजू, समिति संयोजिका सपना कोठारी, सहसंयोजिएं श्रीप्रिया थिरानी, इंदु माहेश्वरी ने किया। 24 जुलाई के दिन विवाह योग्य युवक-युवतियों का ऑनलाइन परिचय सम्मेलन आयोजित था। जिसमें 61 प्रतिभागियों ने स्वयं का परिचय दिया। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री मधु बाहेती, विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उत्तरांचल किरण लढ़ा व रा. समिति प्रभारी शर्मिला राठी, शशि नेवर आदि थे। आयोजन का संचालन सचिव प्रभा जाजू, समिति संयोजिका छाया मूंधड़ा, सहसंयोजिका उषा कालानी आदि ने किया।

श्री विक्रमादित्य पंचांग का हुआ विमोचन

डेढ़ वर्षीय विवाह मुहूर्त के साथ कार्तिकादि पंचांग प्रकाशित

उज्जैन। प्रतिष्ठित ऋषिमुनि प्रकाशन समूह द्वारा गत 23 वर्षों से सतत प्रकाशित 24वें संस्करण श्री विक्रमादित्य पंचांग (कार्तिकादि) के नवीन विक्रम संवत 2077-78 के पंचांग का गत दिवस विमोचन हुआ। इसमें इस बार एक वर्ष के स्थान पर डेढ़ वर्षीय विवाह मुहूर्त दिये गये हैं। यह पंचांग आम पाठकों के बीच घर का पंडित के रूप में लोकप्रिय है।

श्री विक्रमादित्य पंचांग के इस नवीन अंक का विमोचन गत दिवस पूर्व आईजी तथा सदस्य राज्य लोक सेवा आयोग मध्यप्रदेश व ज्योतिर्विद डॉ. रमणसिंह सिकरवार के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर अतिथि के रूप में अक्षरविश्व सम्पादक सुनील जैन, रेडियो दस्तक के प्रमुख संदीप कुलश्रेष्ठ, वेब पत्रिका हिंदी मीडिया के सम्पादक चंद्रकांत जोशी, ख्यात चित्रकार अक्षय आमेरिया, समाजसेवी कैलाश डागा एवं मुनि बाहेती आदि गणमान्यजन उपस्थित थे। अतिथि स्वागत ऋषि प्रकाशन के प्रकाशक पुष्कर बाहेती ने किया। इस अवसर पर श्री बाहेती ने पंचांग की विशेषताओं के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि ऋषिमुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित श्री विक्रमादित्य पंचांग की गणना कार्तिक मास से ग्रहलाघवीय पद्धति से की जाती है। अपनी उत्कृष्ट गणना के कारण यह न सिर्फ मालवांचल बल्कि प्रदेश व देशभर में ज्योतिर्विदों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। इसमें न सिर्फ डेढ़ वर्ष के विवाह मुहूर्त अपितु और भी कई आवश्यक मुहूर्त इस तररह स्पष्ट किये गये हैं, जिससे आम व्यक्ति भी स्वयं अपने स्तर पर इससे मुहूर्त निकाल सकते हैं। ग्रह, लग्न, तिथि, नक्षत्र आदि समस्त गणनाऐं भी अत्यंत स्पष्ट होने से यह ज्योतिर्विदों के लिये भी उपयोग में अत्यंत सहज है। यही कारण है कि इस पंचांग को 'घर का पंडित' कहा जाता है। हमें विश्वास है कि यह पंचांग न सिर्फ ज्योतिर्विदों बल्कि आम पाठकों की आवश्यकताओं पर भी खरा उतरेगा।

अनन्या साबू को 96.4 %

जयपुर (राजस्थान). समाज सदस्य अमितकुमार-अनुपमा साबू की सुपुत्री अनन्या ने सीबीएसई दसवीं की परीक्षा 96.4 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। सर्वाधिक अंक गणित और इंग्लिश में प्राप्त किए हैं।

रीत को 96%

सिलीगुड़ी. समाज सदस्य संदीप व सोना करनानी की सुपुत्री रीत करनानी ने आईसीएसई दसवीं की परीक्षा 96 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। इस पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया है।

पार्थ को 90 %

अमरावती. समाज सदस्य विनोद-राधिका लखोटिया के सुपुत्र पार्थ ने सीबीएसई की कक्षा दसवीं की परीक्षा 90 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है। सर्वाधिक अंक सोशल साइंस में प्राप्त किए हैं।

प्रांजल को 95 %

मुंबई. समाज सदस्य मोहन-सुलोचना राठी की सुपुत्री प्रांजल ने आईसीएससी की कक्षा 10 वीं की परीक्षा 95 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। सर्वाधिक अंक हिंदी व इतिहास विषय में प्राप्त किए हैं।

कल्पेशकुमार को 94 %

जोधपुर (राज.). समाज सदस्य जयंतीलाल-सुशीलाबेन माहेश्वरी के सुपुत्र कल्पेशकुमार माहेश्वरी ने सीबीएसई 12वीं की परीक्षा 94 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। सर्वाधिक अंक इकोनामिक्स विषय में प्राप्त किए हैं।

सौमिल को 84 %

अहमदाबाद. समाज सदस्य समीर व प्रीति माहेश्वरी के सुपुत्र सौमिल ने आईसीएसई 12वीं की परीक्षा 84 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। इसमें गणित विषय में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

जिस समय से हमारा मन अपने और दूसरों के लिए अच्छा सोचना प्रारंभ कर देता है शांति उसी समय से हमारे जीवन में प्रविष्ट हो जाती है

मिलिश मेडिकल में चयनित

गांधीनगर (गुज.). समाज सदस्य राजेश-शालिनी ईनानी की सुपुत्र मिलिशा ने नीट मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट (अंडर यूजी) में 10534वीं रैंक के साथ उत्तीर्ण की है। उन्हें शासकीय मेडिकल कॉलेज वडोदरा में प्रवेश भी प्राप्त हुआ है।

श्री रामनारायण ईनानी

उज्जैन। रेलवे में मुख्य टिकट निरीक्षक के पद पर कार्य कर रहे समाज सदस्य श्री रामनारायण ईनानी का गत 8 सितम्बर को चिकित्सा के दौरान देहावसान हो गया। आप अपने पीछे दो पुत्र व पत्नी सहित शोकाकुल परिवार छोड़ गये हैं। अपने मिलनसार व सहज स्वभाव से समाज के बीच विशिष्ट पहचान रखने वाले श्री ईनानी उज्जैन जिला माहेश्वरी सभा की ओर से प्रादेशिक संगठन के कार्यसमिति सदस्य थे। उज्जयिनी सेवा समिति सहित कई समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से श्री ईनानी अपनी सेवा देते रहे थे। आपके देहावसान से समाज में शोक की लहर फैल गई।

श्री अशोक माहेश्वरी

उज्जैन. वरिष्ठ समाजसेवी अशोक माहेश्वरी का गत 28 अगस्त को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे पुत्र केतन, हेमंत, हरीश माहेश्वरी (मंडोवरा) आदि का भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गए हैं।

श्री मोहनकिशोर बाहेती

खंडवा. समाज सदस्य आशीष बाहेती के पिता श्री मोहनकिशोर बाहेती (डांडेली वाले) का देहावसान गत 06 सितंबर 2020 को हो गया। आप अपने पीछे पौत्र-पौत्री आदि का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री सोहनलाल गट्टाणी

बीकानेर. राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष वरिष्ठ समाजसेवी श्री सोहनलाल गट्टानी का गत 3 सितंबर को दिल्ली में देहावसान हो गया। श्री गट्टानी के देहावसान पर संस्था श्रीकृष्ण माहेश्वरी मंडल, महिला मंडल सहित समाज के विभिन्न संगठनों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री मोतीलाल तोषनीवाल

मदनगंज किशनगढ़ (राज.). पूर्व सहायक आयकर आयुक्त श्री मोतीलाल तोषनीवाल (लोहरवाड़ा वाले) का 92 वर्ष की आयु में गत 9 अगस्त 2020 को देवलोकगमन हो गया। आप अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर (राजस्थान) के प्रथम प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य व प्रथम वित्त समिति के अध्यक्ष थे। तत्पश्चात आप सेवा सदन के आजीवन संरक्षक सदस्य मनोनीत किए गए। आपने श्री तोषनीवाल चेरिटबल ट्रस्ट की स्थापना भी की, जिसके द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु छात्रवृत्तियां तथा पाठ्य सामग्री प्रदान की जाती है। अब तक तकरीबन 10 हजार विद्यार्थियों को ट्रस्ट द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जा चुकी है। ज्ञान मंदिर किशनगढ़ के भी आप संरक्षक सदस्य थे। आपको सामाजिक धार्मिक संस्थाओं ने समाजसेवा व निष्काम आध्यात्म सेवा के लिए अनेक बार सम्मानित किया था। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री गणेशदास सादानी

कोलकाता. समाज सदस्य नंदकिशोर सादानी के पिता श्री गणेशदास सादानी का गत 10 सितंबर को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे भाई, पुत्रों, पुत्री, पौत्र-पौत्री व नाती-नातिन का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

इंदरलाल छापरवाल

राजसमंद। मेवाड़ के कर्मठ समाजसेवी जिला सभा के संस्थापक एवं वर्तमान जिला संरक्षक, अ.भा. माहेश्वरी सेवासदन के पूर्व कार्यकारिणी सदस्य उच्च शिक्षाविद् समाजसेवी, व्यक्तित्व के धनी श्री इंदरलाल छापरवाल का गत दिनों देवलोक हो गया। आप अपने भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

ज्वेलरी प्रोडक्ट की डिस्ट्रीब्यूटरशीप शहर स्तर पर देना है
इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें
महाकाली सिल्वर एण्ड गोल्ड प्रा.लि.
कोल्हापुर (महा.)
संपर्क- **निलेश डांगरा, मो.98223-70069**
सी-5, सिल्वर झोन, कागल हातकंगले फाईव स्टार, MIDC कोल्हापुर (महा.)
E-mail-orders.mahakalijewellers@gmail.com

www.rathi.com

ANANDRATHI

Call us on 1800 200 1002 / 1800 121 1003 or log on to www.rathi.com

Anand Rathi Share & Stock Brokers Ltd. / AnandRathi Advisors Ltd.
Regd. Office: Express Zone, A Wing, 9th Floor, Western Express Highway, Opposite Oberoi Mall, Goregaon (E). Mumbai - 400063. India. Tel: 022 6281 7000
BSE (Mem.ID.949) CM: INB011371557 FO: INF010676931 BSE CD: Exchange Regn. | NSE (Mem.ID.06769) CM: INB230676935 FO: INF230676935 CD: INE230676935 | MSE (Mem.ID.1014) CM: INB260676938 FO: INF260676938 CD: INE260676935 | DP- NSDL: IN-DP-NSDL-149-2000, CDSL: IN-DP-CDSL-04-99. | Research Analyst - INH000000834 | MCX: MCX/TCM/CORP/0525 Mem.ID.: ITCM8500 | NCDEX: NCDEX/TCM/CORP/0178 Mem.No.: TCM00147 | NCDEX SPOT: NCDEXSPOT/043/CO/08/10050 Mem.No.: 10050 | PMS: INP000000282 | MBD-INM000010478 | Investment Adviser: INA000000268 | AMFI: ARN-4478 is Registered under "Anand Rathi Share & Stock Brokers Ltd." | ARN-100284 is Registered under "AR Wealth Management Pvt. Ltd." | ARN-111569 is Registered under "AR Venture Fund management Pvt. Ltd." --We are a distributor of Mutual Fund. Anand Rathi Global Finance Limited is registered as NBFC Regn. No.: B-13.01682. Insurance is registered under "Anand Rathi Insurance Brokers Ltd." License No. 175. PMS registered under Anand Rathi Advisors Ltd. Insurance Products are distributed under Anand Rathi Insurance Brokers Ltd. PMS, PAS & Wealth Management are not offered in commodities segment. Commodities is registered under Anand Rathi Commodities Ltd. | *Anand Rathi Wealth Services Limited.

Disclaimer: Investment in securities market are subject to market risks, read all the related documents carefully before investing. Investments in Mutual Fund are subject to market risk, read all the related documents carefully before investing.

केबल उद्योग के इतिहास पुरुष

श्रीगोपाल काबरा

विद्युत केबल ही नहीं बल्कि विभिन्न विद्युत उपकरणों तथा कार पार्किंग सिस्टम के निर्माण में वर्तमान में उद्योग समूह 'आरआर ग्लोबल' एक अत्यंत प्रतिष्ठित नाम है। 62 वर्षीय श्रीगोपाल काबरा न सिर्फ एमडी तथा प्रेसिडेंट के रूप में उद्योग समूह का नेतृत्व कर रहे हैं बल्कि उनकी प्रतिष्ठा उद्योग जगत में एक पथ प्रदर्शक के रूप में भी है। आपको ही धुंआ रहित जीरो हेलोजन केबल्स सर्वप्रथम पेश करने का श्रेय भी दिया जाता है।

उद्योग जगत में श्रीगोपाल काबरा एक अत्यंत प्रतिष्ठित नाम है। कारण है उनकी असंभव से लगने वाले कार्य को भी संभव बना देने की क्षमता व कार्यकुशलता। यही कारण है कि वर्तमान में उद्योग जगत में आप न सिर्फ एक शीर्ष व वैश्विक उद्यमी के रूप में जाने जाते हैं, अपितु आपकी प्रतिष्ठा उद्योग जगत के एक पथ प्रदर्शक (ट्रेंड सेटर) के रूप में भी है। अपने पारिवारिक उद्योग आर. आर. ग्लोबल को आपने एक ऐसा वट वृक्ष बना दिया है, जो अब 'कार पार्किंग सिस्टम निर्माण' तथा केबल की जगह उपयोग होने वाले बसडक्ट का निर्माण भी दुबई स्थित अपने उद्योग में कर रहा है। आर.आर. ग्लोबल इसलिए नाम दिया गया क्योंकि ग्रुप के उत्पादकों को वैश्विक स्तर पर पहचान, विश्वसनीयता एवं प्रतिष्ठा है। इन दोनों नवीन उद्यमों को वर्तमान में यूके से एमबीए (बिजनेस इकॉनॉमिक्स) व मास्टर आफ मैन्युफैक्चरिंग की उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त उनके पुत्र मुंबई निवासी राजेश काबरा संभाल रहे हैं।

सुसंस्कृत उद्यमी परिवार में जन्म

श्री काबरा की विशिष्ट प्रतिभा तथा सफलता का कारण वास्तव में सुसंस्कृत उद्यमी परिवार में उनका जन्म है। आपका जन्म 29 अक्टूबर 1958 को विराटनगर (नेपाल) में ख्यात उद्यमी व समाजसेवी पद्मश्री रामेश्वरलाल काबरा तथा समाज में मां के रूप में अपनी प्रतिष्ठा रखने वाली ख्यात वरिष्ठ समाजसेवी श्रीमती रत्नीदेवी काबरा के यहां हुआ था। स्कूली शिक्षा का प्रारम्भ इंदौर में हुआ। प्रथम कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर ग्रीष्मकालीन कक्षा द्वारा उन्हें सीधे तृतीय कक्षा में प्रमोट कर दिया गया। इससे आगे की वर्ष 1966 से शिक्षा मुंबई में हुई। श्री काबरा व्यावसायिक जिम्मेदारियों के कारण मैट्रिक से आगे शिक्षा प्राप्त न कर पाये। मात्र 15 वर्ष की अवस्था में ही आपने अपना पारिवारिक व्यवसाय सम्भाल लिया और 24 मई 1981 को हुबली (कर्नाटक) की कीर्ति बाहेती के साथ परिणय सूत्र में बंध गये। आपको उद्योग-व्यवसाय के प्रारम्भिक सूत्र अपने परिवार से बचपन में ही संस्कारों के रूप में प्राप्त हो

गये थे, जो आपकी सबसे बड़ी शक्ति बने। वर्तमान में आपके परिवार में 2 विवाहित पुत्री तथा एक पुत्र शामिल हैं।

नवीन तकनीक में उद्योग सबसे आगे

श्री काबरा का मूल-मंत्र-हमेशा सही लोगों का चयन और सही उत्पादों को सही समय पर बाजार में लाने का रहा है। एक सशक्त सिद्धांत, व्यापारिक दृष्टिकोण को लेकर समूह को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक ले जाने की क्षमता के साथ सन् 1991 में समूह राम रत्ना इंटरनेशनल की स्थापना की, जो तीन दशक से कम अवधि में 6 महाद्वीपों के 85 देशों में बखूबी उत्पाद निर्यात कर अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

श्री काबरा की धर्मपत्नी श्रीमती कीर्ति काबरा, आर.आर.ग्लोबल के ब्रॉडिंग, कम्यूनिकेशन, एडव्हरटाइजिंग, डिजाइनिंग, प्रमोशन, इवेंट मेनेजमेंट आदि कार्यों को देश ही नहीं पूरे विश्वस्तर पर अपनी कुशाग्र बुद्धि-कौशल से बखुबी संभाल रही हैं। श्री काबरा तीन भाइयों में सबसे छोटे हैं, लेकिन उन्हें केबल उद्योग में यूनिले कोर टेक्नोलॉजी (यूसीटी) के साथ धुआं रहित जीरो हेलोजन केबल्स पेश करने वाले सर्वप्रथम व्यक्ति होने का श्रेय दिया जाता है। यह एक अनूठा उत्पाद है जो वास्तव में अग्निरोधक और सुरक्षा मानकों को बढ़ाने में एक क्रांति जैसा है, जिसने राम रत्ना समूह को इस ऊंचाई तक पहुंचाने में मदद की है। आप आरआर ग्लोबल के मैनेजिंग डायरेक्टर एवं प्रेसिडेंट हैं। 850 मिलियन अमरीकी डालर वाला यह विविध उद्योग समूह मुख्य रूप से बुनियादी ढांचे (इंफ्रास्ट्रक्चर) और विद्युत समाधानों पर केंद्रित होकर कार्य कर रहा है। एक कदम आगे बढ़ते हुए भारत में पार्किंग समस्या को मद्देनजर रखते हुए अपनी दूरगामी सोच से सन 2000 में मेकेनाइज्ड मल्टी लेवल ऑटोमेटेड कार पार्किंग सिस्टम्स सर्वप्रथम भारत में लाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

सभी के मार्गदर्शन में भी आगे

अपने उद्योग-व्यवसाय को एक ऊंचाई तक ले जाने और उसको एक वैश्विक ब्रांड बनाने के साथ, श्री काबरा इंटरनेशनल कॉपर एलायंस (वायर एंड केबल डिवीजन) के चेयरमैन एवं सार्क चैम्बर ऑफ कॉमर्स के कार्यकारी मंडल सदस्य भी हैं। साथ ही आप उच्चतम कार्यक्षमता के कारण इंडियन इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के प्रेसिडेंट भी रहे हैं। इसके साथ ही आपके कंधे पर चौदह वर्षों तक वायडिंग वायर्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के चेयरमैन की जिम्मेदारी रही है। व्यवसायी के रूप में सफलता, सामाजिक विकास एवं जिम्मेदारी पर अपना ध्यान केंद्रित करने के अतिरिक्त श्री काबरा, भारत तथा विश्व भर में विभिन्न प्रकार के आयोजनों एवं वेबिनारों को संबोधित करने वाले एक प्रख्यात प्रेरक वक्ता भी हैं। आपके व्याख्यान विशेष रूप से उद्योग-व्यवसाय में नैतिक प्रथाओं, महत्वों तथा उपभोक्ता के लिए उच्चतम सुरक्षा मानकों सहित उत्पादों के लिए प्रत्येक ब्रांड की जिम्मेदारी आदि जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आपका मंतव्य है-जिस ब्रांड के हिस्से में उनकी

संस्कृति के अनुरूप मूल्य हैं वह लंबे समय में सफल होने वाले हैं। आप एक सफल दूरगामी सोच के उद्योग-व्यापार विश्लेषक भी हैं। आयोजनों एवं वेबिनारो में विभिन्न-विभिन्न विषयों पर दिये गये उद्बोधन यू-ट्युब पर उपलब्ध है।

समाजसेवा के यज्ञ में भी आहुति

अपनी तमाम व्यस्तता के बावजूद श्री काबरा समाजसेवा के क्षेत्र में अपना योगदान देने में भी पीछे नहीं रहे हैं। माहेश्वरी प्रगति मंडल, युवा समिति के संस्थापक अध्यक्ष रहे हैं। माहेश्वरी प्रगति मंडल की व्यवस्थापिका सभा में तीन सत्र तक उपाध्यक्ष का दायित्व बखूबी निभाया। वर्तमान में माहेश्वरी प्रगति मंडल-न्यास मंडल के ट्रस्टी हैं। कॉर्पोरेट जगत के अलावा श्री काबरा पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य और शिक्षा के एक सक्रिय प्रमोटर भी हैं। आपने वनबंधु परिषद, मुंबई चैप्टर के प्रेसिडेंट के रूप में अपना विशेष योगदान दिया है। यह एक गैर सरकारी संगठन है, जो संपूर्ण भारतवर्ष के दूरदराज के क्षेत्रों में 1 लाख से अधिक एकल विद्यालयों का संचालन कर रहा है। आपके मार्गदर्शन में आरआर काबेल ब्रांड को 'मिशन रोशनी' की अवधारणा को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है। यह एक सीएसआर गतिविधि है जो राष्ट्र के दूरदराज के क्षेत्रों में महिलाओं एवं बच्चों को बिजली, शिक्षा और कौशल विकास प्रदान करने में मदद करती है। इसके लिए आप विभिन्न प्रकार की सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

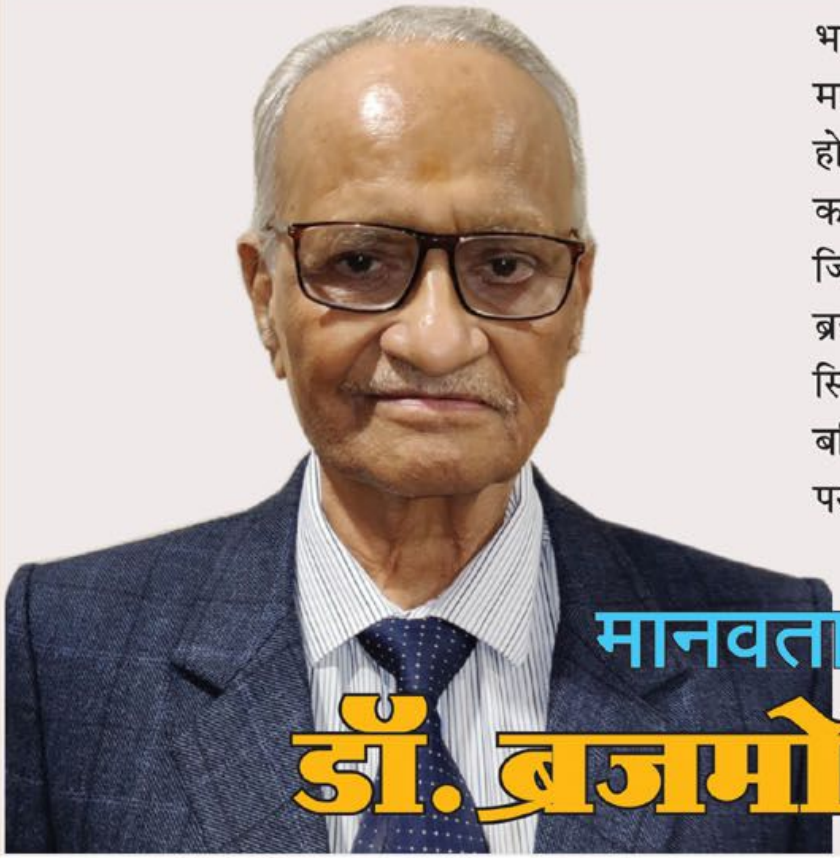

भारतीय संस्कृति में चिकित्सक को ईश्वर का रूप माना जाता है। इसमें जब नि:स्वार्थ भाव भी शामिल हो जाएं तो यह सेवा मानवता की सच्ची सेवा ही कही जाएगी। ऐसे ही मानवता के सेवक हैं बागली जिला देवास निवासी वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. ब्रजमोहन ईनानी जो ८० वर्ष की अवस्था में भी न सिर्फ स्वयं पीड़ित मानवता की सेवा में जुटे हुए हैं, बल्कि उनका संपूर्ण परिवार भी उनके ही पद्चिह्नों पर चलते हुए मानवता की सेवा कर रहा है।

मानवता की सेवा में समर्पित डॉ. ब्रजमोहन ईनानी

बागली जिला देवास के डॉ. ब्रजमोहन ईनानी परिवार का जिक्र आते ही क्षेत्र में हर कोई यही कहता है, 'अच्छा, वह डॉक्टर परिवार'। कारण यही है कि इस परिवार में न सिर्फ डॉ. ईनानी स्वयं ही चिकित्सक हैं, बल्कि उनके परिवार ने तो अपनी 2 और पीढ़ियों को भी मानवता की सेवा के मार्ग चिकित्सा क्षेत्र को समर्पित कर दिया है। आपके पुत्र डॉ. राम व डॉ. श्याम दोनों तो चिकित्सक हैं ही, साथ ही दोनों पुत्रवधू डॉ. अरुणा व डॉ. अनिता भी स्त्री रोग विशेषज्ञ के रूप में सेवा दे रही हैं। डॉ. राम ईनानी एमडी फिजिशियन होकर प्रतिष्ठित हृदय रोग विशेषज्ञ हैं। वहीं डॉ. श्याम ईनानी एमएस की उपाधि प्राप्त एक अत्यंत सफल सर्जन हैं। दोनों की ही इंदौर क्षेत्र के ख्यात चिकित्सकों में गणना होती है। डॉ. राम के पुत्र राघव तथा डॉ. श्याम के पुत्र ईशान भी एमबीबीएस में अध्ययनरत हैं और चिकित्सक परिवार की परंपराओं का निर्वहन करने की तैयारी कर रहे हैं। आपकी एक पौत्री गौरी 10 वीं में अध्ययनरत है।

एडवोकेट परिवार में लिया जन्म

बागली के डॉक्टर परिवार के पुरोधा डॉ. ब्रजमोहन ईनानी का जन्म 2 मई 1940 को बागली जिला देवास में ख्यात एडवोकेट स्व. श्री रामगोपाल व श्रीमती रतनबाई ईनानी के यहाँ हुआ था। मूलरूप से यह पूरा परिवार एडवोकेट परिवार ही कहलाता है। कारण है, डॉ. ईनानी के लगभग सभी भाइयों का एडवोकेट होना। डॉ. ईनानी का 6 भाइयों एवं 6 बहनों का भरा पूरा परिवार रहा है। एडवोकेट स्व. श्री सतीश ईनानी आपके बड़े भाई थे। छोटे भाई स्व. श्री ओमप्रकाश ईनानी भी एडवोकेट थे, लेकिन फिर वैष्णव स्कूल इंदौर में व्याख्याता के रूप में सेवा देने लग गए थे। छोटे भाई एडवोकेट राजेंद्र ईनानी मप्र पश्चिमांचल प्रादेशिक सभा के प्रदेशाध्यक्ष रहे तथा अभा माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मंडल सदस्य के रूप में भी सतत सेवा दे रहे हैं। छोटे भाई बसंतकुमार व दिलीप ईनानी भी एडवोकेट हैं। इतना ही नहीं भाइयों के अधिकांश पुत्र भी एडवोकेट के रूप में ही सेवा दे रहे हैं।

ऐसे बढ़ा चिकित्सा क्षेत्र की ओर रुझान

प्रख्यात एडवोकेट के परिवार में जन्म लेने के बाद चिकित्सा क्षेत्र की ओर रुझान होना वास्तव में कुछ हद तक असामान्य ही कहा जा सकता है। वास्तव में इस असामान्य स्थिति का कारण उनके बचपन की वह घटना रही जिसने उनका रुझान चिकित्सा क्षेत्र की ओर बढ़ा दिया।

जब डॉ. ईनानी मात्र 7-8 वर्ष के ही रहे होंगे तभी उनकी दोनों बहनों को बुखार आ गया। गांव में जो डॉक्टर आते थे, उनसे ही ईलाज करवाया। उन्होंने कम से कम दवा के साथ मौसम्बी का रस व पानी पिलाकर उन्हें ठीक कर दिया। डॉक्टर साहब जब आते तो परिवार उनकी सेवा में हमेशा तैयार रहता। डॉक्टर के प्रति यह विशिष्ट सम्मान देख उस अबोध उम्र में ही श्री ईनानी के मन में डॉक्टर बनने का सपना अंगड़ाई लेने लगा। 12 वर्ष की उम्र में उन्हें हाईस्कूल की पढ़ाई के लिए शहर आ जाना पड़ा। पहले तो पढ़ाई में कुछ कमजोर थे लेकिन जब लक्ष्य डॉक्टर बनना बन गया तो उनकी पढ़ाई समर्पित भाव से चलने लगी। वैष्णव विद्यालय से दसवीं उत्तीर्ण कर होल्कर कॉलेज से अच्छे अंकों से इंटरमीडिएट उत्तीर्ण किया और फिर एमजीएम मेडिकल कॉलेज, इंदौर में एमबीबीएस के लिए प्रवेश ले लिया। वर्ष 1964 में आपने अपनी एमबीबीएस की उपाधि पूर्ण की। इसी वर्ष आपका विवाह स्व. श्री छतरलाल फोफलिया इंदौर की पुत्री सुमित्रा देवी से हो गया। आमतौर पर लोग एमबीबीएस जैसी उपाधि लेने के बाद प्राइवेट प्रैक्टिस कर पैसा कमाने में जुट जाते हैं, लेकिन डॉ. ईनानी ने ऐसा न करते हुए मानवता की सेवा के लिए सरकारी नौकरी करना ही ज्यादा उचित समझा।

ऐसे चली सेवा यात्रा

डॉ. ईनानी की प्रथम पदस्थापना चिकित्सा अधिकारी के रूप में महेश्वर जिला खरगोन में हुई। मन में आगे और पढ़ने की इच्छा थी। वर्ष 1966 में शासन की ओर से एक वर्ष के लिए बच्चों की चिकित्सा में विशेष प्रशिक्षण के लिए जेजे हॉस्पिटल मुंबई पहुंचाया गया। उनके मन में बाल रोग में एमडी करने की इच्छा अभी भी बाकी थी। वर्ष 1969 में उनके यहाँ जुड़वा बच्चों का जन्म हुआ और इसके कुछ समय बाद ही एमडी करने के लिए अपने सपने को साकार करने का अवसर भी मिला। वर्ष 1973 में डॉ. ईनानी ने शिशु रोग में एमडी की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात आगर जिला शाजापुर में पदस्थ हुए। इसके पश्चात थांदला जिला झाबुआ, उज्जैन, श्योपुरकलां, देवास, भोपाल (गैस राहत चिकित्सालय) आदि कई स्थानों पर सेवा देते हुए वर्ष 1996 में बैतूल में मुख्य चिकित्सा अधिकारी नियुक्त हुए। लगातार 36 वर्ष तक शासकीय चिकित्सालयों में सेवा देते हुए वर्ष 2000 में मुख्य चिकित्सा अधिकारी खरगोन के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

मानवता की सेवा को बनाया लक्ष्य

वैसे तो डॉ. ईनानी अपनी सेवा भावना के कारण शासकीय सेवा में संलग्न हुए थे, लेकिन उनके साथ घटे एक वाकिये ने उनकी सेवा भावना को और भी अधिक मानवता के प्रति समर्पित कर दिया। शासकीय सेवा को प्रारंभ ही किया था कि प्रारंभिक वर्षों में ही आपके यहाँ बहुत कम वजन के जुड़वा बच्चों राम व श्याम का जन्म हुआ था। हर कोई उनके जिंदा रहने की संभावना भी कम ही बता रहा था लेकिन ईश्वर कृपा से दोनों स्वस्थ हुए और आज दोनों ही डॉक्टर हैं। इस घटना ने उनका आर्थिक लाभ के प्रति पूर्णतः मोह भंग कर दिया। उन्होंने कभी किसी रोगी से फीस की भी अपेक्षा नहीं की। 1974 में जब आगर में पदस्थ थे तब उन्होंने अपने स्तर पर क्षेत्र में बच्चों को नाममात्र के 2 रुपए शुल्क में पोलियो की दवा पिलाने की व्यवस्था की थी, जिसका आगर के आसपास क्षेत्रों में व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। उस समय शासकीय स्तर पर निःशुल्क दवा नहीं पिलाई जाती थी।

घटना जो बनी यादगार

इसी प्रकार स्वयं डॉ. ईनानी अपना एक संस्मरण सुनाते हैं कि एक एक्साइज इंस्पेक्टर की पत्नी अत्यंत गंभीर स्थिति में थी, तो उन्होंने पति से पूछे बिना उसे बोतल चढ़ा दी। बस इतने पर ही नशे में धूत पति इतना नाराज हुआ कि बंदूक लेकर ही अस्पताल जा पहुंचा। लेकिन उसके भय से भी उन्होंने उसका इलाज बंद नहीं किया। फिर अगले दिन जब उसे होश आया तो उसने पैर पड़कर माफी मांगी। इसी प्रकार बैतूल में 5 दृष्टिहीन बच्चों का एनजीओ के माध्यम से ऑपरेशन करवाय। दृष्टि प्राप्त होने के बाद उनके चेहरे पर जो प्रसन्नता के भाव नजर आए, वे आज भी श्री ईनानी के लिये अविस्मरणीय तथा अनमोल हैं। बस उनके लिए तो यही पारिश्रमिक था। वर्तमान में आप सेवानिवृत्त हैं और 80 वर्ष की ऐसी उम्र के पड़ाव पर हैं, जिसमें व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है, लेकिन डॉ. ईनानी की मानवता की सेवा की यात्रा अभी-भी जारी है। वे घर आए रोगी तो ठीक फोन पर परामर्श मांगने वालों को भी निराश नहीं करते और वह भी पूर्णतः निःस्वार्थ भाव से। उनकी इस सेवा का शुल्क यदि कोई होता है, तो वह है सिर्फ मुस्कराहट जो स्वस्थ होने के बाद रोगी के चेहरे पर दिखाई देती है।

काम से चिकित्सक मन से गांधी

महात्मा गांधी अपना सर्वस्व मानवता को समर्पित कर स्वयं मानवता के पुजारी बन गए थे। डॉ. ईनानी ने कभी गांधीवादी होने का दावा तो नहीं किया लेकिन कर्म "चिकित्सक" का रहते हुए भी मन कब 'गांधी' बन गया यह उन्हें भी पता न चला। यह अनके मन का गांधी होने का परिचायक ही तो कहा जाएगा कि गांधीजी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिए, जो पीर पराई जाने रे' आपको भी अत्यंत प्रिय है। आप भी इसे अक्सर गुनगुनाते रहते हैं। इसी प्रकार मीराबाई का भजन 'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो' भी आपको अत्यंत प्रिय है। इसका कारण भी सांसारिक धन की अपेक्षा ईश्वर को महत्व देना तो है ही। इसके साथ ही इसका दूसरा कारण इसका अपने पिता-माता का नाम क्रमशः रामरतन का राम तथा रतनी देवी का रतन शब्द का समाहित होना भी है।

समाजसेवी के 'हमसफर'

पुंगलिया दंपत्ति

बालोतरा (राजस्थान) निवास जगदीशप्रसाद व उषादेवी पुंगलिया ऐसे जीवन साथी हैं, जिन्होंने जीवन के हर मोड़ पर हमसफर की तरह मिलकर यात्रा की। दोनों की आदर्श दिनचर्या यदि मिसाल है, तो समाजसेवा भी। यह आश्चर्यजनक ही कहा जा सकता है कि दोनों एक ही समय लगातार 10 वर्षों तक समाज संगठन में अध्यक्ष रहे। एक ने माहेश्वरी समाज की बागडोर संभाली तो दूसरे ने महिला संगठन की।

जगदीश प्रसाद पुंगलिया

जगदीश प्रसाद पुंगलिया का जन्म 21 सितंबर 1950 में राजस्थान में पाकिस्तान बॉर्डर के पास पनोरिया गांव में हुआ। बचपन से ही मेधावी छात्र रहे। स्काउट में उन्हें मोरारजी देसाई, लालबहादुर शास्त्री, डॉ. भीमराव अंबेडकर, जिला कलेक्टर सहित कई गणमान्य हस्तियों द्वारा सम्मानित किया गया। सामाजिक माहौल परिवार से ही मिला। उनके पिताजी श्रीराम पुंगलिया ने 16 वर्षों तक सरपंच पद पर रहकर कर्मठता व ईमानदारी से पदभार संभाला। श्री पुंगलिया ने शहर में आकर इंजीनियरिंग की शिक्षा पूरी की लेकिन अपना व्यापार प्रारंभ किया। व्यापारी वर्ग में भी खूब प्रतिष्ठा पाई। 43 वर्ष की उम्र में समाज में 5 वर्ष के लिए सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर चुने गए। समाज में भवन निर्माण किया एवं कई सामाजिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर प्रतिष्ठा पाई। उनके कार्यों को देखते हुए समाज द्वारा उन्हें फिर 5 वर्ष के लिए अध्यक्ष पद सर्वसम्मति से सौंपा गया। इसके साथ ही लायंस क्लब में 10 वर्ष सेवाएं देकर कई सम्मानों से सम्मानित हुए। आदर्श विद्यालय में भी 8 वर्ष अध्यक्ष पद संभाल शिक्षा प्रणाली एवं तकनीकी शिक्षा में बहुत सुधार किया। गरीब बच्चों की शिक्षा मदद में सदैव आपकी सेवाएं सराहनीय रही। गौसेवा में भी आपने बहुत सी संस्थाओं में सेवाएं दीं। वर्तमान में पैतृक गांव में हर साल आई केम्प लगवाकर वहां के स्थानीय लोगों की मुफ्त जांच, चश्मे बनवाना, आंखों संबंधी कोई भी बीमारी का इलाज एवं ऑपरेशन करवाने का पूरा कार्य भार संभालते हैं। विपश्यना में अपने आपको धर्म राह में जोड़कर जीवन के सत्य से रूबरू हो अपना जीवन यापन कर रहे हैं। वर्तमान में एक पुत्र प्रवीण पुंगलिया, दो विवाहित पुत्री सीता डागा व स्वाति जैसलमेरिया सहित पौत्र-पोत्रियों तथा दोहित्र-दोहित्री का भरापूरा परिवार है।

उषादेवी पुंगलिया

मनुष्य के जीवन में सफल असफल होना उसकी सोच पर निर्भर करता है। सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत उषादेवी का जन्म महाराष्ट्र के पूना शहर में संपन्न एवं आध्यात्मिक परिवार में श्रीमूलचंद चांडक के यहां 27 नवंबर 1952 में हुआ। बचपन से ही मराठी भाषा में शिक्षा प्राप्त कर मेधावी छात्रा के रूप में अपना नाम प्रथम श्रेणी में दर्ज करवाते हुए दसवीं बोर्ड परीक्षा में गोल्ड मेडल प्राप्त कर परिवार का नाम रोशन किया। बड़े शहर में परवरिश के बाद उषादेवी का विवाह राजस्थान में छोटे से गांव में हुआ। यहां तालमेल बैठाना चुनौतीपूर्ण तो था पर सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ परिवार में अपनी जिम्मेदारी बहुत संजीदगी पूर्वक निभाते हुए अपने पारिवारिक दायित्व को बखूबी निभाया। आप समाजसेवा में सदा रुचि लेती हैं। आपकी सक्रियता को देखते हुए माहेश्वरी महिला मंडल बालोतरा ने सर्वसम्मति से 5 वर्ष के लिए अध्यक्ष चुना। महिला मंडल में कई सामाजिक सांस्कृतिक कार्य संपन्न किए। उषा देवी की विलक्षण प्रतिभा को देखते हुए पुनः 5 वर्षों के लिए सर्वसम्मति से अध्यक्ष का भार सौंपा। इसके साथ लायंस क्लब में भी अध्यक्ष पद पर रहकर कई सामाजिक कार्य किये एवं कई सम्मानों से सम्मानित हुईं। कई स्कूलों में बतौर अध्यक्ष पद पर आमंत्रित हुईं। कई स्कूलों में बच्चों की शिक्षा हेतु मदद की। आपने भी 48 वर्ष पूर्व विपश्यना साधना में अपना कदम रख दिया व अब तक करीब 50 से अधिक कोर्स कर कई स्थानों में निःशुल्क सेवाएं देती रही हैं। इसमें जोधपुर की जेल, ब्यावर, बाड़मेर, बालोतरा आदि कई जगह अपनी सेवाएं दी हैं। उनका कहना है, मैं योगा मेडिटेशन नित्य करती हूं। विपश्यना मेरे लिए टॉनिक है।

बूंदी निवासी विजेंद्र माहेश्वरी 70 वर्ष के वे युवा हैं, जिनकी सक्रियता व ऊर्जा का संपूर्ण समाज कायल है। यही कारण है कि जब बूंदी जिला सभा का अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व चयन का मौका आया तो सभी ने 70 वर्ष के इन युवा पर ही विश्वास कर उन्हें नेतृत्व सौंपने की सहमति दी।

70 वर्ष की उम्र में समाज का नेतृत्व

विजेंद्र माहेश्वरी (जाजू)

बूंदी राजस्थान के ग्राम माटूंदा में स्वर्गीय श्री भागीरथ जाजू एवं स्वर्गीय श्रीमती धनकंवर के यहां 4 सितंबर 1950 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन ख्यात वरिष्ठ समाजसेवी विजेंद्र माहेश्वरी जाजू का जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गांव में हुई। बाद में बूंदी में अध्ययन किया। सन 1969 में बीएसटीसी प्रशिक्षण प्राप्त कर 2 वर्ष तक पुश्तैनी किराना दुकान संभाली। इसी बीच स्वर्गीय जानकीदेवी सुपुत्री स्वर्गीय श्री गणेशलाल थैबड़िया गुढ़ा नाथावतान जिला बूंदी से विवाह संपन्न हुआ। सन 1971 में पास ही के गांव किशनपुरा के सरकारी प्राथमिक विद्यालय में तृतीय श्रेणी शिक्षक के पद पर नियुक्ति हुई और 40 वर्ष के सेवाकाल में उसी ग्राम के प्राथमिक विद्यालय को क्रमशः मिडिल, सैकेंडरी, सीनियर सेकेंडरी विद्यालय में क्रमोन्नत करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके साथ ही अपनी शैक्षिक योग्यता एमए हिंदी, बीएड तक बढ़ाकर प्राचार्य पद से 2011 में सेवानिवृत्त हुए। भवन विहीन उस विद्यालय में इन्होंने स्थानीय ग्रामीण सहयोग व विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से 14 कमरे, बरामदे, चारदीवारी सहित सुसज्जित भवन का निर्माण अपनी देखरेख में करवाया।

उन्नत कृषि एवं शैक्षिक कार्यों के प्रति समर्पित

सरकारी नौकरी के साथ इन्होंने पारिवारिक कृषि व्यवसाय को उन्नत किया और उन्नत तकनीक से खेती करवाकर परिवार को समृद्ध बनाने में अपना योगदान दिया। इसी के फलस्वरूप बूंदी शहर में सन 1980 में आशुतोष चावल उद्योग के नाम से एक चावल मिल की स्थापना की जिसका बाद में विस्तार किया, जो बासमती चावल के देशभर में विक्रय तथा विदेश में निर्यात हेतु उत्पादन में कार्यरत है। कृषि में उन्नत तकनीक के आधार पर सन 1989 में अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय कृषि मेला प्रगति मैदान नई दिल्ली में राजस्थान प्रदेश की ओर से भागीदारी करते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त कर रजत ट्रॉफी हासिल की। इसी प्रकार शैक्षिक क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्यों के लिए जिला प्रशासन ने आपको सम्मानित किया। जिले के साक्षरता अभियान और शिक्षक प्रशिक्षणों में इनका विशेष योगदान रहा। साथ ही मंच संचालक के रूप में भी अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की।

समाजसेवा में भी योगदान

इसी प्रकार सामाजिक क्षेत्र में भी विगत 25 वर्षों से बूंदी माहेश्वरी समाज में कार्यकर्ता के रूप में भाग लेकर सामाजिक कार्यक्रमों में विशेष सहयोग प्रदान किया। इसके फलस्वरूप श्री माहेश्वरी पंचायत बूंदी में सांस्कृतिक संयोजक के रूप में तथा बाद में विभिन्न पदों पर रहते हुए 2007 से श्री माहेश्वरी पंचायत बूंदी के सचिव नियुक्त हुए और आज निरंतर 13 वर्षों से कार्य कर रहे हैं। इन्हीं के कार्यकाल में संस्था का श्री माहेश्वरी पंचायत संस्थान के नाम से पंजीकरण हुआ और समाज उन्नयन, जनहित तथा श्री माहेश्वरी भवन में कई भौतिक विकास कार्य संपन्न हुए। इसी के साथ इन्होंने जिला माहेश्वरी सभा में विभिन्न पदों पर संयुक्त मंत्री, आयोजन मंत्री तथा प्रादेशिक सभा की कार्यकारिणी में रहकर सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसी कारण 70 वर्ष की उम्र में भी बूंदी जिले के माहेश्वरी बंधुओं ने 1 जनवरी 2020 से बूंदी जिला माहेश्वरी सभा के जिलाध्यक्ष के रूप में इनका चुनाव किया। वर्तमान में प्रदेश और अखिल भारतवर्षीय महासभा कार्यकारी मंडल सदस्य के रूप में भी श्री जाजू कार्यरत हैं। वे समाजसेवा में अनवरत रूप से अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं।अभी वर्तमान कोरोनाकाल में भी समाजजनों के सहयोग से स्थानीय स्तर पर आमजनों और प्रशासन का सहयोग किया। विनम्र, मृदु स्वभाव, अच्छे वक्ता एवं संगठनात्मक कार्य कुशलता के कारण सभी वर्गों के बीच लोकप्रिय बने हुए हैं।

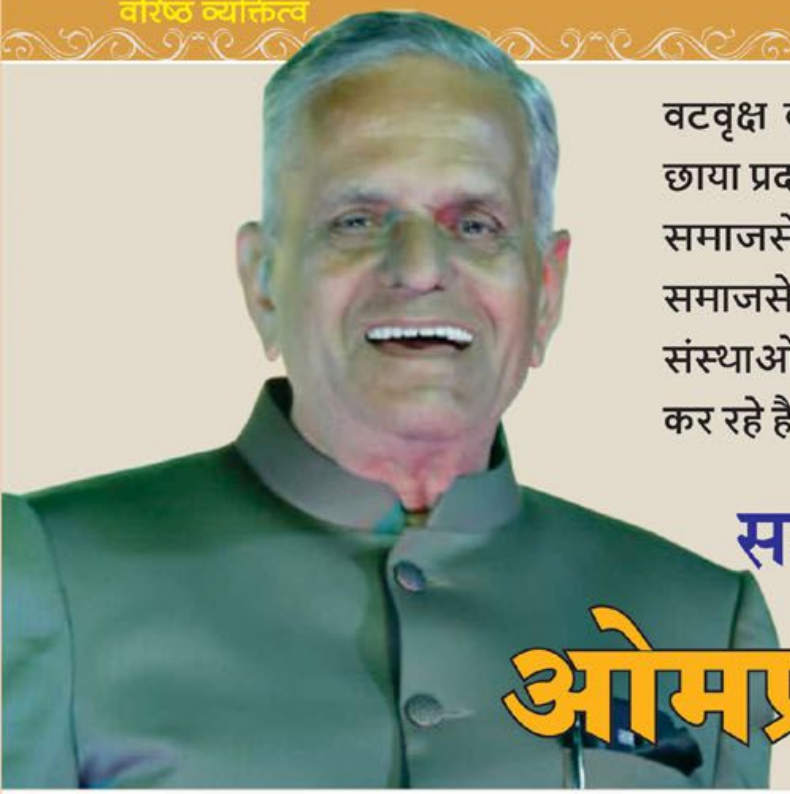

वटवृक्ष वह होता है, जो कई लोगों को अपनी शीतल छाया प्रदान कर नवजीवन देता है। तराना निवासी वरिष्ठ समाजसेवी ओमप्रकाश पलोड़ भी एक ऐसे ही समाजसेवी हैं, जो ७५ वर्ष की अवस्था में भी कई संस्थाओं के माध्यम से अपनी सेवा भावना को साकार कर रहे हैं।

समाजसेवा पथ के वटवृक्ष
ओमप्रकाश पलोड़

तराना जिला उज्जैन (मप्र) में समाज के वरिष्ठ ओमप्रकाश पलोड़ की पहचान जितनी एक सफल किराना, कृषि दवाई तथा खाद-बीज विक्रेता के रूप में है, उससे अधिक एक समाजसेवी के रूप में है। श्री पलोड़ अपनी व्यावसायिक यात्रा में अत्यंत व्यस्त रहे हैं, इसके बावजूद उनकी समाजसेवा की यात्रा भी सतत चलती रही। वर्तमान में वे समाज की भावी पीढ़ी में संस्कार स्थापित करवाने का प्रयास कर रहे हैं। श्री पलोड़ का कहना है कि आज का युवा उच्च शिक्षा ग्रहण कर अपने संस्कारों से दूर होता जा रहा है। यही कारण है कि वह जल्द ही अपने मार्ग से भटक रहा है। वास्तव में अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने के साथ-साथ उन्हें समय-समय पर अपने घर में संस्कार भी ग्रहण करवाते रहना चाहिए।

पारिवारिक व्यवसाय को बनाया कॅरियर

श्री पलौड़ का जन्म 18 जुलाई 1945 में उज्जैन में हुआ। तराना के नयापुरा के निवासी श्री पलोड़ का परिवार प्रारंभ से ही आरएसएस से जुड़ा हुआ है। उन्होंने हायर सेकेंडरी तक शिक्षा ग्रहण की लेकिन परिवारिक जिम्मेदारी के चलते आप आगे पढ़ाई नहीं कर सके और पारिवारिक व्यवसाय संभालने लगे। आपकी सफलता में आपकी पत्नी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आप के 3 पुत्र हैं जो आपके व्यवसाय में हाथ बंटाते हैं और एक पुत्री हैं। आप अपने मार्गदर्शक अपने दादाजी एवं दादीजी तथा माताजी केशरबाई को मानते हैं।

परिवार ही सफलता की पहली सीढ़ी

श्री पलोड़ का मानना है कि यदि परिवार सुखी रहे तो ही तमाम चीजें व्यवस्थित होंगी। सबको प्यार सम्मान एवं ईमानदारी की दृष्टि से देखो, जीवन बहुत ही सुखद लगेगा। श्री पलोड़ ने बताया कि उन्होंने प्रारंभ से ही संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत किया लेकिन कभी हार नहीं मानी। आदान विक्रेता का व्यवसाय प्रारंभ किया। जिसके बाद पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। आज यह स्थिति है कि तराना क्षेत्र में श्री पलोड़ का होलसेल और रिटेल का अच्छा व्यवसाय है। श्री पलोड़ ने देश और विदेश में कई यात्राएं की जिसमें हांगकांग एवं मकाउ शामिल है। श्री पलोड़ को हांगकांग का अनुशासन बहुत अच्छा लगा।

कई संगठनों का किया प्रतिनिधित्व

तराना में वरिष्ठ समाजसेवी के रूप में पहचाने जाने वाले श्री पलोड़ ने विभिन्न संगठनों का प्रतिनिधित्व करते हुए कई उपलब्धि अर्जित की है। वर्ष 1973 में प्रथम बार जनसंघ से आप पार्षद चुने गए। 15 वर्षों तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तहसील संघचालक रहे। उज्जैन जिला आदान विक्रेता संघ एसोसिएशन के संरक्षक सदस्य भी हैं एवं प्रदेश के आदान विक्रेता संघ के परामर्शदाता व अनुशासन समिति के सदस्य हैं। तराना किराना व्यापारी एवं आदान विक्रेता संघ के भी संरक्षक हैं।

सेवा के वृहद आयाम

लायंस क्लब तराना के संस्थापक सदस्य हैं। सरस्वती शिशु मंदिर के संस्थापक सदस्य है एवं अध्यक्ष पद पर भी अपनी सेवाएं निःस्वार्थ भाव से प्रदान कर चुके हैं। आप डॉ. हेडगेवार सेवा न्यास के अध्यक्ष श्री गोवर्धननाथ मंदिर के ट्रस्टी भी हैं। खेलों में कई ऐसे अवॉर्ड मिले जो कि बहुत महत्वपूर्ण है। सामाजिक क्षेत्र में लायंस क्लब में भी कई बड़े अवॉर्ड से भी आप सम्मानित किए गए। मास्टरमाइंड इंटरनेशनल स्कूल तराना द्वारा तराना रत्न की उपाधि से सम्मानित किए गए। आपने वर्ष 2004 में तराना में सोमयज्ञ के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आप उज्जैन माहेश्वरी समाज द्वारा सिंहस्थ 2016 में संचालित सेवा शिविर में संयोजक भी रहे हैं।

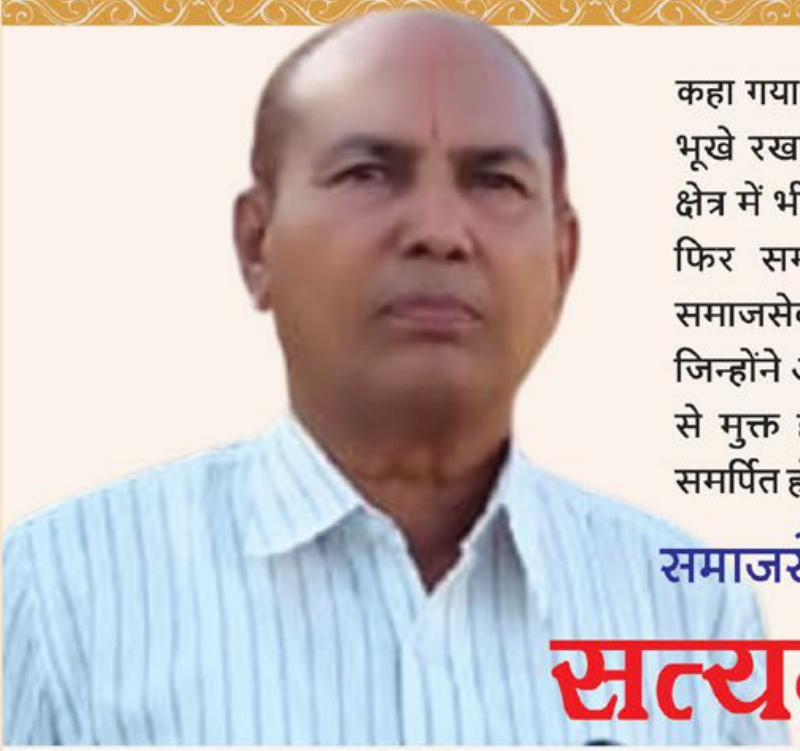

कहा गया है कि उस दान का कोई अर्थ नहीं जो परिवार को भूखे रखकर किया जाऐ। ठीक यही स्थिति समाजसेवा के क्षेत्र में भी है, जो अपने परिवार की सेवा नहीं कर सकेगा वो फिर समाज की क्या करेगा? लातुर निवासी वरिष्ठ समाजसेवी सत्यनारायण लड्ढा एक ऐसी ही विभूति हैं, जिन्होंने अपने परिवार को तो सहेजा ही, फिर जब जिम्मेदारी से मुक्त हुए तो मानवता की सेवा में भी पूरी सामर्थ्य से समर्पित हो गये।

समाजसेवा में 73वाँ सोपान समर्पित करते

सत्यनारायण लड्ढा

लातूर शहर में मध्यमवर्गीय परिवार में श्री पन्नालाल लड्ढा के यहाँ 26 नवम्बर 1947 को समाज के वरिष्ठ सत्यनारायण लड्ढा का जन्म हुआ। वर्ष 1964 में मैट्रिक पास की। पिताजी की आर्थिक हालत ठीक नहीं होने से पिताजी के अथक प्रयत्नों से उन्हें लातूर नगर परिषद में क्लर्क की नौकरी करनी पड़ गई। उनके कंधों पर ही तीन छोटे भाई एवं तीन छोटी बहनों की जवाबदारी थी। नौकरी लगने के पूर्व भी उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा। उन्हें उनके पिताजी के घर व्यवसाय में भी साथ देना पड़ा। अपनी मेहनत, कार्यशैली और मिलनसार स्वभाव की वजह से नौकरी में दिन प्रतिदिन बढ़ोतरी होती गई, प्रमोशन मिलता गया। उसी दरमियान तीनों बहनों की शादी भी करवाई, भाइयों की पढ़ाई भी करवाई व उनको नौकरी पर भी लगवाया।

उच्च शिक्षा से उन्नति की राह

श्री लड्ढा की शादी 1969 दिसंबर में कौशल्यादेवी के साथ हुई। नौकरी करते-करते ऊपर की सीढ़ियां चढ़ने के लिए उच्च शिक्षित होने की आवश्यकता थी। अतः वर्ष 1985 तक बी.ए. और एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। नौकरी में और सम्मान मिलते गए, तरक्की मिलती गई। वे अकाउंट प्रॉपर्टी अधीक्षक से डेपूटी चीफ ऑफिसर पद पर पहुंचे। कड़ी मेहनत से काम करने की वजह से सभी शहर के कई उच्च पदस्थ व्यक्ति और नगर अध्यक्षों से उनके घनिष्ठ संबंध बन गये। शिवराज पाटिल चाकुरकर जो भारत सरकार के गृहमंत्री रहे हैं, वह भी 1967 में लातूर के नगर अध्यक्ष रह चुके हैं। उस दरम्यान श्री लड्ढा को उनके साथ काम करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विद्यापीठ के कुलगुरु माननीय जनार्दन वाघमारे लातूर के नगर अध्यक्ष थे, उनके साथ भी काम किया। नगर परिषद की तरक्की के लिए किए हुए उनके हर प्रयत्न की सराहना की।

सेवानिवृत्ति के बाद समाज को समर्पित

40 साल की सेवा के बाद वे वर्ष 2005 में सेवानिवृत्त हो गए। फिर वर्ष 2008 तक लातूर अर्बन कोऑपरेटिव बैंक के एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर का पदभार संभाला। बाद में माहेश्वरी समाज के साथ ही अन्य समाज सेवी गतिविधियों में भी समर्पित हो गये। जिला माहेश्वरी तथा लातूर माहेश्वरी संगठन के महत्वपूर्ण सलाहकार एवं सदस्य रहे हैं। हर किसी सार्वजनिक काम जैसे शैक्षणिक गतिविधि, सामूहिक विवाह, धार्मिक कार्यक्रम आदि में उनका हमेशा योगदान रहता है। उन्होंने भागवत कथा का भी धूमधाम से आयोजन किया। प्रपौत्र होने के उपलक्ष्य में अपने पिताजी की सोने की सीढ़ी और तुलादान भी करवाऐ। उन्होंने 4 गरीब लड़कियों का कन्यादान भी किया। उन्होंने कई लोगों को आर्थिक मदद करके परेशानी से जूझने से भी बचाया है। अपनी रिटायरमेंट लाइफ में श्री संत मुरारी बापू, श्री किशोरजी व्यास, श्री रमेशभाई ओझा, श्री किरीटभाई जैसे अनेक संत महात्माओं के साथ बासर, ऋषिकेश, हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, पुष्कर, शृंगेरी, चंपारण्य, अयोध्या, नैमिषारण्य इत्यादि अनेक जगह कथा सुनने का सौभाग्य प्राप्त किया।

परिवार उन्नति के पक्ष पर अग्रसर

धर्मपत्नी कौशल्यादेवी लातूर इंदिरा महिला सहकारी बैंक की डायरेक्टर है। शुरू से ही उन्होंने शादी ब्याह में लगने वाले सामान की दुकान, घरेलू कपड़ों का व्यापार करके कड़ी मेहनत के साथ घर की आय बढ़ाई और पुत्र-पुत्रियों की पढ़ाई और शादी का खर्च संभालने की जवाबदारी निभाई।

आज समाज में कोई भी धार्मिक कार्य होता है तो सबसे पहले श्री लड्ढा को याद किया जाता है। कई धार्मिक अनुष्ठान भी उनके हाथ से हुए हैं। उनकी एक बेटी डॉक्टर और दूसरी बी एससी, एलएलबी है। दो लड़के और दोनों बहूरानियां डॉक्टर हैं। दोनों बहुएं मिलनसार और समाजसेवी स्वभाव की हैं। अपने सास-ससुर की सेहत अच्छी रखने में उनका काफी योगदान है।

प्रपौत्र एवं दोहित्र से भरे पूरे परिवार में निवास कर रही कांटाफोड़ जिला देवास निवास शांतादेवी बियाणी वैसे तो गृहस्थ ही हैं, लेकिन उनकी आध्यात्मिक आस्था किसी संत से कम नहीं है। इस पर भी उनकी विशेषता है, उनके मन में उमड़ता ममता का वह सागर जिसने उन्हें जगत ''मम्मी'' का स्थान दिला दिया।

नम्रता कचौलिया, इंदौर

ममता ने बनाया जगत् 'मम्मी'

शांतादेवी बियाणी

कांटाफोड़ जिला देवास ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण क्षेत्र में शांतादेवी ''मम्मी'' के नाम से जानी जाती हैं। वे काँटाफोड़ गाँव में मोहनलाल बियाणी की धर्मपत्नी बनकर आयी थी लेकिन आज 'जगत मम्मीजी' के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी लोकप्रियता का आलम यह है कि चाहे कोई भी समाज हो, किसी भी उम्र का व्यक्ति हो, गाँव में अधिकतर सभी को पता है कि मम्मीजी कौन हैं लेकिन उनमें से अधिकांश लोगों को तो आज भी उनका वास्तविक नाम नहीं पता। वास्तव में देखा जाऐ तो उन्हें यह सम्मानजनक स्थान उनके ममतामय सरल स्वभाव ने ही दिलाया।

नाम भी किया चरितार्थ

सिवनी मालवा में नंदलाल सारडा एवं बसन्ती बाई के घर जन्मी तीन बहनों और 2 भाइयों की लाड़ली बहन का नाम शांता रखा गया था। पहले घर के बड़े जन बचपन में ऐसे नाम रखते थे, जिनका कोई अर्थ हो। इस नाम के अनुरूप ही ''मम्मीजी'' शांता देवी का स्वभाव है। ये सिर्फ हमारे घर-परिवार का ही नहीं बल्कि पूरे गाँव का मानना है। गाँव में आज भी समाज के घरों में कोई भी समस्या आती हो या जन्म से लेकर मरण तक रीति-रिवाज के बारे में जानना हो, सब उनके पास बेझिझक सलाह लेने आते हैं। इसका प्रमुख कारण है, उनका अनुभवी जीवन, जो ज्ञान का भंडार है साथ ही उनका शांत और सहज स्वभाव जिसमें धैर्य और साहस भरा है। आपकी अमिट छवि सिर्फ गाँव तक ही सीमित नहीं रही है बल्कि आपके गुरु स्वामीजी श्रीविष्णुप्रपन्नाचार्यजी महाराज ने भी अपने विशेष परम वैष्णव शिष्यों में आपको स्थान दिया है।

गुरू की नजर में भी सम्माननीय

उनके पौत्र ने बताया कि छत्रीबाग वेंकटेश मंदिर में ब्रह्मोत्सव का आयोजन चल रहा था व तीसरे दिन जब भगवान की सवारी मंदिर प्रांगण में घूम रही थी, तब स्वामीजी सवारी के आगे चल रहे थे। उनके दोनों पोते भी उन्हें दर्शन कराने लेकर गए हुए थे। बहुत भीड़ थी, जब पुनः स्वामीजी रुके तो ये दोनों और मम्मीजी उनके चरण स्पर्श के लिए आगे बढ़े। मम्मीजी की कमर में समस्या है, वो झुक नहीं पाती। जैसे ही वो झुकने को तत्पर हुई, उसके पहले ही स्वामीजी ने अपना एक चरण इतने ऊपर उठा लिया कि मम्मीजी उनको आराम से छू सके। गुरु-शिष्य के इस अनोखे प्रेम सम्बन्ध ने हमें बहुत स्पष्ट समझा दिया कि ये गुरु कृपा इतनी सरलता से हर किसी को कहां मिलती है? इसके लिए अपने आप को कितना योग्य बनाना पड़ता है, उसकी जीती जागती प्रेरणा हैं, मम्मीजी।

इनकी नजर में शांतादेवी

गुरु नागोरिया पीठाधीश्वर **स्वामीजी श्रीविष्णुप्रपन्नाचार्य जी महाराज** लिखते हैं-''परम श्रीवैष्णवी शांता बाई का व्यक्तित्व सहज, सरल और समर्पण की मूरत है। आपकी आचार्य शरणागति परिपूर्ण है। बाबूजी जब बीमार थे, तब चिकित्सालय में भी आप उनको नित्य स्वरूप धारण करवाती थी। आपके जीवन में कथनी और करनी में भेद नहीं है।'' **उर्मिला होलानी** (वरिष्ठ समाजसेविका-काँटाफोड़) लिखती हैं- ''काँटाफोड़ में इनकी पहचान विशेष कर सिवनी वाली भाभीजी और मम्मीजी के नाम से है। ये गुरु और भगवान पर आश्रित है और करती हैं दोनों पर पूरा विश्वास। उनके इस विश्वास और भरोसे से ही हँसता खेलता है, इनका परिवार। ये हमेशा सबके सहयोग के लिए तत्पर रहती हैं और सब इनके सहयोग के लिए तत्पर रहते है। स्वभाव इनका बहुत शांत है पर हाँ यदि कोई गलती करता है तो इनका नरम दिल बिल्कुल कठोरता से उसको समझाता भी है, यह इनकी एक बहुत बड़ी खासियत है। **मंगला सिंगी** (पूर्व देवास ज़िला अध्यक्ष-कांटाफोड़) लिखती हैं-'' वे हम सबकी प्रेरणा स्रोत हैं। हमारे गाँव में विशेष कर समाज में जब कोई मिलता है तो सर्वप्रथम जय श्रीमन्नारायण कहता है। ये कहने की प्रथा इन्होंने ही हमें सिखायी है। इसका लाभ ये है कि मिलने के दौरान सबसे पहले कोई क्या बोले तो क्यूँ ना भगवान का नाम लेकर ही बात की शुरूआत हो ताकि सब शुभ ही हो।

नागपुर माहेश्वरी समाज के लिये डॉ. विनोद लाखोटिया एक ऐसा नाम हैं, जिनका उल्लेख होते ही हर किसी का गौरवान्वित होना स्वाभाविक ही है। आपकी पहचान फार्मास्युटिकल प्रोफेसर के साथ ही एक ऐसे वैज्ञानिक के रूप में भी है, जिन्होंने जल के उपयोग के लिये कई उपकरणों का आविष्कार किया। उम्र के 78वें पड़ाव पर भी उनकी सेवायात्रा उसी तरह अनवरत जारी है।

सतीश लाखोटिया, नागपुर

''जल'' की गुणवत्ता के वैज्ञानिक
डॉ. विनोद लाखोटिया

आर्वी जिला वर्धा (महाराष्ट्र) में जन्में डॉ. विनोद लाखोटिया वर्तमान में नागपुर समाज के लिये समर्पित समाजसेवी के साथ ही एक सफल वैज्ञानिक के रूप में भी गौरव का पर्याय बने हुए हैं। आपने आर्वी से स्कूल शिक्षा पूर्ण की।प्रारम्भ में ही आप प्रतिभावान रहे। इसके पश्चात् फार्मेसी में एम.फार्मा तथा पीएच.डी. जैसी शीर्ष उपाधि प्राप्त की और इनके साथ ही आपका कार्यक्षेत्र नागपुर (महाराष्ट्र) बन गया।

सफल शिक्षक के साथ वैज्ञानिक भी

उच्च शिक्षा प्राप्त कर डॉ. लाखोटिया नागपुर विश्वविद्यालय के फार्मास्युटिकल विभाग में प्रोफेसर के रूप में सेवा देने लगे। आप विश्वविद्यालय के मेडिसिन विभाग में फैकल्टी मेम्बर तथा बोर्ड ऑफ स्टडीज में भी कार्यरत रहे। कॉस्मेटिक साईंस के प्रति आपका विशेष लगाव रहा। डॉ. लाखोटिया के मार्गदर्शन में कई विद्यार्थियों ने उच्च शिक्षा ग्रहण की और उनमें से कई देश-विदेश की बड़ी-बड़ी कम्पनियों में कार्यरत हैं। इसका कारण उनके अध्ययन करवाने के तरीकों में उद्योगों के अनुकूल ज्ञान प्रदान करना शामिल था। वे सभी डॉ. लाखोटिया के योगदान को श्रेय देने में पीछे नहीं रहते। देश की ख्यात संस्था नीरी (NEERI) तथा भाभा ऑटोमेटिक रिसर्च सेंटर के साथ मिलकर भी आपने अनुसंधान किया और जल के उपयोग के लिये कई उपकरण बनाये। आप संस्था ''एटीपीआय'' के जनरल सम्पादक भी रहे। इनकी धर्मपत्नी वीणादेवी परिवार एवं इनके हर कार्य में सहयोगी रही हैं।इनके सुपुत्र आनंद एवं पुत्रवधू पूजा पिछले कई वर्षों से अमेरिका में साफ्टवेयर कंपनी में कार्यरत है। इनकी पुत्री डॉ. रेणू समीर गग्गड़ रिलायंस फाउंडेशन हॉस्पिटल मुंबई में अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

समाज की सेवा में सदैव तत्पर

वैसे तो डॉ. लाखोटिया हमेशा ही प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से समाज को तथा समाज के युवाओं को मार्गदर्शन देकर अपना योगदान देते रहे हैं। जब समय मिला तो अपना अधिकांश समय ही आपने समाज व समाजजनों को समर्पित कर दिया। इसी श्रृंखला में ज्येष्ठ नागरिक मंडल माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने के साथ ही आप माहेश्वरी पंचायत सीताबर्डी के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। माहेश्वरी पंचायत की छात्रवृत्ति योजना को आपने नई दिशा देने का काम किया है। आपने हमेशा ''सबका साथ सबका विकास'' की तर्ज पर अपने काम को अंजाम दिया है। डॉ. लाखोटिया तकरीबन 15 वर्षों से माहेश्वरी पंचायत सीताबर्डी के कार्यकारिणी सदस्य के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। उम्र के 78 वर्ष के पड़ाव पर भी आप युवा की भांति ही अपने काम को अंजाम देते हैं।

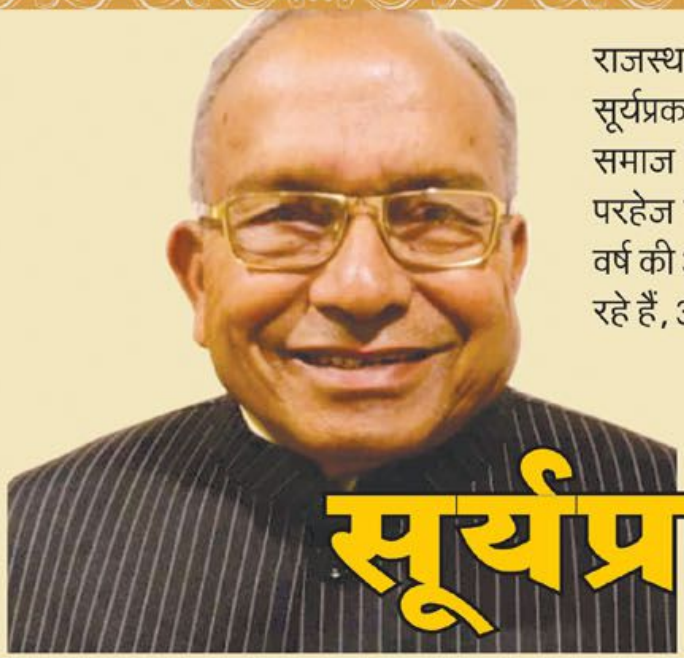

राजस्थान के सोजत रोड पाली निवासी वरिष्ठ समाजसेवी सूर्यप्रकाश लड्ढा एक ऐसे क्रांतिकारी समाजसेवी हैं, जिन्होंने समाज संगठनों में कमियों के खिलाफ आवाज उठाने में भी कोई परहेज कभी नहीं किया। अपने उद्योग व्यवसाय के साथ-साथ 73 वर्ष की अवस्था में श्री लड्ढा समाजसेवा में न सिर्फ अपना योगदान दे रहे हैं, अपितु कमियों के खिलाफ आवाज भी बुलंद कर रहे हैं।।

क्रांतिकारी समाजसेवी
सूर्यप्रकाश लड्ढा

पाली (राजस्थान) में वैसे तो श्री लड्ढा की पहचान कृषि आदान से संबंधित एक सफल व्यापारी के रूप में है, लेकिन श्री लड्ढा ने इसके साथ-साथ समाजसेवा में भी अपना योगदान देने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। उन्हें यदि समाज संगठन में कोई कमी लगी तो समाजहित में उन्होंने निर्भिक होकर आवाज उठाई और समाज ने भी इसे महत्व दिया। उन्होंने राजस्थान प्रदेश के छह टुकड़े करने के विरोध में आवाज को बुलंद किया। कोटा जिले में 12 वर्ष तक अनेक प्रयासों के बाद चुनाव नहीं हो पा रहे थे। ऐसे में वहां चुनाव संपन्न करवाए। अनेक ऐसे जिलों में चुनाव भी संपन्न कराए जहां कई परेशानी आ रही थी। प्रदेश, जिला, महासभा तथा सेवा सदन में हो रहे अनुचित कामों के बारे में मंचों से अपनी बातें प्रमुखता से रखी। समाज में कार्यकर्ताओं को समुचित अवसर न मिलने तथा भाई भतीजावाद चलने से विमुख होकर ''एक पहल आपकी सेवा संस्था'' सोजत रोड में स्थापना की।

सुसंस्कृत परिवार में जन्म

श्री लड्ढा का जन्म 15 अगस्त 1948 को पाली (राजस्थान) में श्री जुगलकिशोर व श्रीमती रामज्योति बाई लड्ढा के यहाँ हुआ था। बचपन से ही भरे पूरे परिवार का संस्कारित माहौल मिला। परिवार में श्री लड्ढा के साथ ही भाई सीए चंद्रप्रकाश व प्रापर्टी डीलर राजेंद्र लड्ढा के साथ ही तीन बहनें भी शामिल रहीं। बीकॉम. तक प्रथम श्रेणी में शिक्षा ग्रहण प्राप्त कर पारिवारिक व्यवसाय संभाला ही था कि किशनगढ़ की भगवंती लड्ढा के साथ परिणय सूत्र में बंध गए। वर्तमान में उनके परिवार में विवाहित पुत्री सीमा-रंगनाथ मूंदड़ा अहमदाबाद तथा सुचिता-अजय झंवर मुंबई के साथ ही पुत्र संदीप एवं पुत्रवधू मोनिका लड्ढ, पौत्र प्रणय एवं प्रबल लड्ढा भी शामिल हैं।

व्यवसाय जगत में सफलता की यात्रा

श्री लड्ढा ने अपनी व्यावसायिक यात्रा अपने पारिवारिक किराना व्यापार से वर्ष 1967 में शुरू की थी। फिर लगातार उनके कदम सफलता की ओर बढ़ते ही चले गए। इस क्रम में आपने अनाज व्यापार, सीमेंट पाईप फैक्ट्री उदयपुर, कृषि आदान में वितरक आदि जैसे महत्वपूर्ण व्यवसायों की शुरुआत की। इस शृंखला में वर्ष 2006 में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए श्री लड्ढा ने 2006 में पार्थ बायो एग्रीकल्चर प्रा.लि. अहमदाबाद की स्थापना की और स्वयं मैनेजिंग डायरेक्टर बने। वर्ष 2006 से अब तक जोधपुर, गंगानगर, वडोदरा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड में विक्रय डिपो प्रारंभ कर किसानों की सेवा आर्गेनिक खेती के लिए उत्पाद बनाकर कर रहे हैं।

कई संगठनों में सेवा

श्री लड्ढा व्यावसायिक क्षेत्र में उपाध्यक्ष राजस्थान खाद बीज विक्रेता संघ जयपुर, संरक्षक व अध्यक्ष पाली जिला खाद-बीज विक्रेता संघ पाली तथा उपाध्यक्ष खाद बीज विक्रेता संघ उपखंड जोधपुर रहे। सामाजिक क्षेत्र में सहायक सचिव पाली जिला माहेश्वरी सभा, अध्यक्ष पाली जिला माहेश्वरी सभा, उपाध्यक्ष पश्चिमी राजस्थान माहेश्वरी सभा के साथ ही मुख्य चुनाव अधिकारी के रूप में भी सेवा देते रहे हैं।

सेवा के वृहद आयाम

श्री लड्ढा पिछले तीन वर्षों से स्थानीय सोजत रोड के आसपास पहाड़ी क्षेत्रों में गरीबों की सेवा कर रहे हैं। इसके अंतर्गत स्कूलों में गरीब छात्रों को स्टेशनरी, सर्दी में स्वेटर एवं टोपे, चप्पल-जूते, स्कूल बैग आदि वितरित करते हैं। इसके साथ ही गरीब बच्चों को गोद लेकर सारा खर्च वहन भी करते हैं। गांवों में गरीब परिवारों को कपड़े, भोजन सामग्री तथा जूते-चप्पल का आवश्यकतानुसार वितरण करते हैं। पक्षियों के लिए परिंडे बनाकर पेड़ों पर बांधना तथा खाद्य सामग्री देना भी उनकी दिनचर्या है। उन्होंने कोरोना काल में गरीब परिवारों में भोजन सामग्री का वितरण किया। इस दौरान गांवों में रोटियां व चारे की व्यवस्था भी की। स्कूलों में जहां पंखों की उपलब्धता नहीं थी, वहां व्यवस्था करवाई।

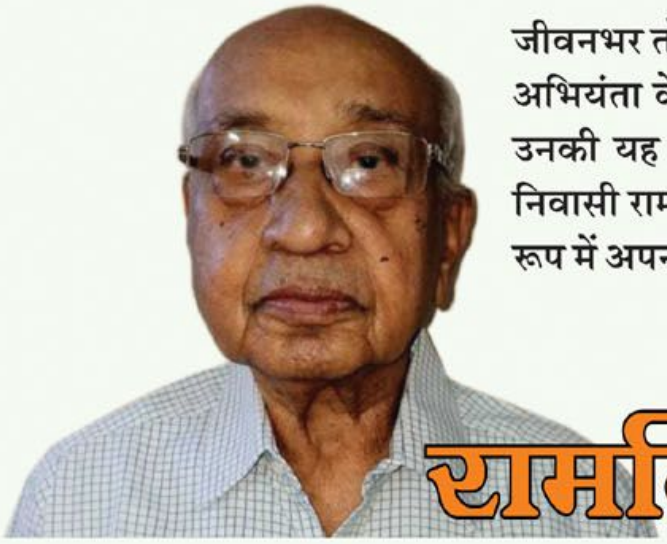

जीवनभर तो लोक निर्माण विभाग में अभियंता के रूप में मुख्य अभियंता के पद तक सेवा दी लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद भी उनकी यह सेवा यात्रा थमी नहीं बल्कि चलती ही रही। गुना निवासी रामनिवास लाहोटी उम्र के उत्तरार्द्ध में भी इंजीनियर के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं।

उम्र से परे सेवा का दायरा
रामनिवास लाहोटी

लोक निर्माण विभाग से मुख्य अभियंता के पद से सेवानिवृत्त रामनिवास लाहोटी ने आजीवन अपनी महत्वपूर्ण सेवा दी है। सेवानिवृत्त का अर्थ आमतौर पर लोग अपने कर्त्तव्यों से निवृत्ति मानते हैं, लेकिन गुना निवासी श्री लाहोटी के लिए यह सत्य नहीं है। सेवानिवृत्ति के पश्चात आपने अपने अनुभव व ज्ञान का लाभ और लोगों को भी मिले इस हेतु निर्माण कार्य में डिजाइन व मूल्यांकन करना एवं आवश्यक परामर्श प्रदान करने का कार्य जारी रखा। गुना बायपास के निर्माण में भी आपने चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर रहकर सेवाऐं दीं।

उच्च शिक्षित परिवार में लिया जन्म

श्री लाहोटी का जन्म 20 जनवरी 1938 को गुना के ख्यात अभिभाषक व स्वतंत्रता संग्राम सैनानी स्व. श्री रतनलाल लाहोटी के यहां हुआ। आपकी इंटरमीडिएट तक की शिक्षा गुना में हुई। तदंतर बीएससी की शिक्षा होल्कर कॉलेज इंदौर से करने के उपरांत वर्ष 1959 में मुंबई से बीई (सिविल) ऑनर्स की डिग्री प्राप्त की। 1960 में आप आगर-मालवा के प्रतिष्ठित अभिभाषक स्व. श्री नारायणदास बाहेती की पुत्री कांता बाहेती के साथ परिणय सूत्र में बंध गए। आपके परिवार में वर्तमान में दो विवाहित पुत्र व एक पुत्री है। आपके लघु भ्राता रमेशचंद्र लाहोटी भारत के प्रधान न्यायाधीश पद को सुशोभित कर चुके हैं। अन्य भ्राताओं में डॉ. जीके लाहोटी (हृदय रोग विषेषज्ञ), केके लाहोटी सेवानिवृत्त कार्य वाहक मुख्य न्यायाधीश (म.प्र. उच्च न्यायालय), ओमप्रकाश लाहोटी सेवानिवृत्त विकास अधिकारी एवं अनिलकुमार लाहोटी मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) उत्तर रेलवे में पदस्थ हैं।

वर्तमान दौर में संयुक्त परिवार की व्यवस्था

आपका परिवार एक संयुक्त परिवार है। सामाजिक कार्यक्रमों में पूरे परिवार की सदैव सक्रिय उपस्थिति रहती है। आपकी ही प्रेरणा से समाज के सभी कार्यक्रमों में संपूर्ण परिवार की आत्मीय उपस्थिति एवं उचित मार्गदर्शन सभी समाजजन को उत्साहित करता है। शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत आपने मध्यप्रदेश शासन के अधीन लोक निर्माण विभाग में कनिष्ठ उपयंत्री के पद पर सेवाएं शुरू की। पदोन्नत होते हुए लोक निर्माण विभाग में वर्ष 1994 में मुख्य अभियंता के पद पर पदोन्नत हुए। 1996 तक इस पद की जिम्मेदारी वहन करते हुए सेवानिवृत्त हुए। आपको बचपन से ही अच्छी पुस्तकें पढ़ने एवं उनका संग्रह करने का शौक रहा है। यही कारण है कि आपके पास अच्छे साहित्य की बहुत सुंदर लायब्रेरी है। शासकीय सेवा के दौरान ही आपने समय निकालकर विधि स्नातक की डिग्री भी हासिल की।

''ना जाने किस दिन जिंदगी की सुबह से शाम हो जाए, ना जाने किस दिन मौत का पैगाम आ जाए। हम तो रोज तलाशते हैं ऐसे मौके, हमारी जिंदगी भी किसी के काम आ जाए।'' ये पंक्ति देवास निवासी वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. के.के. धूत पर खरी उतरती है। आईये जानें उम्र के 73वें पड़ाव पर भी किस तरह कर रहे हैं, डॉ. धूत मानवता की सेवा।

पीड़ित मानवता को समर्पित जीवन

डॉ. के. के. धूत

देवास जिला माहेश्वरी समाज ही नहीं अपितु मानवता की सेवा में जुटी तमाम संस्थाओं के बीच 73 वर्षीय डॉ. के.के. धूत एक ऐसे मानवता के पुजारी हैं, जिनका संपूर्ण जीवन ही समाजसेवा को समर्पित हो चुका है। डॉ. धूत देवास जिला रेडक्रॉस सोसायटी के लंबे समय से सचिव हैं। इसे डॉ. धूत का विशेष योगदान ही कहा जा सकता है कि इसी दौरान रेडक्रॉस सोसायटी ने स्थानीय स्वास्थ्य सेवाओं का कायाकल्प करके रख दिया। जब भी जो भी आवश्यकता लगी, उसकी जनसहयोग से पूर्ति करवाने में डॉ. धूत कभी पीछे नहीं रहे। उनके प्रयासों से स्थानीय महात्मा गांधी जिला चिकित्सालय देवास को वॉटर कूलर, एम्बुलेंस, जनभागीदारी से धर्मशाला निर्माण, विकलांग पुनर्वास केंद्र, फिजियोथैरेपी सेंटर आदि कई सुविधाओं का रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा विकास कर उसे जनहित को समर्पित किया गया है।

प्रारंभ से रहे प्रतिभावान व सहृदय

डॉ. धूत का जन्म 8 सितंबर 1947 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन कन्नौद जिला देवास में हुआ था। इसे जन्मदिवस का विशिष्ट प्रभाव ही कहा जा सकता है कि आपका जीवन भी भगवान श्रीकृष्ण की तरह पूर्ण रूप से मानवता को ही समर्पित हो गया। वे बचपन से ही प्रतिभावान रहे। आपने 1963 में वैष्णव हायर सेकंडरी स्कूल इंदौर से हायर सेकंडरी की परीक्षा श्रेष्ठ अंक से उत्तीर्ण की। वर्ष 1964 में बीएससी में प्रवेश लिया तथा फिर एमजीएम मेडिकल कॉलेज में प्रवेश लिया और वर्ष 1969 में एमबीबीएस की उपाधि प्राप्त कर ली। उच्च शिक्षा की यात्रा सतत रखते हुए आप ने 1976 में शिशु रोग में एमडी की उपाधि प्राप्त की। चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करते ही आपने शासकीय चिकित्सक के रूप में अपनी सेवा प्रारंभ कर दी। तमाम व्यवस्तता के बावजूद समाज, घर-परिवार और अपनों का आप ने हमेशा ख्याल रखा। इस बीच आपने अनेक धार्मिक यात्रा की। वर्ष 1996 में नौकरी से वीआरएस ले लिया, लेकिन अपना कर्म नहीं छोड़ा।

सतत् चली सेवा यात्रा

आपने लायंस क्लब से जुड़कर अनेक सेवा कार्य किए। इसी भाव से प्रेरित होकर आपको एमजेएफ की उपाधि से सम्मानित किया गया। आप 2011 से निरंतर भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी शाखा देवास के सचिव पद पर हैं। संस्था सनातन विचार मंच देवास पिपरी के अध्यक्ष व ओम नमः शिवाय ट्रस्ट ओंकारेश्वर के ट्रस्टी हैं। आप ने हाल ही में 2020 में मां नर्मदा की परिक्रमा परिवार सहित पूरी की। इतनी अधिक उम्र होने के बाद भी कोरोना काल में आपने विनायक हॉस्पिटल में सेवा जारी रखी। आप ने अपने स्टाफ के साथ मिलकर बाहर से आने वाले यात्रियों को भोजन पैकेट और जूते चप्पल भी वितरित किए। इस सेवा कार्य को देखकर महामहिम राज्यपाल ने आपको कोविड-19 के प्रमाण पत्र से गत 15 अगस्त को सम्मानित किया। वर्तमान में डॉ. केके धूत भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी जिला शाखा देवास के सचिव पद के साथ-साथ जिला रेडक्रॉस सोसायटी देवास की प्रबंध समिति से रेडक्रॉस की नियमावली अनुसार राज्य शाखा की प्रबंध समिति हेतु निर्वाचित जिला प्रतिनिधि हैं एवं भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी मप्र राज्य शाखा की महिला एवं बाल कल्याण समिति के संयोजक/राज्य समन्वयक भी हैं।

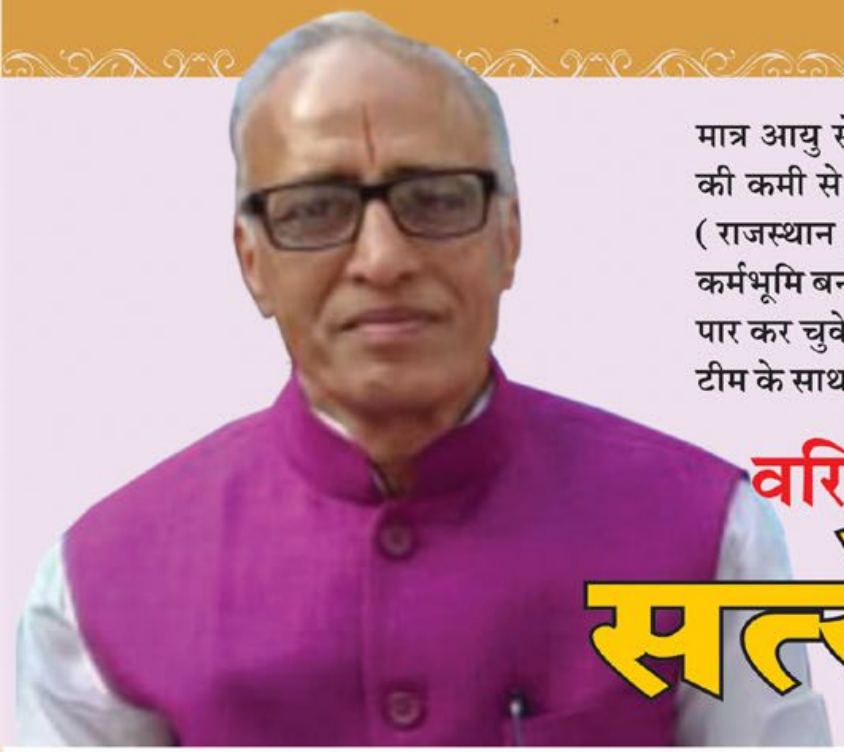

मात्र आयु से कोई अशक्त वृद्ध नहीं होता बल्कि अपनी ऊर्जा की कमी से होता है। यह सिद्ध कर दिखा रहे हैं, जिला सीकर (राजस्थान) के मूल निवासी तथा वर्तमान में मुंबई को कर्मभूमि बना चुके सत्येंद्र धूत। श्री धूत उम्र के लगभग 7 दशक पार कर चुके हैं, लेकिन उनकी ऊर्जा ऐसी है कि अपनी क्रिकेट टीम के साथ आज भी क्रिकेट खेलने से वे नहीं चूकते।

वरिष्ठायु के ऊर्जावान 'युवा'

सत्येन्द्र धूत

धूत परिवार एक अत्यंत वृहद परिवार है। पूर्व उपराष्ट्रपति स्व. श्री भैरोसिंह शेखावत के गांव ग्राम खाचरियावास जिला सीकर (राजस्थान) में स्व. श्री बाबूलाल धूत के यहां समाज के वरिष्ठ लेकिन ऊर्जा से प्रेरक बने रहने वाले सत्येंद्र धूत का जन्म हुआ था। यह गांव खाटू श्याम से 23 किमी दूर है। श्री धूत का परिवार 275 साल पहले दांता रामगढ़ से यहां खाचरियावास आकर बस गया था। इस गांव में एक बड़ा किला है जहां राजा एवं राजा का परिवार रहता था। वहां उनके परिवार वालों ने मुनीम की नौकरी की और गांव में कामदार कहलाए। आज भी वे गांव में कामदार ही कहलाते हैं। सालों तक यह सिलसिला चलता रहा। जब देश आजाद हुआ तो राजाओं के राज्य चले गए और केवल किला रह गया। कई लोगों को गांव छोड़कर अपने धंधे व नौकरी की तलाश में बाहर जाना पड़ा। अलग-अलग शहरों में जाकर नया व्यापार किया नौकरियां की। भारत के प्रायः सभी मुख्य शहरों में धूत परिवार के लोग मिलेंगे, जैसे मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, बैंगलुरु, इंदौर इत्यादि। सभी के अच्छे कारोबार हैं।

नौकरी से उद्योग की यात्रा

आपके पिताजी श्री बाबूलालजी भी वर्ष 1948 में मुंबई आए थे और वहीं बस गए। यहां उन्होंने श्रीनिवास कॉटन मिल्स में सर्विस से शुरुआत की। सुपरवाइजर की हैसियत से नौकरी करने के बाद उन्होंने कॉपर वाइडिंग वायर का स्वयं का कारोबार शुरू किया तथा 1980 में स्वर्ग सिधार गए। गांव में श्री धूत दादा-दादी के साथ अकेले ही रहते थे और वहां चार क्लास तक पढ़ाई की। फिर हिंदी हाईस्कूल घाटकोपर में मैट्रिक तक पढ़े। बाद में चेतना कॉलेज ऑफ कॉमर्स बांद्रा में इंटर कॉमर्स तक पढ़ाई की और एक साल का प्लंबिंग इंजीनियर का टेक्निकल कोर्स किया। पढ़ाई के साथ ही 1970 से नौकरी भी करने लगे और 1982 में प्लम्बिंग सेनिटेशन कांट्रेक्टिंग का व्यवसाय प्रारंभ किया जो वर्ष 2016 तक चलता रहा। इसके बाद वर्ष 2016-17 में धूत दम्पत्ति पूना छोटे बेटे के पास आ गए। उनकी शादी 21 अप्रैल 1975 में गांव में हुई थी। बड़े बेटे मुंबई में आर्किटेक हैं और छोटा पूना में गेरा बिल्डर्स के यहां पर सीईओ है।

प्रारंभ से रहे ऊर्जा से भरपूर

श्री धूत स्वयं बताते हैं कि मैं 1962 से ही आरएसएस से जुड़ गया था। वहीं से खेलकूद में रुचि पैदा हुई जो कि आज तक चल रही है। मैं एयरफोर्स में जाना चाहता था, देश की सेवा के लिए। एग्जाम भी दिया, फर्स्ट क्लास में पास भी हुआ लेकिन एक छोटी सी टेक्निकल खराबी बताकर भर्ती नहीं किया। उन्होंने कहा कि आपके तलवे सपाट हैं। उनमें कर्व नहीं है। इसलिए रिजेक्ट कर दिया। श्री धूत बचपन से ही विभिन्न खेलों में भाग लेते रहे। प्रारंभ में मील की नौकरी से ऑल महाराष्ट्र मिल्स एसोसिएशन एथलिट मीट में भाग लेकर वर्ष 1970 व 72 में दो प्रतियोगिताओं में क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। 1974 में मुंबई सांताकुंज में एयर इंडिया स्पोर्ट्स मीट में श्री धूत को फस्ट प्राईज मिली थी जो कि एक रिकार्ड है। वर्ष 1975 में ऑल इंडिया स्पोर्टस फ्री मीट में भाग लेने का अवसर मिला लेकिन उसी दिन 21 अप्रैल 1975 को विवाह होने से भाग नहीं ले सके। मुंबई में निवास करते हुए मैराथन तथा एथलेटिक्स में भाग लेते रहे। वर्ष 1996 में आपको माहेश्वरी प्रगति मंडल मुंबई द्वारा अपनी गोल्डन जुबली के अवसर पर बेस्ट स्पोर्ट्समैन ऑफ दी गोल्डन जुबली ईयर से सम्मानित किया गया। श्री धूत वर्तमान में भी मुंबई में क्रिकेट क्लब से जुड़कर स्पर्धाओं में भाग लेते रहते हैं। इसके लिए बकायदा उनकी एक क्रिकेट टीम भी बनी हुई है। आपको स्टेज पर म्युजिकल प्रोग्राम का भी काफी शौक है। आपका फेसबुक और यूट्युब पर भी लाइव गानों का प्रोग्राम चलता रहता है।

कल, आज और कल अर्थात पुरानी, वर्तमान व नई पीढ़ी इनके बीच वैचारिक मतभेद हमेशा से चलता आया है। जब इस वैचारिक मतभेद का समाधान नहीं निकलता और यह चरम बिंदू पर पहुंच जाता है, तब होता है, 'मनभेद' जो परिवार को बिखेर कर रख देता है। लेकिन परिवार में सामंजस्य स्थापित कर मतभेद को दूर करना भी हमारे हाथ में है। आइये जाने क्या करें हम...

कल, आज और कल

त्रिभुवन काबरा, उपसभापति
अ.भा. माहेश्वरी महासभा

सब लोगों का मानना है कि जीवन मे उम्र के अंतिम पड़ाव मे वृद्धावस्था आती है परंतु मेरा यह मानना है कि वृद्धावस्था एक मात्र ऐसा पड़ाव है जो इंसान की इच्छा से ही उसके जीवन में आता है। जन्म के साथ बाल्यावस्था आती है, फिर बढ़ती उम्र के साथ शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता के साथ युवावस्था का पड़ाव आता है परंतु वृद्धावस्था जैसा तो कोई पड़ाव ही नहीं होता बल्कि इंसान अच्छी सकारात्मक सोच के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक जवाबदारियों को निभाते-निभाते मन से तो और भी ज्यादा युवा होता है। हाँ यदि बात सिर्फ शारीरिक क्षमता से ही उम्र के पड़ाव का आंकलन करने की हो तो निश्चित ही वृद्धावस्था जीवनचक्र का एक हिस्सा है तथा सभी को इससे रूबरू होना ही है, जो अटल सत्य है।

वृद्धावस्था को न बनने दें कमी -

समय के साथ हर प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, जीव या निर्जीव वस्तुओं के ढांचे में परिवर्तन होता ही है। जरूरत है हमें अपने को समय के अनुरूप ढाल कर उसमें से सार्थक की खोज करते रहने की। जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों से हम साधारणतः अधिक शांत होते जाते हैं। व्यक्ति आई हुई समस्याओं का समाधान कर चुका होता है। हर व्यक्ति जीवन में कभी न कभी कठिन समय से गुजरा होता है। अतः जीवन की जिम्मेदारियो को ईमानदारी के साथ निभाने के बाद एक समय ऐसा भी आता है, जब प्रत्येक व्यक्ति आराम की जिंदगी बिताना चाहता है। मेरा यह मानना है कि सकारात्मक सोच से व्यक्ति को वृद्धावस्था में भी मन से युवा रहकर उसका आनन्द लेना चाहिए। इस अवस्था में ही हम अपने पौत्र, पौत्रियों, नाते, नातियों को प्यार करने, कहानी सुनाने, पार्क में घुमने तथा इसी तरह की ढेरों कार्यकलापो का आनन्द लेते हुये एक बार फिर अपने बचपन का रसास्वादन चख सकते है

यह करें दिनचर्या में परिवर्तन

अनावश्यक तनाव से बचें-

आपको जो करना था वो आप इस उम्र तक कर चुके हैं इसलिए समस्याओं को सुलझाने का कम दूसरों पर छोड़ दें। हां जहां जरूरत हो वहां सलाह भी दें तथा मार्गदर्शन भी करें। सलाह को मानने या नहीं मानने का निर्णय सामने वालों पर ही छोड़ दें जिससे आनन्द मिले वो करे, अपनी रुचि के कार्यकलापो से जुडें तथा साथ ही अपने मनोरंजन की गतिविधियों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएँ जैसे कोई खेलना, संगीत सुनना, किताबें पढ़ें इत्यादि।

अपनी दिनचर्या में अनुशासित रहें -

जीवन में अनुशासन का बहुत बड़ा महत्व है। इसलिए सही समय पर दैनिक कार्यों को करने का नियम बनाएँ। सुबह भोर में तथा संध्याकाल में ईश्वर का स्मरण जरूर करें। ईश्वर का स्मरण वो शक्ति है, जो हमें निरंतर ऊर्जावान बनाए रखती है। नियमित प्रार्थना से हमें विश्वास होता है कि ईश्वर हमारे साथ है तथा हम ईश्वर के साथ हैं।

स्वास्थ्य का ध्यान रखे -

जीवन की सबसे बडी पूंजी उसका स्वास्थ्य होता है परंतु उसे इस बात का मूल्य तब पता लगता है जब वो इसे खो देता है। इसलिए स्वास्थ्य के अनुरूप हमें आहार लेना चाहिए। हमें भूलना नही चाहिए कि संतुलित आहार से ही हमारे शरीर को ताकत मिलेगी। प्रयाप्त मात्रा में पानी पीएं तथा नियमित मेडिटेशन करें।

सकारात्मक सोच रखें-

कोरोना काल के इस कठिन दौर में हमें लोगों की नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदलने का प्रयास करना होगा। आज भी हम एक-दूसरे से उतने ही जुड़े हुए हैं जितने पहले थे, परिवर्तन सिर्फ यह हुआ है कि जहां हम व्यक्तिगत रूबरू मुलाकात करते थे वहीं आज वर्चुअल करते हैं बल्कि मैं तो कहूंगा कि वर्तमान परिस्थितियों में हमारे दिलों की नजदीकियाँ ओर भी ज्यादा बढ़ गई हैं।

कल भी मैं जवान था, आज भी हूं और कल भी रहूंगा,
संक्षिप्त शब्दों में सिर्फ इतना कहूंगा,
हौसले बुलंद तो बुढ़ापा कहाँ?

प्रकृति ने तो दुनिया बहुत सुंदर बनाई है, लेकिन यह दुनिया की खुबसूरती आंखों के बिना अधूरी है। दुनिया के हर नजारे का आनंद लेने के लिए आंखें जरूरी हैं। ऐसे में सोचें यदि आंखें न हों तो जीवन कैसा होता है? उत्तर होगा, अत्यंत भयावह। इसी भयावहता का समाधान है, नेत्रदान, जो हम मरणोपरांत करते हैं।

नवखुशियों का महादान है नेत्रदान

डॉ. मंगल-शरद राठी
स्त्री रोग विशेषज्ञ, परतवाड़ा

आंखों की रोशनी जाने की वजह कॉर्निया की बीमारियां, ग्लूकोमा, कैंसर आदि कई बीमारियां हैं। इसका एक मात्र इलाज नेत्रदान है। नेत्रदान से किसी ऐसे व्यक्ति को रोशनी मिलती है, जिसकी आंखें नहीं होती या खराब हो जाती हैं। भारत में लगभग 4.5 मिलियन लोग कॉर्नियल ब्लाइंडनेस से पीड़ित हैं, जिसका समाधान नेत्रदान से हो सकता है। हर साल स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से 25 अगस्त से 8 सितंबर तक राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य नेत्रदान के महत्व के बारे में यानी कॉर्निया ट्रांसप्लांनटेशन के बारे में लोगों को व्यापक पैमाने पर जागरूक करना है तथा लोगों को मृत्यु के बाद अपनी आंखें दान करने की शपथ लेने के लिए प्रेरित करना है।

क्या है नेत्रदान?

किसी भी पुरुष या महिला द्वारा अपने मरने के बाद आंख दान करने की क्रिया को आई डोनेशन कहते हैं। नेत्रदान का निर्णय पूरी तरह से स्वैच्छिक होता है। यह समाज सेवा का बेहतरीन माध्यम है। अपनी मृत्यु के बाद नेत्रदान करके आप किसी इंसान को जीवन दान दे सकते हैं। आप किसी भी अंग का दान कर किसी इंसान की जिंदगी संवार सकते है। मरणोपरांत एक आंख किसी नेत्रहीन व्यक्ति को दान कर कॉर्नियल ट्रांसप्लांटेशन की मदद से ,सर्जरी के जरिए नेत्रहीन व्यक्ति को आंखों की रोशनी दी जा सकती है और उसके परिवार को ढेर सारी खुशियां दे सकते हैं। आंखों की काली या ब्राउन परत को कॉर्निया कहते हैं। कॉर्निया साफ टिश्यू होता है जो आंख के बाहरी हिस्से को कवर करता है। कॉर्निया में जख्म होने से, या धुंधला होने से, या इंफेक्शन होने से दृष्टि कम या समाप्त हो जाती है। कॉर्नियल ट्रांसप्लांटेशन, जिसे कॉर्नियल ग्राफ्टिंग भी कहा जाता है, एक सर्जिकल प्रक्रिया है, जिसमें क्षतिग्रस्त कॉर्निया को डोनेटेड कॉर्नियल टिश्यू द्वारा बदल दिया जाता है। रिसर्च कहती है कि एक कॉर्निया दो लोगों को नेत्र ज्योति दे सकता है।

कौन कर सकते हैं नेत्रदान

किसी भी उम्र के पुरुष या महिला आंख दान कर सकते हैं। हाइपरटेंशन, डायबिटीज, अस्थमा, ट्यूबरक्यूलोसिस आदि से पीड़ित और चश्मा पहनने वाले और मोतियाबिंद का ऑपरेशन करा चुके लोग भी नेत्रदान कर सकते हैं। रेबीज, कैंसर, ब्रेन ट्यूमर, सिफीलिस, हेपेटाइटिस बी और सी, मेनिंनज्यायटिस रोगी नेत्रदान के लिए अपवाद हैं। आइ डोनेशन प्रोसेस में नेत्रदान करने वाले व्यक्ति की मृत्यु के तुरंत बाद नजदीकी आई बैंक को तत्काल सूचित करें। मृतक की आंखों को बंद करें, उसकी आंख में नमी बनाए रखने के लिए आंखों के ऊपर नम कपास रखें, उस पर लगातार साफ-सुथरे पानी की बूंदों का छींटा डालते रहिए। आंखों को संक्रमण से बाहर रखने के लिए एंटीबायोटिक बूंदों का उपयोग कर सकते हैं।

नेत्रदान कब और कैसे?

मृत्यु के बाद 6 घंटे के अंदर मृत्यु की सूचना आई हॉस्पिटल, आई बैंक या प्रमुख सरकारी नेत्र विशेषज्ञों को फोन से देनी होती है। नेत्र विभाग का कोई डॉक्टर या प्रशिक्षित आई बैंक टेक्निशियन मृत व्यक्ति के घर जाकर मृतक की आंख का कॉर्निया निकालकर खाली जगह पर आर्टिफिशियल कांटेक्ट लैंस लगा देता है ताकि नेत्रदान करने वाले का चेहरा विकृत ना दिखे। पूरी प्रक्रिया में 15 से 20 मिनट का समय लगता है। यह प्रक्रिया पूरी निःशुल्क है। अगर मृतक व्यक्ति ने अपना पंजीकरण नहीं करवाया है तो उसकी आकस्मिक मृत्यु के बाद उसके परिजन या कोई निकट संबंधी आई बैंक को जानकारी देकर सारी प्रक्रिया को पूरा करके मृतक व्यक्ति का नेत्रदान करवा सकते हैं। यह प्रक्रिया पूरी तरह से लीगल है। जीवित व्यक्ति वर्तमान में नेत्रदान नहीं कर सकता लेकिन नजदीकी आई बैंक में जाकर नेत्रदान करने की इच्छा जताकर एक फॉर्म भरकर रजिस्ट्रेशन करवा सकता है। नाम का पंजीकरण कराने में सिर्फ 2 मिनट का समय लगता है।

क्या उतार–चढ़ाव लाएगा
राहु-केतु का राशि परिवर्तन

वैसे तो राहु-केतु छाया ग्रह हैं, लेकिन वे अपने शुभाशुभ स्थिति में ऐसे अकल्पनीय प्रभाव दिखाते हैं, जो जीवन में बड़ा उतार-चढ़ाव लाते हैं। राहु-केतु क्रमशः मिथुन व धनु राशि से आगामी 23 सितंबर को राशि परिवर्तन कर वक्र गति से क्रमशः वृष व वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। आईये देखें इन छाया ग्रहों का यह परिवर्तन आपके जीवन में क्या परिवर्तन लाएगा।

डॉ. महेश शर्मा, जयपुर

राहु-केतु बहुत ही आकस्मिक रुप से ऐसे ऐसे शुभाशुभ फल प्रदान करने की क्षमता रखते हैं, जिनके विषय में पूर्व अनुमान लगाना लगभग असंभव है। कुछ परिस्थतियों वश इनके द्वारा शुभाशुभ फल भी प्रदान किये जाते हैं। योगकारक राहु राजनीति में प्रवेश दिलाता है, धार्मिक यात्रायें व पुण्यकार्य कराता है। केतु अशुभ होते हुए भी राहु जैसा क्रूर व निष्ठुर नहीं है, अन्य शुभ योग हों तो यह जातक को आध्यात्मवाद की ओर ले जाता है। अशुभ केतु समस्त बने हुए काम ऐन मौके पर बिगाड कर परिस्थितियां पलट देता है। मानव जीवन की घटनाओं को अत्यधिक प्रभावित करने वाले तमो ग्रह राहु-केतु 23 सितम्बर, 2020 को वक्र गति से राशि परिवर्तित कर मिथुन, धनु से क्रमशः वृष, वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। राहु-केतु सदैव एक साथ ही वक्र गति से राशि परिवर्तन करते हैं और एक राशि में लगभग 18 माह तक रहते हैं। गोचर फलित के अनुसार राहु-केतु आपकी राशि से 3, 6, 10 एवं 11वें स्थान पर होते हैं, तो शुभ फल देते हैं। अन्य स्थानों में इनका भ्रमण कष्टकारी होता है। अतः वृष राशिगत राहु कर्क, सिंह, धनु तथा मीन राशि के लोगों को शुभफल प्रदान करेगा, वहीं वृश्चिक राशिगत केतु, मिथुन, कन्या, मकर तथा कुंभ राशि के व्यक्तियों के लिए शुभकारक होगा। परन्तु ध्यान रखें गोचर में राहु-केतु द्वारा प्रदत्त शुभाशुभ फल इनके द्वारा जन्मकुंडली में निर्मित योगायोग एवं इनकी दशा-अन्तर्दशा के अधीन होते हैं। राहु-केतु के राशि परिवर्तन के कारण इनके शुभाशुभ फलों से प्रायः सभी राशियां प्रभावित होंगी। इनके मंत्र जप, दान, गजेंद्र मोक्ष, गणेश एवं अपराजिता स्त्रोत के पाठ करने से इनकी अशुभता में कमी आकर शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

पुराणों में राहु-केतु

राहु-केतु का स्वरुप-राहु एवं केतु आकाशीय पिंड नहीं हैं। अतः इन्हें छाया (आभासीय) ग्रह के रुप में माना जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन के पश्चात् जिस समय मोहिनी रुपी भगवान विष्णु देवताओं को अमृत पिला रहे थे उसी समय दैत्य सेनापति राहु देवता का वेष धारण कर उनके बीच आ बैठा और उसने भी अमृत पान कर लिया। परंतु सूर्य और चंद्रमा ने उसे पहचान कर भेद खोल दिया। भगवान विष्णु ने उसी समय सुदर्शन चक्र से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। अमृत पान के कारण वह अमर हो गया था और ब्रह्माजी ने इसी कारण उसे ग्रह बना दिया। उसका सिर राहु और धड़ केतु के नाम से विख्यात हुआ। राहु की माता का नाम सिंहिका, पिता विप्रचिति तथा नाना हिरण्यकश्यप थे।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आईने में

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ये चन्द्रमा एवं क्रांतिवृत्त के कटाव बिन्दु हैं। अपने क्रांतिवृत्त या परिक्रमा पथ पर पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण करता हुआ चन्द्रमा पृथ्वी के भचक्र को एक बिन्दू पर काटकर ऊपर की ओर चला जाता है। इसे ''नार्थ नोड ऑफ द मून'' कहा जाता है इसी कटाव बिन्दु को राहु नाम दिया गया है। पाश्चात्य ज्योतिष में इसे 'ड्रेगंस हेड' कहते हैं। केतु की स्थिति इस कटाव बिन्दु के ठीक सामने 180 अंश पर मानी गई है, इसलिए केतु की स्थिति राहु से सप्तम भाव में दर्शायी जाती है। इसे 'ड्रेगंस टेल' कहा जाता है।

क्या है इनकी प्रकृति

गोचर फलित निर्भर करता है ग्रह की प्रवृति पर। मोहजनित दुःखों का कारक राहु अपनी प्रवृति से एक अशुभ, नीच, दुष्ट तथा पाप ग्रह है। यह आकस्मिक दुर्घटना, विपदा, भ्रष्टाचार, निंदित कार्य, अनाचार, चोरी, पाप, कठोर संभाषण, जुआ, विश्वासघात, छल, षडयंत्र आदि का कारक

है। विष, ढोंग, पाखंड, भ्रम, कामविकृति, नशा, जेल, आत्मघात, वैधव्य तथा विदेश यात्रा का विचार भी राहु से किया जाता है। योग कारक राहु राजनीति में प्रवेश दिलाता है तथा धार्मिक यात्राओं का कारक है। रोग ज्योतिष के अनुसार राहु चित्त भ्रम, भय, डिप्रेशन, फ्रस्टेशन, सनक, अस्थिरोग, फ्रैक्चर, वायुरोग, दुर्घटना, चर्म रोग, स्नायु रोग, हृदयाघात, आत्महत्या आदि देता है। राहु संशय उत्पन्न करके रोग को ठीक-ठीक डाइग्नोस नहीं होने देता है। मोक्ष की मर्मज्ञता का कारक केतु अशुभ होते हुए भी राहु जैसा क्रूर व निष्ठुर नहीं है। अन्य शुभ योग हों तो यह जातक को आध्यात्मवाद की ओर ले जाता है। इसे तमस, ध्वजा और शिखि के नाम से भी जाना जाता है। घटनाओं में आकस्मिक परिवर्तन केतु का प्रधान गुण है। एक ओर यह जातक को निम्नतम कृत्य कराकर घृणित व निंदित बनाता है तो दूसरी ओर ज्ञान की खोज में उन्मुख करके आध्यात्मिकता की ओर झुकाव बनाता है। केतु शारीरिक व मानसिक मलिनता, बंधन, दरिद्रता, आकस्मिक संकट, भूख, कष्ट, तंत्र, जादू-टोना, अपमृत्यु, कपट, मोक्ष आदि का कारक है। राहु की भांति केतु भी पृथकता का प्रभाव देने वाला ग्रह है। रोग ज्योतिष के अनुसार चेचक, पेटदर्द, माइग्रेन, साइटिका, खुजली, फोड़े-फुंसी, कुष्ठ, चर्मरोग, गलना, सडना, विषदंश आदि केतु के द्वारा देखा जाता है। अशुभ केतु समस्त बने हुए काम ऐन मौके पर बिगाड कर परिस्थितियां पलट देता है।

जन्मकुंडली में राहु-केतु का प्रभाव

फलित ज्योतिष के अनुसार राहु-केतु बहुत ही आकस्मिक रुप से ऐसे ऐसे शुभाशुभ फल प्रदान करने की क्षमता रखते हैं जिनके बिषय में पूर्व अनुमान लगाना लगभग असंभव है। कुछ परिस्थितिवश इनके द्वारा शुभफल भी प्रदान किये जाते हैं। राहु-केतु का भौतिक स्वरुप नहीं होने के कारण ये छाया ग्रह हैं। अतः जन्मकुंडली के जिस भाव में बैठेंगें उसके अनुरुप तथा जिस ग्रह के साथ हों, वह ग्रह जिस भाव का स्वामी होगा उसके अनुरुप फल प्रदान करते हैं। इसी कारण राहु-केतु केन्द्र या त्रिकोण में केन्द्रेश और त्रिकोणेश (1,4,5,9,10) के साथ बैठेगें, तो योगकारक होंगें। उदाहरणार्थ कर्क लग्न में पंचम या दशम भाव में मंगल के साथ राहु या केतु बैठे हों तो श्रेष्ठ फल प्रदान करेंगें। इसी प्रकार त्रिषडायश (3,6,11) के साथ बैठने पर अशुभकारक तथा 2, 7, 8, 12वें भाव के स्वामी के साथ मारक हो जायेंगे। ज्योर्तिग्रह सूर्य-चंद्रमा से राहु-केतु की प्रबल शत्रुता के कारण जन्मकुंडली में इनका संबंध अनिष्टकारी होता है। इस संबंध से ये सूर्य, चन्द्रमा के शुभत्व को नष्ट करके जीवन में निराशा पैदा करते हैं। जब मन का कारक चन्द्रमा राहु से कष्टग्रस्त होता है तब व्यक्ति बिशेष अपने श्रेष्ठतम अस्तित्व का अर्न्तआत्मा से सम्पर्क बनाने में असफल होता है। अतः उस व्यक्ति में भावनात्मक बवण्डर की हलचल तथा इच्छा अनिच्छा की दशा स्वाभाविक बन जाती है। राहु-केतु से जब सूर्य कष्टग्रस्त होता है तब व्यक्ति प्रत्यक्षरुप से अपने न्यायसंगत अधिकार से वंचित रहता है। ऐसी परिस्थिति में जातक जड़वादी, आदर्शविहीन तथा असंवेदनशील होता है और वह अपनी अमानुषी प्रवृति में ही लिप्त रहता है।

अनिष्ट राहु की शांति

राहु की प्रिय वस्तुओं गेंहूं, उडद, सप्तधान्य, अभ्रक, नारियल, काला पुष्प, चांदी का सर्प, गोमेद आदि का दक्षिणा सहित दान करें। राहु के बीज मंत्र 'ऐं ह्रीं राहवे नमः' के 18000 जप रात्रिकाल में करें तथा दशमांश का हवन करें। गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना शुभफलदायक रहेगा। राहु गायत्री मंत्र।। 'ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नोः राहुः प्रचोदयात।। का जप करें।

केतु के अरिष्ट की शांति

केतु की वस्तुओं तिल, तेल, कालीमिर्च, लोहा, सप्तधान्य, नारियल, लहसुनिया रत्न, धूम्र रंग के वस्त्र, कंबल, छाता, कस्तूरी आदि का दान करें, कुष्ठाश्रम में बर्तन व भोजन दान करें। केतु बीज मंत्र 'ह्रीं ऐं केतवे नमः' के 17000 जप रात्रिकाल में करें तथा दशमांश का हवन करें। गणेश स्त्रोत एवं अपराजिता स्त्रोत का पाठ करना लाभकारी रहेगा। केतु शांति के लिए गायत्री मंत्र।। "ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नोः केतुः प्रचोदयात"।। का जप करें।

राशिगत प्रभाव

मेष- द्वितीयस्थ राहु के कारण घरेलू अशांति, कार्य व्यापार में हानि तथा स्वास्थ्य बाधा बढ़ सकती है। आठवां केतु शारीरिक कष्ट तथा व्यय वृद्धि के योग पैदा करेगा।

वृष- लग्नस्थ राहु के शुभ परिवर्तन से आर्थिक पक्ष में सुधार, धार्मिक कार्य होंगे। सप्तमस्थ केतु से नौकरी व्यापार में लाभ, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति तथा मंगल कार्य के योग बनेंगे।

मिथुन- राहु के व्यय भाव में आने से शत्रु रोग से कष्ट एवं आर्थिक घाटा होगा, परन्तु छटे स्थान का केतु शत्रु पीड़ा से निजात दिलाएगा परन्तु शारीरिक कष्ट तथा व्यय वृद्धिकारक रहेगा।

कर्क- व्यापार में उन्नति तथा लाभ, दान पुण्य कर्म, किंतु संतति को कष्टकारक। पंचम केतु के प्रभाव से अचानक कार्यसिद्धि तथा मंगल कार्य योजनाएं बनेंगी।

सिंह-दशमस्थ राहु के कारण कार्य-व्यवसाय में सफलता तथा राज्य सत्ता से लाभ होगा। वहीं चतुर्थ स्थान का केतु शत्रुभय, माता पिता को कष्टकारक, रोग तथा स्त्री एवं संतान के लिए हानिकारक रहेगा।

कन्या- राहु समस्यायों का समाधान, मान सम्मान, भूमि, भवन, वाहन का लाभ। केतु भी कार्य विस्तार, नौकरी में प्रगति तथा सुख, यश देगा।

तुला- आपकी राशि से आठवां राहु कष्टकारक तथा आर्थिक तंगी देगा। द्वितीयस्थ केतु के प्रभावस्वरुप अकारण ही अपवाद, गृहक्लेश, आय में कमी तथा शत्रु से हानि हो सकती है।

वृश्चिक- स्थान परिवर्तन, भूमि भवन का लाभ, मान सम्मान की प्राप्ति के योग बनेंगें। केतु के प्रभाव से खर्च में बढोतरी, स्वास्थ्य शिथिलिता, शत्रुत्व में वृद्धि।

धनु-कार्यसफलता, धनलाभ, पदमान की वृद्धि। बारहवें केतु के प्रभाव से समाज विरोधी कार्य तथा मनोमालिन्यता में वृद्धि के योग।

मकर- पंचम राहु से अचानक कार्यसिद्धि, नैतिक प्रेम संबंधों में मधुरता, मंगल कार्य होंगें। ग्यारहवें केतु के कारण कार्यव्यवसाय में लाभ तथा आरोग्य प्राप्ति संभव।

कुंभ- राहु के चौथे स्थान पर आने से मानसिक अशांति, भाग्यावरोध, रोग प्रकोप, शत्रुवृद्धि तथा सिर, नेत्र में कष्ट का कारण बनेगा। वहीं दशम स्थान का केतु राज्य व्यवसाय में लाभकारी बनेगा।

मीन- आय के स्त्रोत बढ़ेंगे, वाद-विवाद में विजय, भूमि भवन का लाभ। केतु के भाग्य स्थान से गुजरने के कारण धार्मिक कार्य तथा यात्राऐं होंगी, आर्थिक समस्यायों का समाधान होकर लाभ मिलेगा।

जियो तो ऐसे जियो

उम्र के उत्तरार्द्ध में हम नकारात्मकता से ओत-प्रोत रहते हैं। आखिर क्यों? आखिर इस उम्र में हमारे पास खोने के लिए क्या है? और हमने जितना खोया उससे अधिक पाया भी है। आखिर क्यों है, यह निराशा?

कल्पना गगडानी, मुंबई

'क्या हम वो आखरी पीढ़ी हैं? नहीं हम वो पहली पीढ़ी हैं।

आए दिन वाट्सएप पर कुछ ऐसे मैसेज आते हैं और हम अर्थात वरिष्ठ नागरिक पलक झपकते उसे फारवर्ड करते हैं और फिर निराशा के अंधेरे में बुदबुदा कर कहते हैं 'हम तो आखिरी पीढ़ी हैं' और शुरू करते हैं मातम का सिलसिला 'दुःखी होने का सिलसिला' रोने और रूलाने का सिलसिला। बढ़ती उम्र का भय इसमें तड़का लगाता है और निराशा की तस्करी में हमें परोसता है। हम अपने समस्त हम उम्र साथियों के साथ उलाहने के रूप में ऐसे दूसरी पीढ़ियों को भी सुनाने लगते हैं। बातचीत का सिलसिला शुरू करते हैं 'हमारे जमाने में' की शान से और समाप्त होता है बुरा-सा मुंह बनाकर नकारात्मक सोच और शब्दों के साथ क्यूं हैं हम में ये निराशा?

'मृत्यु का सामना करने से कतरा रहे हैं? या जीवन के घूटने का भय सता रहा है?' जहां तक मैं समझती हूं मृत्यु के सामने होने का डर नहीं होगा, क्योंकि हम उसके बारे में जानते ही नहीं हैं। हमें नहीं मालूम है कि क्या होगा और जब हम रहेंगे ही नहीं तो कैसे कुछ होगा?

पढ़े लिखे हम लोग अब यह भी समझ गये हैं कि गरुड़ पुराण में लिखे और पंडितों द्वारा हॉरर मूवी की तरह दिखाए वो सारे किस्से भी झूठे ही हैं क्योंकि दूसरे पुराणों ने ही हमें यह भी बताया है मृत्यु के रहस्य को कोई नहीं समझा। विज्ञान ने बता दिया कि शरीरी पुर्जों की कार्यशक्ति खत्म हुई इसलिये उसके साथ उसका सब कुछ खत्म हो गया।'तो हम क्यों दुखी हों? या हम क्यों ना सुखी हों?'

जब से होश संभाला दौड़ पड़ते रहे, दौड़ में बने रहने के लिए या दौड़ में दूसरों से जीतने के लिये मृगतृष्णा की तरह बेतहाशा भागते रहे। किस्मत वाले हैं हम कि हिरण की तरह पानी के लिये दम नहीं तोड़ा। हमारे हिस्से का पानी हमें मिल भी गया और पीकर तृप्त भी हो गये। 'तृप्ति के बाद तपिश क्यूं?' आराम के दिन हैं दौड़ खत्म हुई, फल जो न हो हमारे हाथ में हैं। इच्छाओं ने तंग करना छोड़ दिया है। बड़ी चाहतें अब बची नहीं, भोजन ज्यादा चाहिये नहीं, कपड़े जितने वह पूरे हैं, एक मुकाम मिल ही गया है जो पेड़ बोया था वह बोये हुए बीज के अनुरूप और उसको मिली खाद-पानी के परिणाम स्वरूप फलफूल गया है। भागदौड़ करते-करते जो वक्त कम पड़ रहा था वह वक्त अब बांह फैलाये हमारे पास आया है। मनचाही चीज जब पास आई है, मन चाही मिठाई मिली है तो आराम से चखिये, चखाइये और उसके स्वाद का आनंद उठाइये।

'क्या आनंद उठाना आपको अच्छा नहीं लगता? या आनंद उठाना आपको आता ही नहीं है?' पूरी जिंदगी जिन चीजों से बेहतर पाना चाहते थे, जिन सामानों को बदलना चाहते थे, जिन व्यवस्थाओं से व्यथित होते थे, जिन अविष्कारों की आवश्यकता महसूस करते थे, आज जब वह सब मिल गया, क्यूं सोचें कि हम आखरी पीढ़ी हैं? क्यूं नहीं सोचते और सोच सोच कर खुश होते हैं कि हम वो पहली पीढ़ी हैं जिसने विकास और बदलाव को जितनी तेजी से बदलते देखा हमसे पहले किसी ने अपने जीवन की इस गति का आनंद और चमत्कार देखा है। 'हम वो पहली पीढ़ी हैं.....।' जिसने मिट्टी के घर पोते, पक्के एक दो मंजिलें मकान भी देखे, मल्टी स्टोरी, फाइन प्लास्टर, सुंदर इंटीरियर कांच के महल भी बनाए। जिसने न ही कुए से पानी भरा, हैडपंप चलाये और चौबीस घंटे घर के हर नल से पानी पाया। जिसने सायकल के पैडल मारे, स्कूटर दौड़ाया, कार एक से एक बेहतर जिंदगी भी चलाई।

जिसने रेलगाड़ी की सीट के लिये लाइन लगाई और वायुयान में शान से जिसे किसी ने सीट पे बैठाया। जिसने सात समंदर पार के कभी गाने गाये तो सात समंदर पार के चक्कर लगाने का कुछ घंटों का खेल भी खेला। जिसके लिये टेलीग्राम से संदेश भेजना शान थी, उसने ट्रंक कॉल, लाइटिनिंग कॉल, पीसीओ सेल पर दिन भर अपनों की शक्ल देख जी भर बातें की। जिसने 200 रुपये के मनीआर्डर के लिये चार घंटे लाइन लगाई और अब घर बैठे चार मिनट में लाखों ट्रांसफर कर लेता है। जिसने महीनों लाइब्रेरी में किताब के लिये अर्जी दी, समाचार जानने के लिए बेचैनी से सुबह के अखबार का इंतजार किया और अब मोबाइल पर विश्व की घटी घटना कुछ पल में जान लेता है और लाइब्रेरी हाथ में लिये घूम लेता है।

कुछ उदाहरण मैंने बताये हैं। आप सोचकर देखिये। सौ दो सौ ऐसी बातें मन को गुदगुदा जायेंगी सपने में भी नहीं सोची थी जैसी जिंदगी वह साकार हो सामने खड़ी है। अपने गिरेबान में झांकिये, क्या आपने बदलाव नहीं लाया था? धोती छोड़ पेंट हमने शुरू की थी? लहंगे से साड़ी हमने पहनी थी। चूल्हे की रोटी से सिगड़ी, गैस और दाल दलना छोड़ बाजार से दाल हमने खरीदी थी?

ये क्या सोच रहे हैं हम?

हमने जो बदला वो विकास था, समय की मांग थी। पूरी जिंदगी हमने खूब मेहनत कर ली। अब ये जो वरिष्ठ होने का मेडल मिला है तो वरिष्ठता दिखानी है। नौकरी करने वाले को हर माह तनख्वाह मिलती है जिससे वो खींचतान कर जिम्मेदारी निभाता है पर साल में एक बार जो बोनस मिलता है उसकी वो पूरे साल आस लगाता है। उससे वो अपने शौक और सपने पूरे करता है। जीवन का ये समय ईश्वर का दिया बोनस है। इस बोनस से मजा कीजिये। रोना छोड़िये, हमें जो परिस्थिति मिली हमने जी ली। अगली पीढ़ी को जो मिलेगी वो जी लेगी। हमने अपनी परवरिश से उसे उस लायक बना दिया है। अब अपनी दौड़ उसे उसके ढंग से दौड़ने दें। हम तो खुशियों से मिले इन बचे सालों को जी भर जियें, जब तक हैं, और जब हम ही नहीं तो गम ही नहीं। जीवन की आपाधापी में जो छूट गया अब उसे पकड़ें। जीवन बचे शौक पूरा करने के लिये बचा है। जी भर के जीयें। वर्तमान में जिये, भूत को याद करोगे तो डरोगे और जो भविष्य आया नहीं, उसकी सोच नहीं, नहीं, नहीं।

जीवन की संध्या अर्थात जीवन का उत्तरार्ध या कहें वृद्धावस्था का नाम आते ही हर कोई सिहर उठता है। कारण है, इसका अत्यंत भयावह रूप में अभी तक अभिशाप की तरह प्रचारित होना। जबकि देखा जाए तो यह अभिशाप नहीं बल्कि वरदान है। यह हमारे हाथ में है कि हम इसे क्या बनाते हैं? आईये जानें कैसे बनाएं अपनी जीवन संध्या को सुखद?

राजश्री राठी, अकोला

कैसे सुखद हो हमारी जीवन संध्या

परिवार ही हमारे प्राणों का आधार है। प्रत्येक मानव स्थायी सुख चाहता है किंतु यह शाश्वत सत्य तभी संभव है जब हम जीवन जीने की कला को जान लें। जीवन जीना और जीवन को जानना दोनों अलग-अलग बातें हैं। जीवन को जीते तो सभी हैं पर जानते विरले ही हैं। समय के साथ-साथ मानव की जरूरतें बदल जाती हैं। वर्तमान दौर की भागमभाग भरी जीवन शैली में अधिकांश पारिवारिक सदस्यों में समय का अभाव होता है। कभी पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने में, तो कभी नई पीढ़ी और हमारे आदरणीय के विचारों में अंतर होने से बुजुर्ग वर्ग अपने आप को एकांकी पाते हैं। हमारे बुजुर्ग समुदाय को लगता है जीवन का अंतिम पड़ाव अभिशाप है। पर वास्तविकता में देखा जाए तो 'जीवन का यह उत्तरार्ध अभिशाप नहीं वरदान है।

बदलाव को करें स्वीकार

बाल्यावस्था का काल जिस तरह चिंतामुक्त होता है, उसी तरह जीवन का उत्तरार्ध भी अगर दृढ़ इच्छाशक्ति अपना ली जाए तो तनाव रहित हो सकता है। आयु के अनुरूप मानव की प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। समय गतिवान है, कल तक जो सबकी जरूरत थीं, जिनके निर्णयों पर ही सारे कार्य होते थे, हो सकता है, आज स्थिति में बदलाव आया हो। इस बदलाव को हमें सहर्ष स्वीकारना होगा। यह सुख के स्रोत का सोपान है। शिशु को बाल्यावस्था में केवल मां का सान्निध्य सुहाता है। धीरे-धीरे जीवन में परिवार, मित्र, रिश्ते, हमसफर यह सब जुड़ते हैं और मानव के अस्तित्व की अहमियत विस्तारित होती जाती हैं। प्रसारण और आकुंचन का पाठ हमें घोंघा से भली प्रकार सीखने को मिलता है। वह आवश्यकता पढ़ने पर ही प्रसारित होता है अन्यथा अपने आपको सिमट लेता है। जीवन के इस सत्य को हम भी अपना लें तो काफी समस्याओं पर विराम लग जाएगा। जीवन के उत्तरार्ध में हम जितना हो सके दायित्व निर्वहन का बोझ हल्का करते हुए चलेंगे तो जीवन पथ की राह का आनंद ले पाएंगे। साथ ही अधिक अपेक्षाओं की उम्मीद रखना भी दुःख का मूल कारण है। परिवर्तन संसार का नियम है। यह जानते हुए भी हमारी अपेक्षा रखने की परंपरा पर विराम नहीं लग पा रहा।

अधूरे सपनों को लगाएं पंख

जीवन की आपाधापी के चलते हुए समय के अभाव में बहुत कुछ पीछे छूट जाता है। युवावस्था में कॅरियर, फिर विवाह और दायित्वों के बोझ तले हम इतना दब जाते हैं कि चाहकर भी अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में असमर्थ रहते हैं। यह अवस्था अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए ईश्वर द्वारा मिली हुई सुनहरी सौगात है। इस अवस्था में समय अभाव की दिक्कत ना रहने से हम स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। व्यायाम, सुबह की सैर, बागवानी, अध्यात्मिक क्रियाकलापों में सहभागी होने हेतु पर्याप्त समय आसानी से निकल पाते हैं। अपने हम उम्र साथियों के साथ समय व्यतीत करने से तरोताजा भी महसूस होता है और एकांकीता से निजात पाई जा सकती है। जब तक स्वास्थ्स सृदृढ़ हो स्वालंबी रहे अपने कार्य स्वयं करने से सेहत भी अच्छी रहेगी साथ ही परिवार को सहयोग भी मिलेगा। परिवार में छोटे-छोटे बच्चों के साथ समय व्यतीत करने से आपके अनुभवों द्वारा जीवन का पाठ सीखने से उनकी राह भी आसान होगी। उन्हें बोधात्मक कहानियां सुनाए, उनके भीतर परोपकार के बीज बोएं। साथ ही इस युग के बच्चों से तकनीकी ज्ञान सिखा जा सकता है, जिससे घर बैठे अनेक मनोरंजन के कार्यक्रम उपलब्ध हो सकते हैं। बच्चे माता-पिता से अधिक दादा-दादी के करीब होते हैं।

अत्यधिक हस्तक्षेप व सलाह नहीं

21वीं सदी में जन-मन में जो स्वतंत्रता की लहर दौड़ रही है, हर कोई इसमें शामिल हैं, हर व्यक्ति की अपनी योजनाएं तय होती हैं और हर एक को अपनी सोच सही लगती है। किसी को भी अपने निजी कार्यों में हस्तक्षेप आज के दौर में पसंद नहीं आता। पूछने पर, अत्याधिक जरूरत हो, तभी सलाह दी जाए तो बेहतर होगा। जिस से हमारा भी आदर बना रहता है। भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान में हर एक की जिंदगी में अलग-अलग पड़ाव आते हैं। जरूरी नहीं जो संघर्ष आपने किया हो वह आने वाली पीढ़ी को भी करना पड़े इसलिए यह चर्चा जितनी कम हो उतना बेहतर होगा। हर आयु वर्ग से कदमताल मिलाकर चलें, तो पारिवारिक सदस्य स्वयं हर जगह आपकी उपस्थिति चाहेंगे। संवादों का आदान-प्रदान जब जारी रहेगा तो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को टॉनिक मिलते रहेगा जो स्वास्थवर्धक होगा। अपना वर्चस्व रखने से अच्छा होगा, मित्रवत व्यवहार रखे इससे परिवार से आपस संबंधों में पारदर्शिता रहेगी झूठ को स्थान नहीं मिलेगा और दूरदृष्टि से देखा जाए तो रिश्तों की प्रगाढ़ता ही जीवन की अनमोल पूंजी है। अतः परिवार को स्नेहरूपी वर्षा से भिगोते रहिये फिर आपके बगिया के पुष्पों की महत आपके उत्तरार्द्ध को सुगंधित करते रहेगी।

''पुरानी व नई पीढ़ी के बीच वैचारिक टकराव''

जिम्मेदार कौन?

''कल - आज और कल'' यह बीते समय की फिल्मी कहानी नहीं बल्कि घर-घर की कहानी है। नई व पुरानी पीढ़ी के बीच वैचारिक टकराव होता ही रहा है और वर्तमान दौर में तो यह और भी बढ़ गया है। इससे अच्छे भले सुसंस्कृत परिवारों की खुशियाँ भी कम हो जाती हैं। ऐसे में यह विचारणीय हो गया है कि आखिर पुरानी व नयी पीढ़ी के बीच वैचारिक टकराव क्यों होता है? आखिर इस वैचारिक टकराव के लिये जिम्मेदार है कौन? समाज ही नहीं बल्कि पारिवारिक व्यवस्था को आदर्श व सुखद बनाये रखने के लिये इस ज्वलंत विषय पर चिंतन अनिवार्य हो गया है। आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

थोड़ा-थोड़ो दोनों झुकें

भारतीय परिवारों में तीन से चार पीढ़ियां एक छत के नीचे रहती हैं। हर पीढ़ी स्वयं को शत-प्रतिशत सही समझती है। कभी-कभार आपसी वैचारिक मतभेद विकराल रूप ले लेते हैं। परिवार में सामंजस्य बनाए रखने के लिए हर पीढ़ी का सहयोग आवश्यक है। सिर्फ एक पीढ़ी से ही सर्वदा परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की उम्मीद करना गलत है। नव-पीढ़ी में जोश और जिज्ञासा भरपूर होती है। समय के साथ दौड़ लगाती इस पीढ़ी पर लगाम कसना टेढ़ी खीर है। घर के बड़े-बुजुर्ग इनके कार्यकलापों पर नजर रखते हुए नव-पीढ़ी से दोस्ताना संबंध बनाए रखे और जब कभी इनके कदम डगमगाए तो समझदारी और सूझबूझ के साथ इनका मार्गदर्शन करें। उन पर जिम्मेदारियां थोपने की बजाय उनको जिम्मेदारियां सौंपें। चूंकि समय के साथ-साथ परिवर्तन होने से कार्य अब आसान हो गए हैं जिनका असर रहन-सहन पर भी पड़ता है। आज के बच्चे कुएं के मेढ़क की तरह नहीं हैं, वो तो पूरे आकाश को नापना चाहते हैं। उनकी जिज्ञासा या ज्ञान भी सीमित नहीं है। पर उनकी बंधनमुक्त और खुली सोच को बड़े-बुजुर्गों अपनाना नहीं चाहते, घर के बुजुर्गों में बदलाव लाना काफी मुश्किल होता है। आज की पीढ़ी को थोड़ा धैर्य और संयम रखकर अपनी बात बड़ों को समझानी होगी, जिद् तो बनती बात को भी बिगाड़ सकती है। हम चाहे जितने भी आधुनिक और डिग्रीधारी हो जाएं पर कभी अपने पारिवारिक संस्कार और संस्कृति का दामन ना छोड़े, अगर यह बात आज की पीढ़ी गांठ बांध लें तो परिवार की एकता और अखंडता पर कभी आंच नहीं आएगी। थोड़ा झुकें-थोड़ा झुकाएं, सहर्ष पारिवारिक परिवर्तन अपनाएं।

■ **सुमिता मूंधड़ा,** मालेगांव

समय के साथ बदलाव जरूरी

पीढ़ी के विचारों में टकराव में अहम भूमिका 'समय-सोच-संयम' की है। 21वीं सदी में जमाने की रफ्तार हर 2-3 वर्षों में बदल रही है। इसलिये समय के साथ बदलना जरूरी है। विचारों का मतभेद आज से नहीं आदिकाल से चला आ रहा है, बस तरीके बदले हैं। पुरानी पीढ़ी सोचती है, हमारे तजुर्बे और अनुभव से ही वर्तमान युग में सब कार्य कर लेंगे। नई पीढ़ी सोचती है, हमारे पास तकनीक है, तुरंत हर कार्य कर लेंगे। पर वो आगे पीछे बिल्कुल नहीं सोचते। लेकिन अगर एक ही कार्य दोनों को करना है, तो दोनों को अपनी सोच मिलानी होगी। तब वे अपनी कल्पना के आकार को साकार बेहतरीन तरीके से कर सकेंगे। पुरानी पीढ़ी कछुवे की चाल चलती है। वो सोच समझ कर हर काम करना चाहते हैं। नई पीढ़ी खरगोश की चाल चलती है। वो समय के साथ चलना पसंद करते हैं। इसमें कभी-कभी हड़बड़ी में गड़बड़ी भी हो जाती है। लेकिन अगर कछुआ और खरगोन साथ में कदम से कदम मिलाकर चलें तो समय से पहले अपने मुकाम तक पहुंच जाएंगे। याद रखें पुरानी पीढ़ी के पास संयम, सहनशीलता है, मगर वो अपने विचारों की चादर उन पर भी ओढ़ाना चाहते हैं। नई पीढ़ी के पास सहनशीलता धीरज नहीं है लेकिन आइडियाज की कमी नहीं है। लेकिन अगर संयम और सूझबूझ के साथ मिलकर वो कुछ करे तो एक अजूबा हो जाएगा।

■ **नीरा मल्ल,** पुरुलिया

अंगुली पकड़ के 'जो' चलते थे वे ही अब मुझे रास्ता दिखाते हैं

वैचारिक मतभेद और असहमति ये मानव जीवन शैली का हिस्सा ही है किंतु दो पीढ़ियों के बीच कोई वैचारिक मतभेद हों तो उसे हम जनरेशन गैप का नाम दे देते हैं। वस्तुतः पुरानी और नई पीढ़ी का संघर्ष नूतन और पुरातन सोच का संघर्ष है, जो कम अधिक मात्रा में सदैव रहता है किंतु वर्तमान युग में अचानक भारी परिवर्तन हो जाने के कारण टकराव की परिस्थितियां अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली हो गई है। इससे संघर्ष को और भी बल मिला है। दोनों पीढ़ियों में संघर्ष का एक कारण मानव जीवन में बढ़ती हुई संकुचित संकीर्णता भी है। विज्ञान के साथ-साथ मनुष्य की गति दूर-दूर तक संभव हो गई। उसी अनुपात में उसका हृदय संकुचित और संकीर्ण बन गया। दोनों पक्षों का अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना ही इसका एकमात्र उपाय है। नई पीढ़ी यदि बड़ों को अत्याधुनिक गतिविधियों से प्रेम से अवगत कराती रहे और धीरज के साथ परंपराओं का पालन करें तो वे इनके दिलों में राज कर सकते हैं। बुजुर्गों को भी चाहिए कि हर समय बच्चों को गलत ना ठहराऐं, इनके जीवन जीने के तौर-तरीकों में अनावश्यक हस्तेक्षप न करें तथा नये विचारों को सहजता से अपनाकर अपना स्थान व कद और भी ऊंचा उठा सकते हैं।

■ **राजकुमार जाजू,** समन्वयक माहेश्वरी मंडल, वर्धा (महाराष्ट्र)

वैचारिक मतभेद ठीक पर मनभेद नहीं

वैचारिक मतभेद स्वस्थ परिवार और समाज का द्योतक है, परंतु मनभेद बहुत ही कष्टदायक होता है। समय के साथ तारतम्यता तथा बदलते हुए परिवेश में हम अर्थात दोनों पीढ़ियां अपने आप को जितना जल्दी ढाल लेंगी और ढालती रहेंगी, तो समस्याएं कम होंगी परंतु स्वाभिमान सबसे बड़ा शत्रु है। हम बात-बात पर अपने स्वाभिमान के वशीभूत होकर भविष्य को बिगाड़े जा रहे हैं। इसका परिणाम ही है कि एकलवाद सिर चढ़कर बोलने लगा है। जबसे पति-पत्नी परिवार से अलग रहने लगे हैं, तब से वंश की बढ़ोत्तरी का ग्राफ एकदम से गिर गया है। बच्चा पैदा करें, तो उसे पालेगा कौन? क्योंकि माता-पिता तो साथ रहते नहीं और वहीं झूठे स्वाभिमान के चलते उनको बुलाते नहीं। निजी क्षेत्र में नौकरी करने वालों की कंपनियों को इससे कोई लेना-देना नहीं है कि आप परिवार नहीं बढ़ा पा रहे हो। उलटे उनके लिये तो ज्यादा अच्छा है कि आप उनको और अधिक कमा कर देने के लिये विवश है। कुंठा ग्रस्त रहना, घर में कोई बच्चा न होना, एक प्रकार का दंड ही है। आज की सामाजिक संरचना में मात्र धन की प्रधानता है, बाकी परिवार, संस्कृति, धर्म, तीज-त्यौंहार, सगे- सम्बन्धी सभी कुछ गौण होते जा रहे हैं!

■ **महेशकुमार मारू,** मालेगांव, नासिक

जीवनशैली में बदलाव जिम्मेदार

'ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती है दोनों हाथ मिलाने ही पड़ते हैं। तो यह निश्चित है कि पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी के बीच वैचारिक मतभेद में दोनों पीढ़ी ही जिम्मेदार होती हैं। परिवर्तन का युग है।आज की पीढ़ी बदलाव पसंद करती है और नये बदलाव से होने वाले फायदा या नुकसान का विचार किए बिना ही उसे आसानी से स्वीकार कर लेती है। नई पीढ़ी को रीति-रिवाज, परंपराएं व धर्मशास्त्रों की बातें दकियानूसी लगती हैं। वे उन पर तर्क करते हैं। नई पीढ़ी स्वतंत्र जीवन जीने के लिए अपनी खुशी तथा अपनी जरूरतों को प्राथमिकता देती है। पुरानी पीढ़ी संस्कृति, संस्कारों का पालन नियमबद्ध करना उचित समझती है तथा युवा पीढ़ी से भी सामंजस्य की उम्मीद रखती है। यह उम्मीद ही दोनों पीढ़ी के बीच टकराव की स्थिति बन जाती है। इस टकराव की खाई को गहराई से बचाने के लिए दोनों पीढ़ी को जीवनशैली में बदलाव लाना होगा तथा कदमताल करते हुए एक साथ चलना होगा।

■ **श्यामसुंदर लढ़ा,** कोलकत्ता

टकराव के हम स्वयं जिम्मेदार

वर्तमान में कल, आज और कल वाले परिवार तो रहे ही नहीं है। बीता हुआ कल और आज है या फिर आने वाला कल और आज। संयुक्त परिवार की भाषा ही बदल गई है। नई व पुरानी पीढ़ी के बीच विचारों के टकराव के जिम्मेदार कोई दूसरा नहीं हम खुद ही हैं। हम युवावस्था में अगर बुजुर्गों से तालमेल बिठाकर चलें, उनकी मानें और अपनी मनवाएं, तो आने वाले पीढ़ी टकराव देखेगी ही नहीं तो शायद कल वह भी अपने बुजुर्गों को मान-सम्मान देगी और बीच का रास्ता निकालेगी। दो पीढ़ियों में विचारों का टकराव कोई नई बात नहीं है लेकिन जब भी कोई बात मान-सम्मान के दायरे में की जाती है तो विचारों का टकराव होता है, रिश्तों का नहीं। शायद हम सभी जिम्मेदार हैं विचारों के टकराव के। अगर अभिमन्यु गर्भावस्था में चक्रव्यूह में जाना सीख सकता है तो प्रत्यक्ष देखने पर क्या असर होगा? मेरी बात कड़वी जरूर है लेकिन विचारणीय है। पुरानी पीढ़ी के अनुभवों को इज्जत देते हुए नई पीढ़ी और नई पीढ़ी के आधुनिकीकरण का विश्लेषण करते हुए उचित को अपनाते हुए पुरानी पीढ़ी चले तो टकराव शत प्रतिशत तो नहीं पर काफी हद तक कम हो जाएगा। जरूरत है आत्म मंथन की।

■ **नीरू लखोटिया,** विजयवाड़ा

मित्र की तरह सलाह जरूरी

हम कह सकते हैं कि पिता, पुत्र और पौत्र (पिता-पुत्र) किसी भी काल में एक उम्र के नहीं हो सकते। कल ये अंतर 20-25 वर्ष होता था आज 30-35 वर्ष और हो सकता कल ये अंतर 35-40 वर्ष हो। पीढ़ियों का अंतर विचारों का अंतर है। पचास, सौ वर्ष पहले संयुक्त परिवार में पीढ़ियों का व्यवसाय था। उसमें डिग्री या नौकरी का टेंशन नहीं था। छोटी उम्र में शादी व बच्चे हो जाते थे। पर उन्हें बड़ा करने एवं संस्कार देने की बिल्कुल फिक्र नहीं थी। घर के बड़े ये काम आसानी से कर लेते थे। टकराव तब भी था पर तब बड़ों का लिहाज व मान-सम्मान था। छोटे अपनी बात नम्रता और प्रेम पूर्वक समझाकर कहते थे। आज के डिग्रीधारी व टेक्नोलॉजी सम्पन्न बच्चे अपने अनुभव से ही सीखना चाहते हैं। इन्हें स्पेस चाहिए, दखलअंदाजी नहीं। हम सिर्फ दोस्तों के जैसे सुझाव दे सकते हैं वे ही दें। लगातार संवाद बनाकर हम इनके साथ आराम से सामंजस्य बना सकते हैं। परिवर्तन ही प्रगति की निशानी है। थोड़ा हम बदलें, थोड़ा बच्चे , हमारे अनुभव से सीखें। तभी हम मिल-जुलकर प्यार से रह सकते हैं।

■ **अनिता-अशोक सारडा,** मुंबई

वर्तमान परिस्थितियां भी जिम्मेदार

पुरानी पीढ़ी परिवार के स्तंभ हैं, तो नई पीढ़ी उम्मीद। वैचारिक टकराव के लिए हम किसी व्यक्ति विशेष को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते। जिम्मेदार हैं वर्तमान परिप्रेक्ष्य की पाश्चात्य संस्कृति, एकाकी परिवार, भागदौड़ भरी जिंदगी, वही पुरानी पीढ़ी की रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और बंधन आदि। इनसे दोनों पीढ़ी के विचारों में टकराव होता है। ये टकराव ही अनुशासनहीनता, बंटवारे, संस्कारविहीनता व लड़ाई - झगड़े को जन्म देता है। कोई स्वार्थवश तो कोई समय का हवाला देकर एक-दूजे की भावना को समझना नहीं चाहता। घर का वातावरण भी अहम भूमिका अदा करता है। पुरानी पीढ़ी अपने समय, संस्कारों, समाज, रिवाजों की दुहाई देकर पुरानी पीढ़ी को अपने सांचे में ढालना चाहते हैं वहीं नई पीढ़ी स्वतंत्रता, खुले विचारों तथा नए जमाने के साथ चलना चाहती है। कहीं जमाने की दौड़ में पीछे ना रह जाए। जब मैं सही तुम गलत की भावना जन्म लेती है तो विचारों का टकराव और परिवार में बिखराव निश्चित है। एक कदम नई पीढ़ी चलेगी और एक कदम पुरानी पीढ़ी तो हम इस समस्या को कुछ हद तक दूर कर सकते हैं। क्योंकि किसी भी समस्या का समाधान एक पक्ष की कोशिश से नहीं होता है। एक-दूजे के अच्छे विचारों का सम्मान करें एवं उन्हें अपनाने में ना हिचकिचाये।

■ **ज्योति माहेश्वरी,** कोटा राजस्थान

आर्थिक पारिवारिक संरचना में बदलाव जिम्मेदार

दोनों पीढ़ियों में हो रहे टकराव का मुख्य कारण हमारी सामाजिक आर्थिक और पारिवारिक संरचना में आया बदलाव है। परिवार के एक छोर पर वो लोग खड़े हैं जो परिवार की पुरानी व्यवस्था को चलाना चाहते हैं और दूसरी ओर वे जो अपनी व्यस्त जीवनशैली की वजह से परिवार में आधुनिक बदलाव चाहते हैं। पहले के लोग कमाने या करियर के लिए अपना घर नहीं छोड़ते थे, आज की युवा पीढ़ी अपने करियर, पढ़ाई और नौकरी के लिए घर से बाहर कदम रख रही है। इसकी वजह से परिवार में दूरियां बढ़ रही हैं। युवा पीढ़ी स्वतंत्र रहना चाहती है। वह चाहते हैं कि घर के बड़े लोग उनसे कोई सवाल-जवाब ना करें। वह अपने फैसले खुद कर सके। आजकल के पति-पत्नी दोनों ही कामकाजी हो गए हैं जिससे वह अपने बच्चों और बड़ों को समय नहीं दे पा रहे, और रिश्तो में मनमुटाव हो रहा है। घर के बड़े-बुजुर्गों का परिवार को जोड़े रखने में बड़ा हाथ होता है। याद रखें अगर आप युवा पीढ़ी की परेशानी को समझोगे तो वे आपके साथ अपने आप आएंगे।

■ **रेखा मोदी,** बड़ौदा, श्योपुर मप्र

समन्वय से ही संघर्ष समाप्त होगा

'पुरानी एवं नई पीढ़ी के मध्य वैचारिक मतभेद आज का नहीं है, यह वर्षों से चला आ रहा है। इसका सामना पूर्व में हमारे बड़ों ने किया था, भविष्य में हमें करना है। बुजुर्ग 'हमारे जमाने में तो ऐसा होता था' अपने इस दायरे को नई पीढ़ी पर थोप देना चाहते हैं। परिणामस्वरूप संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। आजकल दादा-पोते या दादी-पोती के या सास-बहू के वैचारिक संघर्ष की बात तो दूर पिछले कुछ वर्षों में मां-बेटी के मध्य भी वैचारिक अनबन देखी गई है। ऐसी ही स्थिति पिता-पुत्र के मध्य भी है। वर्तमान पीढ़ी का रहन-सहन, मानसिक स्तर, बोलचाल, व्यवहार आदि के ढांचे में हुए परिवर्तन ने पुरानी पीढ़ी से दूरियां बहुत बढ़ा दी हैं। ऐसी संक्रमण की स्थिति में दोनों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना बहुत आवश्यक है। प्रयास केवल एक तरफा नहीं बल्कि समान मात्रा में दोनों ओर से होने चाहिए। पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन करना होगा। वर्तमान में हो रहे परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार करना होगा। वहीं दूसरी ओर नई पीढ़ी बुजुर्गों के अनुभव का लाभ लेवे, सार्थक संवाद करें, उनके प्रति कर्तव्य और उत्तरदायित्व को समझें। लेकिन मिली हुई स्वतंत्रता का अनुचित लाभ न उठाएं। पुरातन के संयोग से तथ्यों को नवीन कसौटी पर कसकर उन्हें वर्तमान में उपयोगी बनाकर नई पीढ़ी नवजीवन को साकार कर सकती है और सफलता भी प्राप्त कर सकती है। वास्तव में समन्वय ही संघर्ष को समाप्त कर सकता है। कहा भी गया है 'झुकना ही जीवित होने का प्रमाण है, अकड़ तो मुर्दे की पहचान है।'

■ **मनीषा राठी,** उज्जैन (म.प्र.)

माता-पिता ही जिम्मेदार

आज के समय में माता-पिता बच्चों को सिर्फ और सिर्फ पढ़ाई, लिखाई के प्रति जागरूक करते हैं। इसलिए युवा जीवन में प्रगति कर रहे हैं। बुजुर्ग जीवन के अंतिम पड़ाव में अकेलेपन से जूझ रहे हैं। उच्च शिक्षा के लिए घर से बाहर निकले बच्चों की गृह वापसी कम ही होती है। उन्हें सिर्फ आजादी, विचारों में, निर्णय में किसी का सुझाओं या हस्तक्षेप पसंद नहीं है। आज संयुक्त परिवार लगभग समाप्त ही होते जा रहे हैं। घर आपके बच्चे के 'सीखने के लिए पहला विद्यालय' है। घर पर एक अनुकूल और प्रेमपूर्ण वातावरण बनाएं, जिसमें वह जीवन के सभी मूल्यों और गुणों को सीख सके। इसके लिए परिवार के हर सदस्य को एक-दूसरे के प्रति प्यार और सम्मान दिखाने के लिए प्रोत्साहित करें। इसके अलावा, उन कार्यों और व्यवहार का अनुसरण करें जिनकी आप बच्चों से उम्मीद करते हैं। आपको और आपके परिवार को बच्चों को सुविधा के साथ-साथ संस्कार भी देना अनिवार्य था। इसलिए सिर्फ और सिर्फ माता-पिता ही इस टकराव के लिये जिम्मेदार हैं।

■ **अनिता ईश्वरदयाल मंत्री,** अमरावती

बच्चों को संस्कारों का पाठ भी पढ़ाएं

आजकल हर माता पिता अपने बच्चों को ऊंचे स्कूलों में पढ़ाते हैं, लेकिन उन बच्चों मे विनम्रता का पाठ नहीं के बराबर होता है। उनमें सात्विक प्रवृत्तियां का लोप हो रहा है, सादगी का अभाव है। आवश्यकता है तो बस थोड़े से समन्वय की तथा बालकों में स्वयं के प्रति परिवार के प्रति तथा समाज के प्रति कर्तव्यों की भावना जाग्रत कराने की। शक्ति-भक्ति और युक्ति का संगम कराने व सिखाने की भी जरूरत है। आज की पीढ़ी की सोच है खाओ पीओ मौज करो, पुरानी पीढ़ी की सोच जियो और जीने दो। सुंदरकांड की पहेली चौपाई याद दिलाती है 'जामंवत के बचन सुहाए, सुनि हनुमंत हृदय अति भाए', जामंवत जी वृद्ध हैं, हनुमानजी अतुलनीय बलशाली नौजवान हैं। लेकिन वृद्ध की सलाह को स्वीकार करके सुंदरकांड की रचना हुई। हमारा कहना है आज की पीढ़ी वृद्धों से सलाह लें तो जीवन मे पारिवारिक व्यवस्था आदर्श व सुखद बन सकती है।

■ **श्यामसुंदर लखोटिया,** मालेगांव

दोनों जिम्मेदार नहीं

जिम्मेदार न घर के बुजुर्ग हैं, न बच्चे। वास्तव में जिम्मेदार हैं, बच्चों और बड़ों के बीच विचारों में असमानता, वैमनस्यता, सहनशीलता की कमी व एक-दूसरे की बात न सुनना। समय के साथ परिस्थितियों, आवश्यकता, जीवनशैली सभी में बदलाव आ रहा है। इन बदलावों को ध्यान में रखते हुए बड़ो और बच्चों को एक-दूसरे को समझना चाहिए, तभी पुरानी और नई पीढ़ी के बीच विचारों में टकराव नहीं होगा। बुजुर्ग कुछ परंपराएं अपनी नकार दें, कुछ-कुछ आधुनिकता का जामा ओढ़लें। बच्चे कुछ बुजुर्गों की परंपराएं थाम लें, कुछ आधुनिकता बिसार बुजुर्गों के अनुभव का लाभ लें। बुजुर्ग बच्चों में बच्चे बन जाएं, किसी बात पर बच्चे यदि गलत हैं तो प्रेम और विश्वास से समझाएं। बच्चे बुजुर्गों का सम्मान करें। कम्प्यूटर, मोबाइल जैसे संसाधनों का उपयोग करना सिखाते हुए स्वयं से जोड़ें। बुजुर्ग बच्चों की बात सुनें। हो सकता है किसी काम में उनके विचार आपसे ज्यादा बेहतर हों। बच्चे जो भी काम करें, घर के बड़े सदस्यों की राय जरूर लें, इससे बच्चों और बूढ़ों में अपनापन बरकरार रहेगा। घर के सभी सदस्य ईश्वर की संध्या आरती इकट्ठे होकर करें, इससे भी नकारात्मकता दूर होती है।

■ **भारती काल्या,** कोटा राजस्थान

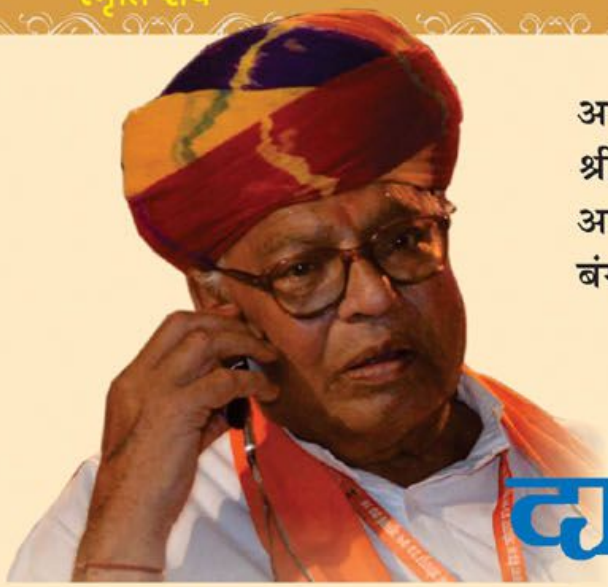

अभा माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के मार्गदर्शक तथा पूर्व अध्यक्ष श्री दामोदरलाल बंग का 20 सितंबर को देहावसान हो गया। अपने अंतिम क्षण तक समाज को समर्पित सेवा देने वाले श्री बंग को समाज ने अनुपुरित नेत्रों से अंतिम विदाई दी।

नहीं रहे वरिष्ठ समाजसेवी

दामोदरलाल बंग

31 दिसंबर 1935 को मारवाड़ मुंडवा ग्राम में जन्में श्री बंग की जीवन यात्रा दिलचस्प रही। बाल्यावास्था में ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए एवं तत्पश्चात 1952 में भारतीय जनसंघ की स्थापना के साथ ही इससे जुड़ गए। आप पीपाड़ शहर में जनसंघ के संस्थापक सदस्य रहे एवं यहीं से आपकी राजनीतिक यात्रा का शुभारंभ हो गया। आपने अनेक छोटे-मोटे राष्ट्रीय महत्व के आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। पीपाड़ में रहते आपने सार्वजनिक वाचनालय एवं मनोरंजन गृह की जनसहयोग से स्थापना करवाई। वहीं स्टडी सर्कल एवं गौशाला का भी सफल संचालन किया। इसके अतिरिक्त कई स्थानों पर विद्यालय खुलवाये जिनमें बालिका विद्यालय प्रमुख है। महिलाओं एवं वंचितों की सेवा में आप सदैव तत्पर रहते थे।

राजनीति में भी महत्वपूर्ण सेवा

5 मई 1955 को विमलाजी से दाम्पत्य संबंध में बंधने तथा पारिवारिक-व्यावसायिक व्यस्तता के बाद भी आप समाजसेवा में निरन्तर योगदान देते रहे। कोई भी बेड़ी इतनी मजबूत नहीं थी जो आपको घर बैठने को मजबूर कर समाजसेवा से दूर करती। 1956 में जीविकोपार्जन हेतु आप जोधपुर आए एवं कुछ समय नौकरी करने के पश्चात स्वयं का व्यवसाय शुरू किया। व्यवसाय के साथ समाज सेवा एवं राजनीति दोनों क्षेत्रों में मणिकांचन योग की तरह सराहनीय कार्य किया। राजनीति में गुमानमल लोढ़ा, राजेंद्र गहलोत, सूर्यकांता व्यास एवं राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत जैसी दिग्गज हस्तियों से जुड़े रहे। 26 जून 1975 को आपातकाल घोषित होने के बाद आप मीसा में गिरफ्तार हुए एवं 19 माह तक कारागार में रहे। 1977 में जनता पार्टी की सरकार बनी एवं आप जोधपुर जनता पार्टी के अध्यक्ष भी रहे। इसके अतिरिक्त भी आपके क्रियाकलापों की सूची लंबी है।

समाजसेवा में समर्पित

आप मारवाड़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के कई वर्षों तक मंत्री रहे एवं इस दरम्यान व्यावसायिक जगत की अनेक समस्याओं का भी समाधान किया। आप रेलवे सलाहकार समिति एवं राममंदिर आंदोलन में सक्रिय रहे व 'जोधपुर नगर सुधार न्यास' के अध्यक्ष भी रहे। माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर के भी आप अध्यक्ष रहे। अपने अध्यक्षीय काल में आपने सेवा सदन के कार्यों का निरंतर विस्तार किया। आप कृष्णदास जाजू ट्रस्ट, कोलकाता के प्रबंध न्यासी भी रहे। इन्हीं कार्यों के मद्देनजर श्री बंग जोधपुर में ही नहीं, दूरदराज, यहां तक कि महासभा, माहेश्वरी सेवा सदन में भी एक जाना माना नाम थे।

श्रद्धासुमन अर्पित

श्री बंग का देहावसान समाज की अपूरणीय क्षति है। उन्होंने सेवा सदन के विकास में जो सहयोग व मार्गदर्शन दिया वह अविस्मरणीय रहेगा। श्री बंग के निःस्वार्थ सेवा भाव से मैं सदैव ही व्यक्तिगत रूप से प्रभावित रहा।

पद्मश्री बंशीलाल राठी,
पूर्व सभापति अ.भा. माहेश्वरी महासभा

वरिष्ठ समाजसेवी, अपना पूरा जीवन समाज एवं राजनीति में सेवा को समर्पित करने वाले दामोदरलाल जी बंग साहब ने जोधपुर में माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष रहते हुए सेवा के क्षेत्र में अनेक कार्य किये हैं। पूरे शहर में आपने बाबूजी के नाम से अपनी छवि स्थापित की। ऐसे अनूठे व्यक्तित्व के धनी बंग साहब का जाना हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है, जिसकी पूर्ति संभव नहीं है।

रामकुमार भूतड़ा,
प्रदेश कोषाध्यक्ष भाजपा, राजस्थान

आदरणीय बाबूजी मेरे लिए अग्रज, मार्गदर्शक थे। मेरा उनसे आत्मिय संबंध रहा है। श्री बंग की समाज सेवा चिरस्मरणीय रहेगी। वे समाज के किसी भी सदस्य की पीड़ा देख नहीं पाते थे। तत्काल सहायता के लिए उपलब्ध हो जाते थे। महासभा में उनकी भूमिका सदैव हित चिंतक और पथ प्रदर्शक की रही है। महासभा अपने इस वरिष्ठ नेता के निधन पर हतप्रभ है।

श्याम सोनी
सभापति अ.भा. माहेश्वरी महासभा

श्री बंग समाजसेवा पथ पर हमारे घनिष्ठ साथी थे। कई सेवा गतिविधियों को हमने साथ मिलकर संभाला। श्री बंग का देहावसान वास्तव में समाज की क्षति तो है ही, साथ ही मेरी व्यक्तिगत क्षति भी है।

जोधराज लड्ढा,
पूर्व सभापति अ.भा. माहेश्वरी महासभा

जोधपुर जनसंघ के संस्थापक सदस्य, भाजपा के वरिष्ठ नेता, जोधपुर नगर न्यास के पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ सदस्य, लोकतंत्र के सेनानी, अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के पूर्व कार्यसमिति सदस्य, श्री माहेश्वरी समाज जोधपुर के मंत्री श्री दामोदरलाल बंग जी को श्रद्धांजलि।

जुगलकिशोर बिड़ला,
अध्यक्ष अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन

खुश रहे - खुश रखें

ईश्वर के नियम को समझने के लिए आध्यात्मिक समझ जरूरी है

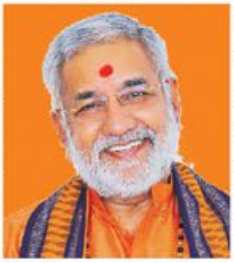

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

संसार में रहते हुए हम लोग राष्ट्र, समाज तथा परिवार की व्यवस्था बनाते हैं और फिर स्वयं इस सिस्टम को तोड़ते भी हैं। इसी जोड़-तोड़ में जिंदगी बीत जाती है। जब अपने ही बनाएं संसार से परेशान हो जाते हैं तो भक्ति के मार्ग में उतार जाते हैं और भक्ति के इस संसार में हम अपनी इच्छा के अनुसार भगवान से मांग शुरू कर देते हैं। इस प्रकार हम ईश्वर की व्यवस्था में अपनी व्यवस्था का अतिक्रमण करते हैं। परमात्मा के साफ-सुथरे, हरे-भरे कृपा के क्षेत्र में हम अपनी निजी हित की मांगों की झुग्गी-झोपड़ी, ठेले, गुमठी, भवन अट्टालिकाओं के अतिक्रमण को बीच में ले आते हैं।

भगवान के विधान को लेकर हम कुछ भ्रम पाल लेते हैं। भगवान जितना नियंता है, उतना ही नियमबद्ध भी है। पृथ्वी का एक नियम है कि इसमें गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती है। जब कोई वस्तु ऊपर से नीचे गिरती है, तब पृथ्वी उसे खींचती है और इसी कारण से वह वस्तु पृथ्वी पर गिर जाती है।

यह एक सामान्य सा नियम है, लेकिन हम अगर चल रहे हों तथा हमारी ही भूल से यदि ठोकर लग जाए और हम गिर जाएँ तो यहां हम यह नहीं कह सकते कि यह तो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का नियम है, इसलिए गिर गए। हम अपनी ही भूल से गिरे हैं, पृथ्वी का नियम अपनी जगह है।

इस प्रकार भगवान ने सारी व्यवस्था कर रखी है। उन्होंने अपने कुछ नियम बना रखें हैं परंतु धर्म तथा संस्कृति की जो आचार संहिता है, उसका पालन हमें करना होगा। परमात्मा के नियम अपनी जगह हैं, उनको समझने के लिए एक आध्यात्मिक समझ होना जरुरी है। इसी समझ को कहीं-कहीं समाधि भी कहा गया। ऊहापोह और भ्रम के विचारों का वेग जब शांत हो जाए तब समझ या समाधि घटती है।

परमात्मा की व्यवस्था में जब जीने लगो तो समझ है और उसके अंग ही बन जाओ तो समाधि है। निर्विरोध और निर्विकल्प होकर ही ईश्वर के नियम का पालन किया जा सकता है। यह सीख परिवार प्रबंध में भी महत्वपूर्ण है।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?

aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "ऐसा क्यों?" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

फरियाली केक

सामग्री- सिंघाड़े का आटा 200 ग्राम, घी 100 मिलीलीटर, पिसी चीनी 100 ग्राम, खजूर 20 नग, बेकिंग पाउडर 1 टी स्पुन, खाने का सोडा 1/2 टीस्पून, इलायची पाउडर 1/2 टीस्पुन, नेस् कैफे के 4 पैकेट (1 वाले), शक्कर दानेवाली 3 टी स्पुन, बादाम सजाने के लिए, डेढ़ कटोरी दूध।

विधि- आधी कटोरी दूध गर्म करना। खजूर की बीज निकालकर उसमें भीगा देना। एक बाउल में सिंघाड़े का आटा, कॉफी पाउडर, बेकिंग पाउडर, सोडा, इलायची इन सब को मिलाकर तीन बार छान लेना, खजूर को दूध के साथ ही मिक्सर में पिस लेना, इधर ओवन 180 डिग्री पर प्रीहिट होने रखना। एक बाउल में पिसी चीनी, पिसा हुआ खजूर, घी सारी सामग्री मिलाकर अच्छे से मिक्स करना। फिर उसमें छाना हुआ सिंघाड़े का आटा मिलाना। जरूरत अनुसार दूध में मिलाना, इस मिश्रण में साधी शक्कर डालकर अच्छे से मिलाना। (यह शक्कर जब पिघलती है तो बहुत अच्छी जाली बनती है) केक के पॉट को ग्रीस करके उसमें यह बैटर डालना। 180 डिग्री पर 35 मिनट बैक करना। टूथपिक डाल कर चेक करना केक बना कि नहीं। अगर टूथपिक को मिश्रण लगता है, तो फिर 5-10 मिनट के लिए और बेक करना। ओवन से निकलकर 5 मिनट बाद जाली पर ठंडा होने रखना। आपका बढ़िया फरियाली केक तैयार है।

पूनम राठी, नागपुर
9970057423

ASHOK SOMANY

M/s. ASHOK SOMANY & Co.

Mining of Natural Stone & TIles

Khol House, Circular Road, Rewari - 123401 (Hry) Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)
Tel. : 01274-225385, Mob. : 981245677, Res. : 01274-260088, 260048
Email : accounts@sonanyimpex.ind.in
factory@somanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

AAKASH SOMANY

SOMANY NATURAL STONES (I) Pvt. Ltd.

All Kind of Natural Stone & Tiles

Plot No.5, Delhi Rewari Road, Rewari-12340 1 (Hry)
Mobile : 9812345677, 9812028488
Email : mines@sonanyimpex.ind.in I somanyimpex@gmail.com

SOMANY IMPEX

Exporter of All Kind of Natural Stoen &Tiles

Khol House, Circular Road, Rewari-123401 (Hry), Unit-Khol Road, Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)
Tel.: 01274-225385, Mob. : 9812028488, 9215689102
Email: accounts@sonanyimpex.ind.in
factory@somanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

DEVVRAT OVERSEASE

All Kind of Natural Stone & Tiles

Vil. Mehtawas, Mehtawas Road (Raj), Mobile : 9812345677, 9812025385
Email: mines@sonanyimpex.ind.in I somanyimpex@gmail.com

SOMANY (P.G) INSTITUTE OF TECHNOLOGY & MANAGEMENT

Running B.Tech & M.Techinfidderent Discilines of Engineering

Near Delhi-Jaipur Highway No. 8, Beside 3 km, From Rewari City, Rewari (Hry) Tel. 01274-261239, 261781
Fax: 01274-261239, Mob. 9541069998
Email : Info@sitmrewari.com I admin@sitmrewari.com I accounts@sitmrewari.com

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

कोरोना बीमारी में सावधानी बहुत जरूरी

खम्मा घणी सा हुक्म, भारत में इण दिनों में कोरोना वायरस रा मामला बहुत तेजी सूं बढ रिया है एड़े में ज्यादा संभलने रेवण री जरूरत है। हुक्म कोरोना बीमारी ने हल्के में मत लेवों। भले ही दुनिया मे 6 प्रतिशत से कम लोगों री मृत्यु दर हुई हो पर या सब जवान लोगों की असामयिक मौत रो का कारण बन री है। सही में हुक्म यों कहर कोरोना वायरस रूकण रो नाम ही नहीं ले रियो है, इण बीमारी रे बचण वास्ते दुनिया भर रा वैज्ञानिक, डॉक्टर्स इनी वेक्सीन बनावण री पूरी कोशिश कर रिया है। विश्व स्वास्थ्य सगंठन सहित कई हेल्थ आर्गनाइजेशन लोगों ने सेप्टी टिप्स और गाइड लाइन रो पालन करण री सलाह दे रिया है। एड़ा समय में ज्यादा सावधानी री जरुरत है, सोशल डिस्टेसिंग रे साथे-साथे मास्क पहनणो भी जरूरी है।बिना मास्क बाहर नहीं जाणो।

हुक्म कोरोना वायरस महामारी रा लक्षण हर व्यक्ति में अलग -अलग नजर आ रिया है, किन्हे हीं तो हल्का लक्षण तो कुछ गंभीर हालत सामने आ रिया है कई एड़ा मामला भी सामने आया है जिणमें कोई लक्षण भी नही होवण रे बावजूद वे कोरोना वायरस सूं संक्रमित मिल रिया है। एडे में अपने परिवार री सुरक्षा रो पुरो ध्यान राखण री जरुरत है। कुछ उपाय जो घर में आसानी सूं ही कर सका।

वे हर व्यक्ति ने करण री हर जरुरत है हल्दी री आयुर्वेदिक चाय जो सुर्ख खांसी ने भी आराम देवे। गर्म पानी, जो गले में इंफेक्शन ने खत्म करे। विटामिन सी री गोलियां जो इम्युनिटी पॉवर मजबुत करे हुक्म आपने कोई भ्रम में नही पड़नो, हर जरुरी एहतियात बरतण री जरुरत है। साथ ही संक्रमण री बढती दर ने थामण में हर प्रयत्न करणो है, ताकि देश में संकट जो आयो है निजात मिल जावें।

स्वाति 'सरु' जैसलमेरिया

मुलाहिजा फरमाइये

ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- हर डुबती हुई कश्ती की अपनी ही कहानी है,
  जी लो आज पल, जिंदगी कहां लौट कर आनी है।
- कुछ नया लिखने की तलब थी मुझे आज,
  फिर सोचा कुछ जिक्र कभी पुराने नहीं होते।
- साहिल की इसमें कोई खता ही नहीं,
  डुबोया जिस समंदर ने उसे पता नहीं।
- सारी दुनिया है खौफ में जिसके
  क्या इस मर्ज की कोई दवा ही नहीं।
- बेहतर है खुद से बाते करना
  बयां गैर से करने का फायदा ही नहीं।
- अपने किरदार की हिफाजत जान बढ़कर की जिये
  क्योंकि इसे जिंदगी के बाद भी याद किया जाता है।
- अदाकारी जरा सी जेब में रखकर सफर करना
  अभी इस जिंदगी में और भी किरदार जीने हैं ...

कार्टून कौतुक

LAL KITAB

राशिफल

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

इस माह में आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे, खर्च की अधिकता रहेगी। संपत्ति से संबंधित प्रकरण में सफलता मिलेगी। संतान से संबंधित किए गए कार्यों से कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। गूढ़ रहस्यमय ज्ञान की प्राप्ति के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। धार्मिक मांगलिक काम शुभ काम देव दर्शन और ईश्वर के प्रति किए गए कार्यों में रुचि बनी रहेगी। विद्यार्थियों को शिक्षा में अनुकूलता मिलेगी और विवाह योग्य व्यक्तियों के विवाह संबंध होने के योग प्रबल बनेंगे। नवीन मित्र बने शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

वृषभ

इस माह आपको रुकावट के साथ कार्यों में सफलता प्राप्त करनी होगी। पाचन तंत्र एवं पेट की गैस से संबंधित कष्ट का सामना करना पड़ेगा। संतान से संबंधित कार्यों में अनुकूलता मिलेगी। विद्यार्थियों को भी सफलता प्राप्त होगी। दांपत्य जीवन अनुकूल रहेगा। समय की पाबंदी रखेंगे, आर्थिक प्रकरण रुकेंगे नहीं एवं कार्य व्यवसाय नौकरी आदि में प्रमोशन के योग बने रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी एवं भूमि, भवन, स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। भाई परिवारजनों का स्नेह एवं सहयोग प्राप्त होगा।

मिथुन

इस माह में आपके पुराने रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। वाणी के कारण कुछ लोग आपसे नाराज हो जाएंगे। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। शिक्षा में मनचाहा रिजल्ट प्राप्त होगा। किसी देव विशेष की आराधना करेंगे और आप उनके कृपा पात्र होंगे। जीवन साथी से दूर रहने के योग बनेंगे जीवन साथी के स्वास्थ्य की परेशानी का सामना करना पड़ेगा। झूठे आरोप का सामना करना पड़ेगा, किंतु आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता मिलेगी। शासन में रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे, खर्च की अधिकता रहेगी। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे।

कर्क

यह महीना आपको आर्थिक दृष्टि से उत्तम रहेगा। इस माह में आपको संपत्ति से संबंधित प्रकरण में सफलता अर्जित होगी, विरोधी परास्त होंगे। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे, हर्ष उल्लास का वातावरण निर्मित होगा। संतान से संबंधित कार्यों में विशेष सफलता के योग रहेंगे। शिक्षा से संबंधित प्रकरणों में मनचाही सफलता प्राप्त होगी। पाचन तंत्र व पेट की गैस से संबंधित कष्ट का सामना करना पड़ेगा। विवाह संबंध होने के योग प्रबल रहेंगे। लंबी यात्रा के योग रहेंगे, जैसी आय होगी उसी अनुपात में खर्च करेंगे। मित्रों से भेंट होगी शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

सिंह

इस माह में आप चुनौती भरे कार्यों को हाथ में लेंगे और सफलता अर्जित करेंगे। संपत्ति से संबंधित कार्यों में भी सफलता मिलेगी। आपकी सलाह लोगों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। मन में बेचैनी जरूर बनी रहेगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। राजनीतिक संपर्कों का लाभ मिलेगा। संतान से संबंधित कार्यों में सफलता मिलेगी। यश मिलेगा राजकीय सम्मान प्राप्ति के योग होंगे। सुस्वाद नमकीन व्यंजन का लुत्फ उठाएंगे। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी, परंतु दिया हुआ धन परेशानी में आ सकता है।

कन्या

यह माह आपके लिए शुभ एवं लाभकारी सिद्ध होगा। संपत्ति से संबंधित प्रकरण में सफलता मिलेगी, विरोधी परास्त होंगे। भाई, परिवारजनों का स्नेह एवं सहयोग प्राप्त होगा। संतान से संबंधित कार्यों में रुकावट के साथ सफलता प्राप्त होगी। मानसिक तनाव बना रहेगा। राजनीतिक संपर्कों का लाभ मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च होगा। मित्रों का सहयोग व नवीन शोध की प्राप्ति होगी। विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। शुभ संदेश प्राप्त होगा, कर्ज लेना लाभकारी सिद्ध होगा।

तुला

यह माह अभीष्ट कार्य में सफलता प्रदान करेगा, अचानक बड़ा काम करेंगे। व्यापार व्यवसाय में लाभ नौकरी मिलने के योग एवं नवीन कार्य व्यवसाय के योग प्रबल रहेंगे। परिवार के साथ लंबी यात्रा के योग रहेंगे। मित्रों की संख्या बढ़ेगी। संतान की प्रगति से मन प्रसन्न रहेगा, शुभ समाचार मिलेंगे। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक एवं शुभ कार्य की रूपरेखा तैयार होगी। रुका हुआ धन मिलने के योग रहेंगे। विद्यार्थियों को अपने परिश्रम का उचित परिणाम प्राप्त होगा।

वृश्चिक

यह माह आपको खुशी प्रदान करने वाला रहेगा। जीवन साथी से मतांतर के योग रहेंगे, आय में वृद्धि होगी। अचानक धन लाभ के योग रहेंगे। रुका हुआ पैसा प्राप्त होगा। सरकारी कार्य आसानी से पूर्ण हो जाएंगे। न्यायालय से संबंधित रुके हुए कार्य में विजय प्राप्त होने के योग रहेंगे। मकान सुख, वाहन सुख की प्राप्ति के योग रहेंगे। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। विवाह संबंध तय होने के योग रहेंगे। विश्वास करना आपके लिए हानिकारक होगा। विरोधी नित नई योजना तो बनाएंगे परंतु वह सफल नहीं हो पाएंगे। पुराने मित्रों से भेंट होगी।

धनु

यह माह आपको मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। आपके प्रभाव एवं अधिकारों में वृद्धि होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। नौकरी में पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग रहेंगे। बच्चों एवं जीवन साथी से वैचारिक मतांतर का सामना करना पड़ेगा। अचानक लंबी यात्रा के योग रहेंगे। उधार देना आपको हानिकारक सिद्ध होगा, खर्च की अधिकता रहेगी। नवीन कार्य व्यवसाय आय के साधनों में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। माता-पिता एवं वरिष्ठजनों के साथ की चिंता बनी रहे। जिस भी कार्य में हाथ डालेंगे सफलता चरण छू लेगी।

मकर

यह माह आपको विशिष्ट फल प्रदान करने वाला होगा। पुराने मित्रों से भेंट होगी। विवाह समारोह में भाग लेंगे। लंबी धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। परिवार में भी मांगलिक प्रसंग आएगा। विवाह संबंध की रूपरेखा तैयार होगी। विद्यार्थियों को अनुकूल परिणाम देने वाला होगा। व्यापार व्यवसाय में चुनौती के साथ सफलता प्राप्त होगी। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे, शुभ समाचार मिलेंगे। स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरणों का निपटारा होगा। ऋण लेना लाभकारी सिद्ध होगा, विशिष्टजनों से भेंट होगी।

कुम्भ

यह माह आपको उन्नति के अवसर प्रदान करने वाला होगा। शुभ-समाचार मिलेगा संतान से संबंधित कार्यों से मन प्रसन्न होगा। नौकरी में पद प्रतिष्ठा एवं स्थानांतरण के योग रहेंगे। मेहमान के आने से प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता लेगी। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। विपरीत योनि की प्रति रुझान बना रहेगा। दांपत्य जीवन अनुकूल रहेगा। क्रोध, विवाद से दूर रहें, अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण रखें। शत्रु पक्ष से परेशानी बनी रहेगी परंतु अंततः विजय आपकी ही होगी। लंबी यात्रा के योग बनेंगे। माता-पिता एवं वरिष्ठजनों के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी।

मीन

यह माह आपको नए लोगों से भेंट, बौद्धिक कार्यों में लाभ, अधिकारियों का सहयोग एवं व्यापार में सुधार प्रदान करने वाला होगा। उन्नति के अवसर से आय बढ़ेगी। न्यायालयीन प्रकरणों में सफलता मिलेगी। दूरदर्शिता एवं त्वरित निर्णय लेने से आपको स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरण में विशेष सफलता अर्जित होगी। दांपत्य जीवन अनुकूल रहेगा व्यस्तता अधिक बनी रहेगी। झूठे आरोप का सामना करना पड़ेगा। संतान के कार्यों से प्रसन्नता रहेगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। प्रेम प्रसंग में सफलता अर्जित होगी।

IS:1786

CM/L - 6943589

GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

700 अधिक प्रोफेशनल बॉयोडेटा के साथ

श्री माहेश्वरी मेलापक

विवाह योग्य युवक-युवतियों की विश्वस्तरीय डायरेक्ट्री

- विभिन्न वर्गों के लिये भिन्न–भिन्न पृष्ठ
- उत्कृष्ट बॉयोडाटा व आकर्षक कलेवर आज ही
- आज ही सुरक्षित करवाएँ अपनी प्रति

पृथक से प्रति बुक करवाने के लिए
शुल्क मात्र (डाक खर्च अतिरिक्त)

अब रिश्ते आयेंगे – आपके द्वार

'श्री माहेश्वरी मेलापक'
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता क्रं.-31725815057
IFSC Code-SBIN0030062
में जमा कर जमापर्ची की छायाप्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

हाईटिक व प्रोफेशनल
युवक–युवतियों की
पहली पसन्द

90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे), इंदौर रोड, उज्जैन (मप्र)
मो.– 96305-62161, 74770-72161, 94250-91161
e-mail : srimaheshwarimelapak@gmail.com

श्री माहेश्वरी टाईम्स

का आगामी विशेषांक रहेगा
सनातन संस्कृति के महापर्व दीपावली को समर्पित

दीपावली
विशेषांक

जिसमें आप पाएंगे इस विशिष्ट अवसर से संबंधित ऐसे विशिष्ट आलेख जो तथ्य परक व सटीक होने के कारण आपके लिए होंगे संग्रहणीय। यदि आप अपने व्यक्तिगत शुभकामना संदेश अथवा आपके प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान का विज्ञापन देना चाहते हैं तो लाखों पाठकों तक अपनी भावनाएं पहुंचाने के लिए शीघ्र ई.मेल द्वारा प्रेषित करें।

90, विद्या नगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
दूरभाष : 0734-2526761,
मो. 94250 91161
E-mail : smt4news@gmail.com

धूतपापेश्वर
१८७२ पासून आयुर्वेद सेवा

इम्युनिटी ही मेरा सुरक्षा कवच!

६० वर्षो से
आयुर्वेद विशेषज्ञों का
विश्वसनीय
सुवर्ण समृद्ध
च्यवनप्राश

स्वर्ण समृद्ध च्यवनप्राश!

सेहत का खजाना,
दो चम्मच रोजाना!

* मात्रा
बड़ों के लिए - १ बड़ा चम्मच (१५ ग्राम) दिन में २ बार
बच्चों के लिए - १ छोटा चम्मच (५ ग्राम) दिन में २ बार

सकारात्मक स्वास्थ्य के लिए
रोगप्रतिकारक्षमता बढ़ाएं!

आयुष क्वाथ

डिस्पर्सिबल टॅबलेटस्

Authentic · Standardized · Safe · Efficacious

श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

स्वस्थ रहे, उन्नत रहे, आयुर्वेद के रक्षाछत्र में रहे।

For Health & Trade Enquiries Tollfree: 1800 22 9874 www.sdlindia.com | Now available on amazon

Reaching 7500 villages, 9 million people.
Over 100 million Polio vaccinations.
5,000 medical camps / 20 hospitals:

1 million patients treated. 100,000 persons tested on 32 health parameters through Health Cubed. Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant. More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India.

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students. Mid-day meals provided to 74,000 children. Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland. Fostering the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas.

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets. 45,000 women empowered through 4500 SHGs. 200,000 farmers on board our agro-based training projects.

MODEL VILLAGES

We have adopted 300 villages for transformation into model villages. Of these over 90 villages have already reached the model village stature. And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spear-headed by Mrs. Rajashree Birla.

Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date-02 October, 2020

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/smtmagazine/
http://srimaheshwaritimes.com/